# मरने से पहले मरना है।

तटवर्ती वीर राघव राव

# मरने से पहले मरना है।

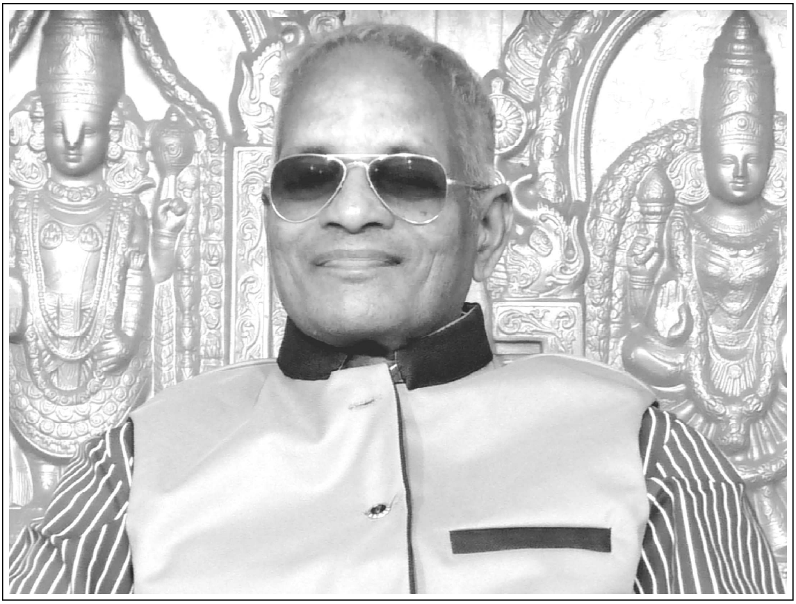

लेखक : श्री तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्री नागेश्वरराव

For Books Please Contact :
TATAVARTHI VEERA RAGHAVARAO
Tatavarivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.130/-

# विषय सूची

1. मरने से पहले मरना है। ........................................................ 3
2. मरने के तुरन्त क्या होता है? ..............................................12
3. परम में कौन से लोक है?....................................................23
4. पापी लोग किस लोक पहुँचते है। ..........................................28
5. सीखने वाले जनम सिखाने वाले जन्म .....................................38
6. जनालोक पार करने के लिए क्या करना?................................45
7. ज्ञान प्राप्त करने से क्या होगा? .............................................55
8. ऊपर लोक पहुँचने केलिए कौन से लक्षण होना चाहिए? ...............61
9. मानव जीवन का लक्ष्य क्या है? ............................................66
10. अगर सत्य लोक पहुँचनता है तो?........................................75
11. जनालोक पार करने वाले को इच्छा जन्म होता है। ....................83
12. अगर मरने के बाद के बारे में जानेंगे तो क्या फायदें। ................87
13. मरने से पहले मरना कि और लाभ जानेंगे।............................98

# मरने से पहले मरना है।

ये सहज बात है कि किसी को मालूम नहीं क्या होगा मरने के बाद, बड़ी से पंडितों को भी नहीं मालूम। ये लोग सिर्फ मरने के पहले कि कुछ बात बताते है और मरने के बाद कि बात कुछ सिंपल सा बात बताते है, इसलिए मरने के बाद वाली बातें किसी को सही मालूम नहीं है।

लेकिन जितना ज्यादा मालूम पड़ता रहता है, तब हम अपने जीवन में कैसे बदलाव लाना, या कैसे जीना है, उसे अच्छी तरह से समझेंगें।

पत्रीजी हमें जो महत्वपूर्ण है, जो इसकी जरूरत है, जो सबको सीखना है, जो अपने जीवन में उतारना है (आदत डालना है) और जिस से बदलाव लायेंगे, ऐसे ही विषयों के बारें में हमें सिखाते है।

ऐसे ही एक विषय है "मरने से पहले मरना है", जितना ज्यादा मालूम पड़ेगा, उतना ही ज्यादा लाभ मिलेगा। इसलिए कुछ विषयों के बारे में जानते है, या जानेंगे।

वास्तविकता में सब लोग इसके बारे में बात नहीं करते है, लेकिन पत्रीजी के स्थाई पर जो है, उन लोगों ने "मरने से पहले ही मरना है" विषय के बारे में प्रस्तावित किया है। इसलिए आगे कुछ योगी पुरूष ने क्या कहा है, हम जानेगें।

मुख्य स्थर पर कबीर जी ने जो कहा है -

"जिस मौत से पूरी दुनिया डरती है, उसको पाने में ही मुझे आनन्द है", देखिए पूरी दुनिया में सब लोग मौत से बहुत डरते है, कारण है कि मैं मर जाऊँगा। लेकिन कबीर कहते है कि उसी मौत पाने में ही उसे आनन्द मिलती है, मतलब मौत उसे आनन्द देती है।

पत्रिजी भी कहते है - जन्म दिन भी त्योहार है और मौत के दिन भी त्योहार है, यह विषय सिर्फ आत्मज्ञानी के बारे में।

अगर कोई भी मौत से डर रहा है, मतलब वो अभी भी अज्ञानी है। लेकिन कबीर ने कहा है कि उसको मौत पाने से ही आनन्द है। क्यों ? क्यों कि उसको मरने के बाद का जीवन के बारे में पता है । और मौत लाभदायक है, इसीलिए आत्मज्ञानी मौत से न दुखी है और ना रोते है।

इसलिए जो ध्यान करते है, इस ज्ञान मार्ग में है, पत्रीजी जी के बातों को मानते है वो सब लोग मौत से नहीं डरते है। क्योंकि उनको मालूम है कि मौत लाभदायक है।

क्योंकि पत्रीजी सारे ऐसा काम हमें करवाया है जो मरने के बाद लाभदायक ही होगा। इसलिए जो भी पत्रीजी का कहने वाले कामों को करते है, वो मरने के लिए ना दुखित रहेंगे, ना डरते है। लेकिन जो सोचते है कि मौत उनके लिए नष्ट करता है, वो लोग डरते है।

देखिए जो पत्नी पर ममता ज्यादा बनाया रखते है, या धन समृद्धि पर, या बच्चों पर या जो अपना पूरा जीवन धन प्राप्ति केलिए कष्ट किया है, और वो ही उनका जीवन रही है, उसको मरने समय उन सब को छोड़कर मरना है, वैसे कितने डरते है? कितना दुखित रहेगें? सोचिए एक बार, क्योंकि पूरा जीवन इसी में कपा दिया? उसके समझ में यही जीवन है और उसी तरह उसने वो ही कमाया है और धन इकट्ठा किया है, अन्त में मरने के समय पर उसे छोड़ना पड़ रहा है। कितना डरेगा ये सब छोड़ने केलिए।

लेकिन जो भी अपने आप को आत्मा के समझ में है, उनको मालूम होगा कि सिर्फ कुछ ही सालों के लिए इस पृथ्वी पर है, इस शरीर को छोड़ना पड़ेगा और समझ में है कि ये सब तात्कालीन है। इसको इतना प्रमुख्य नहीं देकर सिर्फ आत्म को लाभदायक कामों में लगे रहता है। इस शरीर से जो साधना करता है, अपनी श्वासों के साथ रहना, यही ध्यान करते है। सात्विक भोजन खाते है, ज्ञान के पुस्तक पढ़ते है, ज्ञानि लोगों के सत्संग में रहते है और इसी मार्ग में चलने वाला के सेवा में लगते है और ज्ञान प्राप्ति करने से इस

आत्मा को बहुत लाभदायक होता है।

क्योंकि उनको मालूम है कि ऐसे कर्मो से, मरने के बाद, इस स्थिति से बेहतर स्थिति उन्हें प्राप्त होगा, उन्हें मालूम है कि इस शरीर से जो भी करना था वो कर लिया और इसे छोड़ने से कोई दुख या नष्ट नहीं है और बाद वाले कर्मो को करने के बारे में निर्णय लेगा और जो भी सहायकों उन्हें लेने आते है, उनके साथ चले जाते है, ऊपर लोक में वहाँ जो करना है, वो करते है।

इसलिए कुछ लोग मरने से पहले ही बोल के चले जाते है, कि यहाँ मेरा काम खत्म है, और आगे कि कार्यक्रम में जाना है। मौत से उन्हें कोई बाधा नहीं होता है, क्योंकि वो लाभदायक है, इसलिए जन्म भी त्योहार है और मौत भी उतना ही त्योहार है।

इसलिए पत्रीजी कहते है कि "आत्मज्ञानी को जन्म भी त्योहार है और मौत भी"। उसने बहुत संव्रर्थो में कहा हे कि बात, मौत हमारे लिए अच्छा है और लाभदायक भी है। उन्होंने ये बार-बार कहने का ये ही मतलब है कि हमें मौत कि डर से निकालने केलिए।

जब कोई मरता है तो सार को फोन करते थे, हाँ जाने दो, सार बोलते थे, वो जो भी करना था यहा कर लिया और आगे और बड़े-बड़े कर्मों के लिए चले गए है, जैसे अपना पुराना वस्त्र को बदल कर नया पहने से कोई दुखित रहता है क्या? यही बात भागवद् गीता में कहीं है।

इसलिए जो आत्मज्ञान प्राप्त किया, ध्यान मार्ग में है और इसी मार्ग मे काम करने वाले लोग, उनको मौत से डरने की बात नहीं है।

इसलिए पत्रीजी, इस आत्माओं से बहुत सारे प्रोजेक्ट करवाते है और इसे लाभ मिलने के लिए ये सब करवाते है, ये सब आत्मा को लाभदायक है। जितना ज्यादा हम उसमें भाग लेंगे, उतना लाभ है। लेकिन कुछ लोग पत्रीजी से पूछते है कि क्यों करवा रहे हो, हमसे, ये सब। ये सब करने से हमारी आत्माओं को लाभदायक है, और बड़े-बड़े पिरामिड की स्थापना किए है, बहुत

ध्यान केन्द्रों की स्थापना किए है और छोटे-छोटे पिरामिड भी बनवा रहे है, **पि.ऐं.सी.** (PMC) स्थापित किया है। उसमें भाग लेकर, ये ज्ञान पूरी दुनिया में फैलाने की काम हो रहा है - उसका लक्ष्य है कि पूरी दुनिया को आत्मज्ञान पहुँचाने का। वैसे ही महम्मद महान ने क्या कहा?

उसने कहा है कि "मौत से पहले मरना सीखो।"

सोच लो अगर तु मर गया, जो सब अभी है, क्या बचेगा? मतलब तेरे साथ क्या आयेगा, मतलब कुछ तेरे साथ नहीं आयेगा। मतलब जब जिन्दा है, समझ लो कि ये सब मेरा नहीं है। ऐसे जीना चाहिए। नहीं तो अगर समझेगा कि ये सारा मेरा है, तुम बहुत पाप करते रहेगा, और जीवन को बहुत नष्ट करेगा।

लेकिन जब तुम्हें ये मालूम होगा, मतलब मौत के बाद ये सबको छोड़ना और कुछ भी साथ नहीं आयेगा, तब किसी के साथ व्यामोह नहीं होगा।

मतलब मौत से पहले मरना सीखो, इसलिए जो भी तेरे पास है वो नहीं रहेगा और नहीं है। इसी सोच के साथ रहना चाहिए, तब आप कोई पाप नहीं करेगा अपनी पत्नी, बच्चों केलिए पाप नहीं करेगा और गलत नहीं करेंगे और धर्म के रास्ते पर चलेंगे। जब तक जीवित है तब तक किसी के साथ झगड़े नहीं करेंगे, किसी प्रकार का हिंसा नहीं करेंगे और नहीं मारेंगे।

ये सब तब करेंगे जब आप मौत से पहले मरना सीखेंगे।

मेरे जीवन में एक छोटा सा संगठन बताता हूँ। इसी बीच में मुझे करोना आया था। मेरे बच्चों ने मुझे यहाँ से हैदराबाद लेके जाने का निर्णय लिया। क्यांकि वहाँ बढ़िया अस्पताल है। जब मैं निकल रहा था घर से, और मैं जब सामान सजा रहा था, मुझे लगा कि ये आखिरी बार उन्हें देखूँगा, मतलब उनसे मेरा त्रृण समाप्त हो गया।

सोचिए अगर मैं सच में कारोना से मर जाता, तो ये सब खत्म होता था। ये कुछ समय केलिए मैं सोच पड़ा कि सिर्फ ये सब पाने के लिए मेरा पूरा

जीवन कपा दिया। मुझे कुछ देर केलिए समझ रहा था कि मैं हैदराबाद नहीं लेकिन ऊपर जा रहा हूँ। लेकिन फिर से एक और आलोचना था कि अगर पृथ्वी पर मेरा कुछ काम बाकी है तो जरूर वापस आयेंगे। अगर कुछ बाकी नहीं है तो वहीं से वहीं ऊपर चले जायेंगे।

पत्रीजी कहते है कि, अगर कुछ भी काम आप को बाकी है, तो चाहे भी तुम नहीं जा सकेंगे और अगर काम हो गया तो चाहे भी तुम नहीं रह सकेंगे। इस विषय पर जितना अवगाहन रहेगा, उतना दुख के बिना रह पायेंगे, नहीं तो दुखी ही रह जायेंगे।

इसलिए महम्मद महान ने कहा है कि "मौत से पहले मरना सीखो", और दादू महात्मा ने भी कहा कि "एक जिन्दा शव कि तरह जीना सीखो"।

हम, असल्यित में शव है, जिसमें प्राण है, जब जिन्दा है एक शव कि तरह जीना है। आपका प्रवर्थन ऐसा होना चाहिए।

पत्रीजी स्पष्टता से कह रहे है कि जीव हिसां को छोड़ना है। किसी मुर्गी को या बकरा को मारना नहीं। वो भी आत्मायें है, वो भी आप का ही स्वरूप है। आपकी ज्ञान को बढ़ाओं, लेकिन कुछ लोग पूछते है कि अगर मांस खाने बिना कैसे? हमें बल चाहिए और रौद्रता भी चाहिए। अगर मांस नहीं खाएंगे तो कहाँ से रौद्र होगा, अगर नहीं खायेंगे तो कमजोर रह जायेगें। देश नहीं बच पायेगा। सरहद्दों को कौन रक्षा करेगा? इन्हीं कारणों को बताकर कुछ लोग मांस खाने को प्रोत्साहित करते है। और बड़ी-बड़ी उपन्यास देते है। लेकिन उनको ये क्यों नहीं समझ में आता है कि वो भी भगवान के स्वरूप है, जैसे हम है।

अगर हम सब लोग शाकाहारी हो जाये तो, जैसे पत्रीजी कहते है, तब युद्ध क्यों होगा, ये सारे झगड़े क्यों होगें? और सैन्यों कि क्या जरूरत होगा? देश कि रक्षा के लिए इतना सारे करोड़ो रूपयों की खर्चा क्यों होगा? अगर वो सारे पैसे विकास में रखेंगे तो कितना विकास होगा? यही द्वेष और बदलापन और डर के वजह से, इतना पैसा बर्वाद हो रहा है, पत्रीजी ही कहते है।

अगर सब एक है, या एकता का भाव बनेगा, तो ये झगड़े कि जगह क्यों होगा? युद्ध कहा होगा? इसलिए इतना महान आत्मा पत्रीजी भूमि पर पदारे और बहुत सारे विषय हमें बताया है। उनमे सबसे मुख्य विषय ये है कि "मरने से पहले ही मरना है' मतलब मरने के बाद का जीवन क्या है। ये जानना है। अगर ये मालूम होगा तो उसे मौत का डर नहीं होगा। उनके लिए मौत भी त्योहार होगा।

परम योगी कबीर जी ने कहा कि "जिस मौत से पूरा संसार डरता है उसे पाने में मुझे आनन्द मिलता है"। इतना महान व्यक्ति बोल रहा है कि उसे मौत आनन्द देता है। लेकिन हमें क्यों इतना दुख है, भय है? इससे क्यों काँपते है, मौत से? अन्तर क्या है? यही कि, वो अपर ज्ञानी है और हम अज्ञानि है।

वैसे ही सिख्खों की गुरूजी "गुरू नानक साहब" क्या कहते है? "जीवन मरन प्राप्ति योग के लिए ही उसे कष्ट करना है", मतलब जैसे पत्रीजी ने कहा है कि मौत से पहले ही मरना है, ऐसे योग अभ्यास करना चाहिए। मतलब मौत को अनुभूति करना है। मतलब ध्यान द्वारा अतींद्रय शक्तियाँ प्राप्त करना चाहिए। मलतब पहले दिव्य नेत्र को पाना चाहिए और सूक्ष्म शरीर याण करना चाहिए। इसके द्वारा हमे मरने वाले लोगों के संसार में जा सकेंगे और इन लोगों की विषयों के बारे में जानना होगा। इसी को जीवन मरन अभयास कहते है।

ऐसे ही बैबिल में सैंट पाल के सुबातों में कहा गया है कि, "मैं हर समय मरता रहता हूँ "- मतलब मरने वालों के संसार में जाकर वहाँ का विषय ज्ञान पाना।

उसने कहा है कि "एक जिन्दा शव कि तरह जीना सीखों, तभी तुझे प्रभु का दर्शन मिलेगा, मतलब आत्मदर्शन होगा।"

शव क्या करेगा? वहाँ कुछ भी हो वो बेफिकर रहेगा। एक तरह बता सकते है कि एक बच्चा जैसा हालत हो, उनमें भी प्राण है। लेकिन अगर वहाँ कोई बात कर रहा है या झगड़ा कर रहा है, उनसे कोई मतलब नहीं है। वो

साक्षी कि तरह देखता रह जायेगा। ऐसे लोगों में न क्रोध होगा न बदलापन रखते है न असूय या द्वेष रखते है। ऐसे जीयेंगे तो किसी से भी भ्रांति नहीं होगा, आकांक्षा या मोंह, ममकार नहीं होगा। ऐसे होगा कि किसी चीज से संबंध नहीं है।

देखिये, जब रेल यात्रा में आपका स्टेशन पहुँच जाते है, आप उतरते है। ऐसे ही जब जीवन कि यात्रा समाप्त होता है, आप अपना शरीर को छोड़कर चले जाते है। जैसे रेल डिब्बा को छोड़ दिया, यहाँ शरीर को छोड़ते है और जैसे ट्रेन के बारे बाद में नहीं सोचते है, वैसे ही पृथ्वी पर जो भी संबंधों है, उनके बारे में नहीं सोचते है। इसलिए हम सब ऐसे जीना है इस सोच के साथ कि कुछ भी हमारा नहीं है। देखिये महाभारत में अभिमन्यु के मरने के बाद ऊपर लोक में चले गये थे। जब अर्जुन दुखी रहा था, तब श्रीकृष्ण ने उनको अपने सूक्ष्म शरीर के साथ अभिमन्यु के पास भेजा था। जब उसने वहाँ पहुँचा तो अभिमन्यु ने पूछा तेरा मेरा क्या संबंध है? आप जैसे पितायें आप से पहले बहुत थे। तब अर्जुन का मति भ्रमिष्ट हो गया। तुरन्त वापस पहुँच गये है। मतलब अभिमन्यु ने अर्जुन से किसी भी संबंध नहीं रखकर बात किया।

तब अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा कि इसको समझ में आ गया है। जो भी आप कहेंगे मैं पालन करूँगा। इसके बाद अभिमन्यु के बारे में नहीं सोचा और आगे युद्ध शुरू किया।

ऐसे ही इस पृथ्वी पर, मरते ही, अपनी पत्नी या पिता, माता या किसी के ऊपर दृष्टि नहीं रखते है। जब ऊपर चले जाते है अपनी कर्मो पर ध्यान देते है। जैसे रेल गाड़ी में अपना बर्त को खाली करने के बाद इसके बारे में नहीं सोचते है। इसलिए जो बोलता है कि ये मेरा, समझना है कि कुछ भी मेरा नहीं है। ऐसा सब आपका भ्रान्ति है। लेकिन आपको समझना पड़ेगा कि कुछ भी आपका नहीं है। इस पृथ्वी पर कुछ भी आपका नहीं है, जो भी है ये सब परमात्मा का है। आप सिर्फ कुछ सीखने केलिए और अनुभवों के लिए यहा

आये है। अगर आपका होता तो साथ में लेकर जाता, लेकिन सब यही छोड़कर जा रहे है।

फिर मेरा क्या है? मतलब आपका इस शरीर से जो भी कर्मो के फल, मतलब पाप है या पुण्य है। वो ही तुम अपने साथ लेके जा सकते हो। अगर आप ज्ञान प्राप्त करते है, वो भी आप लेके जा सकते है।

लेकिन इस पृथ्वी पर जो है, आपका उसमें कुछ भी नहीं है। उस केलिए अगर लडाइयाँ लडा, या हड़प किया हो या किसी से छीन लिया और पाप किया, अधर्म मार्गो सम्पत्ति प्राप्त किया वो  कुछ भी आपके साथ नहीं आने वाला है। लेकिन सारे पाप कर्मो का फल जरूर साथ में आयेंगे और भविष्य में उसका चुकाना पड़ेगा। दुखों के रूप में अनुभव करना पड़ेगा।

ऐसे ही साथ में नहीं आने वालों चीजों केलिए कोर्ट तक जाते है, इससे आप बहुत नष्ट करते है और दुख पाते है।

किसी के समझ में नहीं आ रहा है कि जो भी इस पृथ्वी पर है वो साथ में नहीं आने वाला है, लेकिन जो भी इसको समझा वो ज्ञानी है। आपके जरूरतों केलिए देखना है। आपका बड़ा बंगला या गाड़ियाँ की कोई जरूरत नहीं है।

क्या करेंगे इनके साथ? कुछ भी नहीं रहेगा। कोई शाश्वत नहीं रहेगा? ये समझना चाहिए। इसलिए ज्ञानि लोग पूछते है कि ये सब इकट्ठे करने की क्या जरूरत है? कुछ भी आप के साथ नहीं आने वाला है।

तब ये बोलेगा कि जब तक हम जिन्दा है, उसे अनुभव करेंगे। वैसे बोलेंगे। लेकिन कितना चाहिए - जीने के लिए कितना करोड़ो कि जरूरत है, कितना बिल्डिंग चाहिए? कितना हजार एकड़ भूमि चाहिए? सिर्फ दिखाने केलिए चाहिए, उन्हें। जीने केलिए एक घर, पहने के लिए कपड़ा और खाने केलिए चाहिए और एक साथी चाहिए। मनुष्य ये सोच रहा है कि जितना ज्यादा लम्बा जीवन हो लेकिन उस जीवन में क्या करना, वो नहीं सोचते है।

अस्लियत में मैं कौन हूँ, मैं कहाँ से आया हूँ, और वापस कहाँ

जाऊँगा? मुझे यहाँ क्या करना चाहिए? मेरा जीवन लक्ष्य क्या है? ये प्रश्न सोचना चाहिए। आपका समय इसी केलिए बिताना चाहिए। अगर पूरी समय सिर्फ सब चीज इकट्ठा करने में ही बितायेगा, तो आखिर में इनका क्या हाल होगा?

इसलिए ये अच्छी तरह से समझना है कि इस पृथ्वी पर हम कुछ ही समय केलिए आये है और यहाँ शाश्वत नहीं रहेंगे। हम से पहले बहुत सारे लोग आपके चले गये है। इसी तरह हमें भी कभी ना कभी यहाँ से निकलना पड़ेगा।

इसलिए महान लोगों का संदेश सीखना चाहिए और उनके तरह जीना चाहिए। जब हमारा ज्ञान बड़ेगा तब ये सब हम समझेगें और उनके हिसाफ से जीयेंगे। तब हम भाग्यशाली होते है।

# मरने के तुरन्त क्या होता है?

पत्रीजी लॉकडाउन के समय पर लगभग 100 एपीसोड बताये थे, उसमें से 70-80 एपीसोड सिर्फ आत्मज्ञान के ऊपर थे।

इस संदर्भ में पत्रीजी ने कहा है कि “मौत से पहले ही मरना चाहिए”, मतलब मरने से पहले मौत के बाद का जीवन के बारे में जानना चाहिए।

अगर हम भी पत्रीजी के जैसे तीसरी ऑंख प्राप्त करते है, तो ये सब जान पायेंगे और अनुभव कर सकते है।

इसलिए इन में से कुछ बातें यहाँ प्रस्तुत करते है।

देखिए हम सब मनुष्य लोग है। मनुष्य मतलब शरीर मन और आत्मा का ये तीनों का मिलावट है। हम आत्मा है जो शरीर पहने है। शरीर धारण करने से पहले हम आत्मा, और धारन करने के बाद, मनुष्य हो गये है।

जब आत्मा इस शरीर से निकल जायेगा वो शव बन जाता है। और हम उसे मरीज कहते है और उनसे प्राण निकल गया है। इसलिए जब तक आत्मा है तभी वो जीवित है, और आत्मा जब निकल जायेगा वो मर जाते है।

आत्मा इस शरीर में कैसे रह पाता है? मतलब इस शरीर और आत्मा के बीच एक कनेक्शन है। उसी को हम **SILVER CORD** कहते है। जब तक वो रहेगा, आत्मा इस शरीर में रहकर अपना काम काज कर सकता है। जब **SILVER CORD** कट जायेगा उस शरीर में आत्मा नहीं रह पायेगा। तो फिर **SILVER CORD** क्यो कट जाता है? मतलब वो इतनी समय तक पृथ्वी पर रहने का निर्णय ऊपर कर कर आता है। उसी को हम आयुष बोलते है। जब उसका आयुष खत्म होता है, तब ये **SILVER CORD** कट जाता है। आत्मा शरीर में नहीं रह पायेगा, और बाहर आ जाता है।

ऐसे ही जब अपने घर में कोई भी मर जाता है, उनके आत्मा शरीर से बाहर निकलता है। और उस आत्मा उसी कमरे में सीलिंग से नीचे देखता है। और अगर वो पुरूष है वो ऊपर से देखकर हैरान हो जाता है, यहाँ भी हूँ और

नीचे भी हूँ? असलियत में वहाँ पड़ा हूँ या मैं उड़ने वाला हूँ, थोड़ी देर केलिए वो घबराता है।

क्योंकि ये पहली बार अपने आप को ऐसे देख रहा है। और अब तक उसको शरीर ही समझता रहा। नीचे विस्तर पर भी है और हवा में उड़ भी रहा है। कुछ समय बाद इसको समझ में आ जाता है कि नीचे वाला में नहीं हूँ, और असली वाला जो उड़ रहा है वो आत्मा है, पहली बार उसका अनुभव में अपना आत्मा देख सकता है। नीचे वाला अपना शरीर है और समझ में आता है कि वो नहीं।

बहुत सारे लोगों को ये विषय मरने के बाद पहली बार अनुभव होता है, और आश्चर्य होते है, क्योंकि तब तक तो वो शरीर समझ कर बैठा है, और अपने सारा जीवन शरीर केलिए ही जीया है। कष्ट किया है। जो कुछ भी किया, उसी के लिए किया है। उसको मालूम भी नहीं कि आत्मा भी एक चीज है। इसलिए बहुत आश्चर्य होता है।

लेकिन बहुत सारे लोग जो ध्यान मार्ग में आ चुके है, ये विषय पहले ही मालूम है कि वो शरीर नहीं है, आत्मा है।

लेकिन बाकी लोग आश्चर्य होते है। अरे अभी तक मैं ये शरीर ही समझ कर बैठा हूँ और जो भी जीवन में किया है, उसी केलिए कष्ट किया हूँ। मुझे समझ नहीं आया कि मैं शरीर नहीं हूँ। हर समय इस शरीर के रोगों को निवारण केलिए सोचा। इसको सजाने में ही लगा रहा था, और कभी भी आत्मा के बारे में नहीं सोचा।

फिर भी बहुत सारे लोग जो ध्यान मार्ग में आ चुके है, उनको आत्मा के बारे में मालूम है, लेकिन सिर्फ शरीर के बारे में सोचकर उसी के लिए जीते है।

आत्मा के बारे में कुछ सोचते नहीं, कुछ नहीं करते है, आत्मा केलिए। सिर्फ शारीरिक विषयों पर ध्यान देते है ऐसे लोग शरीर छोड़ने के बाद और शंका में रहेगें।

कारण जब वो अपना आत्मा को ऊपर, और नीचे शरीर को, देखता है तब याद आता है कि मास्टर लोग ने पहले ही कहा है और हमने बेफिकर रहा था, और तब तक सब कुछ खत्म हो गया है।

इनके शरीर में कुछ नहीं हिलता, थोड़ी देर बाद पत्नी को शक आता है कि ये क्यों नहीं हिल रहा है, और उसको हिलाने की कोशिश करती है। जिस तरफ हिलाता है वैसे ही रह जाता है। इसको शक आता है कि क्या वो मर गया? भयभीत हो जाती है, तुरन्त शोक से रोने लगती है। उसे सुनकर घर वाले आ जाते है। उनमें से एक डाक्टर के पास जाता है, जब ऊपर से अपनी पत्नी को रोते हुए देखता, वो उसके पास जाकर बोलता है कि मैं यहीं हूँ आप क्यों रो रहे हो? जितना भी ये बोले उनको सुनाई नहीं देता। किसी को भी सुनाई नहीं देता। ये भी आश्चर्य होता है क्योंकि वो वहीं है और सब लोग रो रहे है। उसको समझ में नहीं आता ये लोग क्यों रो रहे है?

वो अपने आप से पूछता है कि मैं इतना बोल रहा हूँ लेकिन कोई भी सुन नहीं रहा है, मेरे बात नहीं मान रहे है।

इसी समय आजु-बाजु लोग और संबंधी लोग आते है। इससे भी बात करने की प्रयास करता है और वो भी नहीं सुनते है, तब उनका होष उड़ जाता है। ये क्या है? मेरा परिस्थिति ऐसा हो गया? कोई भी नहीं सुन रहा मेरी बातें। आश्चर्य रह जाता है।

असली बात है कि, वो सब लोग को देख सकता, सुन सकता, लेकिन उन लोगों को ये नहीं दिखता था, सुनाई नहीं देता। पहले उन्हें ये सब समझ नहीं आता।

इसी वक्त डाक्टर आता है। नाड़ी को पकड़ कर देखता है और तय करता है कि वो मर गया। तब सब लोग रोना शुरू कर देते है। इनमें से कुछ लोग शव को घर के बाहर रखते है। धीरे-धीरे दहन संसकार केलिए तैयारी करते है। वो भी इनको आश्चर्य दिखता है। इसी वक्त ऊपर से दो सहायक आते

है- उसी को यम बटुक कहते है।

वो सहायक उनको बोलते है कि वो मर गया। इसीलिए उन्हें लेने आये है? हमें ऊपर लोक में जाना चाहिए। ये और भी आश्चर्यचिकित रह जाता है। ये कौन लोग है? ये लोग लेने आये है, ऊपर लोक को। वो कहा है? ये सोच कर रह जाता है। तब से पूछता है कि वो कौन है, और मुझे कहॉं लेके जायेंगे? मुझे आपके साथ क्यों चलना है। नहीं आऊँगा। तब वो लोग बोलते है -

असलियत में तुम पृथ्वी वासी नहीं हो। तुम आत्मा हो और ऊपर लोकों से आया है। इसलिए हमें वापस ऊपर जाना है।

ऐसे कहने से नहीं जाता है। क्योंकि इनको अपने बच्चों से, पत्नी से बहुत प्यार है। और उन पर बहुत ममता है। तो कैसे छोड़ सकता है? वो भी नहीं बहुत कष्ट कर संपत्ति कमाया है, सब कुछ छोड़ कर कैसे जा सकता हूँ?

तब तक वो समझ बैठा था कि ये सारा मेरा ही है। और सब लोग मेरा है। हर वक्त उसका सोच येही है कि मैं अच्छा रहना और मेरे लोग अच्छा रहना है। और कुछ भी नहीं सोचता था।

हर वक्त सिर्फ धन कमाना है, संपत्ति बढ़ाना है, सम्पतियॉं कमाना है। कभी भी वो आत्मा के बारे में सोचा भी नहीं। कुछ नहीं किया। अपने शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बहुत खर्चा किया है।

वो अपनी शारीरिक सुखों के लिए सम्पति कमाने के लिए बहुत पाप किये है। और गलतियॉं किये है। अब ये सहायक लोग उनको कहते है कि वो शरीर नहीं है और वो सारे सम्पति आपका नहीं है। तो चलते है यहॉं से। वो जाने केलिए तैयार नहीं है। तब सहायकों ने उनको तीन दिन का समय देते है। और बोलते तब सब समझ में आ जायेगा।

इसी वक्त सारी बंधुगण उसका शरीर की दहन संस्कार केलिए तैयार करते है। उसको काडी पर रखते है और रस्सी से बांधते है। माला पहनाते है। उसको ऊपर से ये सब आश्चर्य दिखता है। धीरे से उस शव को शमषान लेके

जाते है। वो भी पीछे शमषान को जाते हैं। बहुत घबराता है, ये क्यों मुझे लेके जा रहे हैध और ऊपर से मना करता है। लेकिन कोई सुनने वाला नहीं है। उस शमषान में उसको जलाते है। और ऊपर से फिर चिल्लाता है। अन्त में शरीर भस्म हो जाता है। और सब लोग अपने अपने घर चले जाते है। वो अकेला रह जाता है। क्या करेगा? फिर घर आ जाता है।

फिर सहायक लोग उनसे कहते है। देखिए सब कुछ भस्म हो गया, कोई है नहीं, और पृथ्वी पर तुझे कोई पूछने वाला नहीं। फिर भी ये आने के तैयार नहीं। तो ठीक है, उनको और ग्यारह दिन तक वक्त देते है।

इसके बाद 10 वॉं और 11 वॉं दिन का कार्यक्रम हो जाती है। सब अपने अपने घर चले जाते है फिर सहायक लोग उनसे पूछते है कि अगर वो आने को तैयार है कि नहीं। क्योंकि इस संसार (सृष्टि) में किसी के ऊपर दबाव नहीं, सबको अपनी स्वेच्छा से करना या नहीं करने का मौका है। कुछ भी जबरदस्ती नहीं है। इस सृष्टि में ये बहुत बड़ी उपलब्धी है।

इसलिए आखिरी बार उन्हें पूछते है। लेकिन उसको अपनी पत्नी और बच्चों पर, सम्पति पर ममकार ज्यादा है। इसलिए जाने से मना कर देता है। वह रह जाता है।

तब सहायकों ने बहुत तरीके से मनाने के लिए कोशिश करते है। जब वो सुनने को तैयार नहीं है, उन्हें छोड़कर चले जाते है। तब पृथ्वी पर आत्म द्वार बंद हो जाते है। तब ये अकेला वहीं रह जाता है।

कुछ लोग, समझदार, और ज्ञानी, जिसको किसी पर ममकार नहीं, ऐसी विषयों के बारे जानने वाले लोग, ये सब, सहायाकों के साथ तुरन्त चले जाते है। ऊपर लोक में जहॉं जाना है।

लेकिन जो पृथ्वी पर रह गया, वो अपने पत्नी के कमरे में जाता है। बच्चों के कमरे में भी जाता है। अपनी सम्पत्ति को देखकर आता है। उनका पूरी दृष्टि उन्हीं पर रहता है। ऊपर लोकों को जाने के बारे में सोचते नहीं है।

कारण, उनकों ऊपर लोकों के बारे में कुछ भी मालूम नहीं है। वहॉं पर क्या होता है, क्यों जाना है, नहीं जायेंगे तो क्या होगा, इन सारे विषयों पर कुछ मालूम नहीं है। इसलिए वहीं रह जाता है। ऐसे आत्मा को "प्रेतात्मा या भूत" कहलाते है। ऐसे लोग कुछ हज़ारों या लाखों भूत इस पृथ्वी पर है।

ऐसे लोग कुछ समय के लिए अपने पत्नी को, बच्चों को और धन सम्पति को देखते-देखते रहते है। उसको कोई ध्यान नहीं देता है। इनको कोई सुन नहीं सकता है और अपने-अपने कामों में लग जाते है। अंत में कुछ समय बाद उसकी पत्नी भी उनके बारे में सोचती नहीं। और कितने दिन रोएगी? वो कुछ नहीं कर सकती है, जैसे भी हो।

इसलिए उसको कुछ समझ में नहीं आता है कि मैं क्या करूँ? मति खो जाता है, इधर-उधर बटकता रहता है। उस पुल या किसी पेड़ पर लटकता रहता है। और कुछ नहीं कर सकता। ऐसे आत्मा को भूत कहते है, या प्रेताम्ता। ऐसे, कुछ शतक सालों तक समय बीत जाता है। जब जीवित था तब भी पूरा समय बरबाद किया और मरने के बाद भी।

कारण यही है कि, उसको बिल्कुल ज्ञान नहीं। अज्ञान ही कारण है। क्योंकि जब जीवित था तब सिर्फ और सिर्फ धन सम्पत्ति में समय लगाया, सुख, संसार में समय बिता दिया। और आत्मा के बारे में सोचा नहीं। आत्मा के लाभ के लिए कुछ भी कर्मो नहीं किया। और आत्मज्ञान भी नहीं कमाया। किसी को सुना भी नहीं, सिर्फ अपनी शरीर के बारे में ही सोचता रह गया, और जीवन व्यर्थ किया है।

इसीलिए पत्रीजी ने कहा है कि "मरने से पहले ही मरना है", क्यों कि आपका जीवन व्यर्थ नहीं होना चाहिए। वो समय को व्यर्थ नहीं करने को बोलता था। सिर्फ आत्म संबंदित कार्यक्रर्मो में शामिल होना और अन्य में नहीं, तब आपका समय व्यर्थ नहीं होगा।

इसलिए हम आत्मायें जीवन में समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए। और

शरीर छोड़ने के बाद भी समय व्यर्थ नहीं होना चाहिए। तो अगर मरने के बाद समय व्यर्थ नहीं होना है तो क्या करना है? ऊपर लोक के सहायकों के साथ चले जाना चाहिए। इसके बाद के कार्यक्रमों के लिए तैयार करना चाहिए। मतलब नया शरीर लेने के लिए तैयार, नये अनुभवों के लिए और नया पाठ सीखने के लिए तैयार होना चाहिए। मतलब आत्मा का ऐसी तरक्की होनी चाहिए।

क्योंकि जीवन सिर्फ आत्मा उद्धारण केलिए ही जन्म लेते है। और कुछ सीखने के लिए, अनुभवों के लिए आते है। इसीलिए इस सृष्टि में जन्म लेना, कुछ पाठ सीखना, कुछ अनुभव पाना और वापस जाना - यही सृष्टि का नियम है। यह सब विषय सिर्फ आत्मज्ञानी को समझ में आता है। जन्म लेना, मरना भगवत गीता में भी कहा गया है।

**जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।**
**तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।। (2-27)**

जो भी जन्म लेता है, उसे मरना तैय है और जो मरता है उसे जनम लेना तय है। इसलिए आप इस विषय पर शोकित नहीं होना चाहिए।

ये ही नहीं, और भी कहा गया है

**वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।**
**तथा शरीराणि विहाय जीर्णा न्यन्यानि संयाति नवानि देही ।। (2-22)**

मनुष्य जैसे पुरानी फटी कपड़े को छोड़कर नया पहनता है, वैसे ही आत्मा बूढ़ा शरीर को छोड़कर नया शरीर लेता है।

ये ही है भगवत गीता में। इसलिए शरीर छोड़ने के लिए शोकित नहीं होना और रोना नहीं चाहिए। क्योंकि एक और नया शरीर मिलने वाला है। ये सब आत्म ज्ञानी को मालूम होता है।

इसीलिए जब कोई मर जाता ये ही विषय उन्हें समझाते है। अन्नमाचार्य का गीत "नानाटि बतुकु" इसी के बारे में कहता है। आत्म ज्ञानि लोग कहते है कि क्यों रोना है ये फटे कपड़े को छोड़ने के लिए, नया पहनने केलिए खुष

रहना चाहिए।

इस मरीज कि पत्नी सोचती है कि मेरी जिंदगी की हालत ऐसा हो गया। मुझे इस जिन्दगी से क्या जरूरत है? असलियत में वो शोकित है कि उनका पति चला गया। जैसे कि वो शाश्वत में रहने वाला है। उसको समझ में नहीं आ रहा है कि वो भी चले जाने वाली है। आगे पीछे, बस इतना फर्क है, सब को जाना पड़ेगा।

मरने के बाद भूत की तरह पृथ्वी पर क्यों रह जाते हैं?

क्या कारण है कि मरने के बाद भूत और प्रेतात्मा के रूप में पृथ्वी पर भकटते है, ऊपर लोक जाने से मना कर कर?

इस कारण के बारे में अगर आप समझ सकते है तो अपना जीवन सुधार सकते है, नहीं तो नष्ट करते हो, इसलिए इन कारणों के बारे में जानते है।

1. मुख्य कारण है कि अपने पत्नी, या बच्चों पर ज्यादा ममकार होना।

2. मरने के बाद अगर सब लोग दुखी है तो उन्हें छोड़ने के मन नहीं होगा। वो ये समझकर बैठता है कि उन्हें रोने से मनवाना है। इसलिए वहीं रह जाता है।

ऊपर से आये सहायाकों जितना भी समझाये और बिना समझ कर जिद्दी से वही रह जाता है।

इसीलिए जब कोई मरता है, हमें रोने से मना करते है। लेकिन पत्रीजी कहते है कि सहज में कुछ समय रोना चाहिए। ताकि सारे शोक पूरी तरह से निकल जायेगा, लेकिन रोते रोते ही नहीं बैठना है। अगर सब लोग बैठकर रोते है तो वो मरने वाला पृथ्वी छोड़कर नहीं जा पायेगा, और प्रेतात्मा होकर रह जायेगा। मतलब करीब के लोग रोने से इसको प्रेतत्मा बनाते है। बहुत नष्ट करते है उसको, अगर नहीं रोयेंगे तो वो निश्चिन्ता से सहायक के साथ ऊपर

लोक चले जाते है। इसीलिए जानना जरूरी है कि रोना मना है।

इसीलिए थोड़ा ज्ञानी लोग ये सब समझते है। जितना वो रोयेंगे उतना कष्ट होगा। अगर तुम्हें उसे भूत बनाना है तब रो लेना, अगर उसे अपने आगे के कार्यक्रमो़ लग जाना है, तब तो नहीं रोना।

इसलिए ज्ञानी लोग, मतलब जिसको मालूम है कि सब आत्मा है, और उनको मौत नहीं है, ऐसे लोग रोते नहीं, और रोने वाली को मनाते है।

3.और ये भी है कि पूरा जीवन कपा दिया, धन सम्पत्ति कमाने में और सोना कमाने में कितना कष्ट किया, पूरी जिन्दगी अब उसे छोड़ना मुश्किल हो जाता है। कितना कष्ट होगा? जब जीवित था कितना पाप कर्मो किए ये सब कमाने के लिए और अधर्म सम्पति को छोड़ना बहुत मुश्किल है।

देखिए कुछ अपर कुभेर लोग है, वो बाथरूम भी सोने से बनाये है। उतना लक्जरी जीवन को छोड़ने में मुश्किल होगा। ये सब छोड़कर नहीं जा पाते है और पृथ्वी पर भूत बन कर रह जाते है।

इसलिए अगर प्रेतात्मा नहीं होना है तो जो सम्पत्ति आपके साथ नहीं आयेगा, उसके पीछे मत पड़ो। बल्कि आपके साथ आने वाली ज्ञान को कमाओं। सिर्फ खाना, पीना और सोने के लिए जरूरतों के लिए सम्पत्ति होना चाहिए। इससे अधिक कि जरूरत नहीं। इसलिए ज्यादा मोह नहीं होना और ममकार को बढ़ाना नहीं चाहिए, इनके ऊपर।

अगर आपको जरूरतों से ज्यादा पैसा है तो उसे आपका आत्मा को उन्नति के लिए खर्च करना जैसे आत्मसेवा, ऊपर लोक में काम आयेगा, शरीर छोड़ने के बाद ऐसे आत्म सेवा से बहुत लाभ मिलेगा, आत्मा को। और कुछ कारण जिससे पृथ्वी पर प्रेतात्मा होकर रह जाते है।

4. अगर कोई काम अधूरा रह जाता है तो मृत्यु के समय पर उसी कामों पर अपनी दृश्टि रह जाती है और ऊपर लोक में नहीं जा पाता है। क्योंकि इन कामों के बारे में ही सोचता रहता है, कैसे पूरा करूँगा, सहायकों को सुनते

नहीं और पृथवी पर प्रेतात्मा होकर रह जाते है।

5.अगर जीवन में अत्यन्त दुखी होकर अपना जीवन को सोचकर ऐसा हुआ मेरा लोग वैसे हो गये है। जिसका पूरा जीवन ही समस्याओं के बीच में है, वैसे लोग बहुत दुर्भर जीवन बिताते है। वो भी पृथ्वी पर प्रेतात्मा होकर रह जाते है।

6. अगर अचानक कोई दुर्घटना में गायल होकर मर जाता है या हत्या की गयी हो। तो उसे ऊपर लोकों को नहीं जा पायेगा, क्योंकि वो अपना बदला लेना चाहता है और प्रेतात्मा होकर पृथ्वी पर रह जाता है।

ये सारे कारण प्रेतात्मा बनने का वजह है। अगर आप ज्ञान प्राप्ति करते है, अपनी कमियों को ठीक कर सकते है तो आसान से ऊपर लोकों को चले जाते है। आपका समय बच जायेगा, अगले जन्म के बारे में अपना प्लान बनाकर आगे कि तरक्की कर सकते है।

याद रखना, कि मरने के बाद सिर्फ 11 दिन का वक्त रहेगा। और इसी समय में उसको निर्णय लेना है कि सहायकों के साथ जाना है या नहीं। नहीं तो 11 दिन के बाद सहायकों वापस चले जाते है और आत्म द्वार बंद हो जाते है। तब उनकी हालत बहुत बुरी होगी।

क्योंकि आत्मा ऊपर लोक में नहीं जा सकती और दूसरी शरीर या जन्म नहीं ले पायेगा। और पृथ्वी पर प्रेतात्मा बनकर शतकों सालों तक रूकना पड़ेगा।

इसलिए पत्रीजी एक संदर्भ में कहा है कि अगर आपको तीसरी आँख खुली है तो आप बड़े-बड़े पुलों पर देख सकते है, कितना सारे प्रेतात्मा बैठै है।

इसलिए अगर हमें यहाँ प्रेतात्मा होकर नहीं रहना है तो पत्रीजी कुछ विषय के बारे में हमें कहते है। अगर प्रषान्ती से ऊपर लोक को जाना है सहायाकों के साथ, तब हमें कुछ विषयों के बारे में जानना चाहिए।

1.मुख्य बात है कि जब जीवित है आपको ये समझ में आना है कि आप आत्मा है, शरीर नहीं है। यही विषय बार-बार कहते है और अपने घर में

एक बोर्ड में लिखकर रखना कि मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ, बड़े-बडे अक्षरों में छिपकाना है। जब भी उसे देखोगें तुम्हें याद आएगा कि तुम आत्मा है।

2. मुख्य है कि आप "मौत से पहले मरने वाली बातों" मतलब मरने के बाद का जीवन के बारे में जानकारी होना चाहिए।

3.मुख्य यह है कि मरना सहज है और इसके लिए सिद्ध रहना है, जनम लेना कितना सहज है, मरना भी - ये बात मालूम होना चाहिए।

इसीलिए पत्रीजी कहते है कि जनम भी त्योहार है और मौत भी है, इस आत्मा को शरीर छोड़ना अनिवार्य है। जो मरता है वो जनम लेता है और जो जनम लेता है वो मरता है। मौत सहज है और उसके लिए तैयार रहना चाहिए। यही मैंने पहले भी कहा था।

4. वैसे ही अपने लोगों पर और अपनी सम्पति पर ज्यादा ममता नहीं होना चाहिए।

5.और जब कोई मरता है, तब करीब रिश्तेदार और बचचों को ज्यादा देर तक रोना नहीं चाहिए। ये समझ कर रोते है कि अगर कोई देखने आते है तो उस पर प्रेम नहीं है। और जोर से रोते है। याद रखिए जिसको प्रेम है, वो नहीं रोयेगा और मरीज को लाभदायक होना और नष्ट नही करना है, तो वो नहीं रोयेगा।

6.इस वक्त ये याद रखना है कि ये जीवन कुछ ही समय के लिए है। और हम यहा कुछ पाठ सीखने आये है, और कुछ अनुभवों के लिए आये है। ये जानिए कि हमे मौत नहीं है, मौत अन्त नहीं है। मौत भी फिर पृथ्वी पर लौटने के लिए है। मौत सिर्फ एक ब्रेक है।

7.मौत का मतलब शरीर की और जगह को बदलना और कुछ नहीं। अगर आप ये समझ जाये है, आप पृथ्वी पर नहीं रह जायेगें प्रेतात्मा होकर, आराम से सहायकों के साथ वापस ऊपर लोक चले जाते है। इसलिए जितना ज्यादा समझ में होगा, उतना लाभ मिलेगा। इसलिए मौत के बाद बहुत सारे विषय जानना चाहिए।

# परम में कौन से लोक है?

सहज में मरीज को जितना भी मनाने की कोशिश करते हैं सहायकों ने, वो जानने को तैयार नहीं होता है। और सहायकों ने इसको छोड़कर चले जाते है। और जो आत्म द्वार होता है वो बन्द हो जाते है। तब ये आत्मा प्रेतात्मा या भूत बन कर घूमता रहता है। पहला अपना घर, पत्नी, बच्चों के पास जाता है, उनके पास बैठता है, लेटता है लेकिन उन सबकों कुछ भी मालूम नहीं होता है? इसके बाद अपनी धन दौलत के पास जाकर बैठता है। ऐसे करके बहुत समय बर्वाद करते है, कुछ लोग शतकों साल तक ऐसे स्थिति में रह जाते है।

बहुत समय बाद उनको समझ आता है कि कोई उनकी तरफ नहीं देख रहा है और सब अपनी-अपनी कामों में लगे है। वो सोचने लगता है कि अब मैं क्या करूँ? मेरी स्थिति क्या है? ऊपर कैसे जाना है? कौन मुझे लेके जायेगा? रास्ता क्या है? यहाँ पर कोई नहीं जो मुझे बता सकते है या लेके जाने वाला? ऐसी शंका में रह जाता है।

बहुत सालों बाद उनको लगता है कि यहाँ कुछ करने का नहीं है और किसी चीज से उनका संबंध नहीं है। अच्छा होता मैं सहायकों के साथ चले जाता, कम से कम अभी तो जाता है। ऐसे दृड निश्चय लेके बैठता है, तब ऊपर लोकों से कोई यहाँ आकर उसे कुछ सहायता देते है। और ऊपर लोक चले जाते है, लेकिन तब तक तो बहुत समय खो दिया होगा।

ये सब किसके साथ होता है? जिसने कोई ध्यान नहीं सिखाया, और कुछ ज्ञान भी नहीं है और जिसको पत्रीजी से परिचय नहीं है। लेकिन जो ध्यान करते है, ज्ञान पाते है, पत्रीजी के साथ परिचय है, पत्रीजी के मार्ग में चलते है, वो लोग मरने के बाद के बारे में जान लेते है क्या होता है। मरने के बाद वो सहायकों के साथ ऊपर लोकों को चले जाते है, क्योंकि वो समझ सकते है कि और उनको ये भी समझ में आता है कि यहाँ पर किसी चीज से संबंध नहीं रखना है, मेरा रास्ता मेरा और उनका अपना।

क्योंकि पत्रीजी ज्यादा तरह इनहीं विषयों पर बात करते हैं। हाल ही में ज्यादा तरह मौन के बारे में ही वो बताते है।

इसीलिए हमे ऐसा जीना है कि कल हम हो न हो, या अगला क्षण में रहे या न रहें। हर चीज केलिए तैयार रहना चाहिए।

जैसे अगर आप रेल यात्रा कर रहा है, अगर पहले ही सब सजा कर रखेंगे तो अच्छा है, वैसे ही अंत तक नहीं सजाते में कितना टेंषन रहता है?

इसी तरह ऊपर लोक में जाने के लिए तैयार रहना चाहिए, ये नहीं सोचना कि अब मेरी पत्नी को क्या होगा। बच्चों को क्या होगा। धन सम्पत्ति क्या करेंगे। मौत से नहीं बचेगा। जो समय आपने निश्चय करके आया, उस समय के बाद निकलना पड़ेगा। तुझे मालूम नहीं, लेकिन प्रकृति को याद है।

जब पृथ्वी पर आते है उधर ही निर्णय करके आते है, कितने साल तक यहॉं रहना है, ये विषय प्रकृति को मालूम है। और जब वक्त आएगा, छोड़ना पड़ेगा, अगर तैयार नहीं रहा तो शंका में रह जायेगा।

शरीर छोड़ने समय में उनके बारे में नहीं सोचना है, कि, जैसे वो काम नहीं किया, ये काम बाकी है। ऐसे सोचेगें तो बहुत नष्ट होगा और बाधा होगा, इसलिए मौत के लिए तैयार रहना है।

अगर तुम्हें आज जाने का निर्णय लिया है और आपका समय नहीं हुआ, २० साल, ३० साल या पच्चास हजार तक तुम्हें जब तक वक्त नहीं आयेगा, यहीं रहना है और जब वक्त आयेगा, तुम्हें तुरन्त निकलना है। आपका कोई काम बाकी है भी, तो सब कुछ छोड़कर जाना है।

एक छोटा उदाहरण - एक आदमी सुखी रहने के लिए पूरी जिंगदी कष्ट कर कर धन कमाया। करोड़ो रूपया, एक बड़ा सा महल भी बनाया, जिसमें सारे व्यसवस्था किये गये हैं। अपने आप को भाग्यशाली समझ कर बैठा। ऐसे ४-५ दिन गुजरे और जब तक उसका वक्त समाप्त हो गया, तो क्यों करेगा? रोयेगा कि मैंने अनुभव नहीं कर पाया जो धन कमाया है। उसी महल के ऊपर

इसका ध्यान रहता है। जब सहायकों आते है, उस को लने के लिए तो नहीं जा पायेगा, क्योंकि उस महल पर ममता है और यहाँ रहकर भूत बनकर घूमता है।

इसें यहाँ सीखना है कि जो ध्यान करता है, ज्ञान पाता है, और मौत के बाद का जीवन के बारे में कुछ समझ जाते है, मतलब मरने के बाद ऊपर से सहायाकों आते है और हमें उनके साथ ऊपर जाना है और आगे कि प्लान करना है, ऐसे विषयों पर अवगाहन रखता है, तब किसी चीज पर ममता नहीं होगा या व्यामोह नहीं होगा। ये भी जानेगा कि सब उनकी तरह यहाँ अपने अपने कर्मो के लिए आये है। इसलिए सब लोग कुछ समय बाद निकलना है इसलिए किसी के ऊपर ममता नहीं रखता है। तब आराम से सहायाकों के साथ चले जाते है।

यहाँ हमे एक बात समझना है कि जब सहज अवस्था में मर जाता है तब क्या होता है? जो ध्यान नहीं करता और पाप ही कर बैठे, ऐसे लोगों को ऊपर से सामान्य सहायक आते है, उनहें पितृ देवता कहते है, पत्रीजी ने कहा है। उनको वो लोग अधोलोक या नीचे लोक ले जाते है।

लेकिन ध्यानी लोगों को जो सेवा करते है, और ज्ञान प्राप्ति किये है, ऐसे लोगों को, महान योगी लोग लेने आते है और ऊपर लोक को लेके जाते है, पत्रीजी कहते है

इसलिए न केवल सुबह को श्याम को भी हमें ध्यान करना चाहिए। कम से कम दो घंटे सुबह और दो घंटे शाम को करना। उसका फल आपको यहाँ मालूम नहीं होता, लेकिन मरने के बाद मालूम होगा। इसी को हमारे पुराणों में कहते है कि, पापी लोगों को यम बटुक आते है और यम लोक लेके जाते है। और पुण्य लोगों को इन्द्र दूतों आकर उन्हें स्वर्ग लोक लेके जाते है।

ऐसे हम जब ऊपर लोक जाना है तब हमें (आत्मा) एक सुरंग द्वारा जाना पड़ता है। सहायाकों हमें जिस लोक को जाना है, उस लोक तक छोड़ते है। इसे नहीं मालूम होगा कितना दूर तक कितनी लाखों किलोमिटर वो गये है,

उतनी तेज चले जाते है। जब उस लोक के पास पहुँचते है, उसे थोड़ा रोशनी दिखता है, जैसे एक रेल, गुफा से बाहर निकलते समय रोशनी दिखता है, यहाँ भी ऐसी दिखेगा।

यहाँ कुछ और विषयों की जानकारी लेते है। भूलोक मतलब एक ही नहीं, जो भी हमें दिखती है, ये सब भूलोक कहते है। ऐसे लोक संसार में करोड़ो है। सूर्यो, चन्द्रों, लाखों करोड़ो भू-मंडल, सारे जो दिखते सब भूलोक के अन्दर आते है। समझिए सिर्फ भूलोक कितना बड़ा है। ऊपर लोक कितने बड़े होते होगें, सोचिए।

भूलोक के बाद भुवर्लोक कहते है, इसके बाद सुवर्लोक, मतलब स्वर्गलोक कहलाता है। इसके ऊपर जनालोक, उसी को कारण लोक भी कहते है। इसके ऊपर महालोक है, और इसके ऊपर तपोलोक है। और फिर सत्यलोक है। पूर्णात्म और देवता सत्य लोक में रहते है। वो बहुत महान लोक है। वैसे ही हर एक लोक में विभाग होते है।

सहज में जो पाप करते है वो भुवर्लोक जाते है। जो पुण्य करते है वो शुवरलोक जाते है। जो निस्वार्थ से सेवाएँ करते है और महान कार्य करते है वो लोग महालोक चले जाते है। वैसे ही जो बिना कुछ संकल्प/चाहत, ध्यान करते है और तपस्या करते है वो लोग तपोलोक पहँचते है। और ऐसे ही ध्यान जो इस पृथ्वी पर सज्जन को मानते है और उसका मार्ग में मतलब कठोर सादना स्वाध्ययाय, सांगत्य करते है और सत्य को अनुभव में लाते है, वो सत्यलोक पहुँचते है। अगर ऐसे होना है तो मौत के बाद का जीवन के बारे में जरूर जानना चाहिए। इसकेलिए चार काम करना है, वैसे पत्रीजी ने कहा है -

1. श्वास पर ध्यान करना
2. ज्ञानी लोगों का पुस्तक पठन करना, जैसे पत्रीजी के पुस्तकें।
3. ज्ञानी लोगों का संगत्य में रहकर उनके भाषण सुनना।
4. इसी ज्ञान मार्ग में सेवा करना

अगर पत्रीजी को देखा है, वो कभी भी एक शरीर कि तरह नहीं जीते है। लेकिन एक आत्मा कि तरह ही प्रवर्तना रहता है, वो आत्मा को उच्चतम जगह देते है। भागने में रूचि नहीं रखते है। किसी भी हालतों में रह जाते है। कुछ हो या न हो, उनको कोई फर्क नहीं पड़ता है। जब किसी को सत्य अनुभूति होती है और पुर्ण ज्ञान प्राप्त करता है और सबको ज्ञान सिखाता है वो सत्य लोक पहुँचते है।

ऐसे ही ऊपर जाने के बाद वाला जीवन के बारे थोड़ी सी बात किए है। इसलिए हमे भीमवरम में 3-दिवसीय क्लास करवाकर ये सब ज्ञान बांट रहे है।

# पापी लोग किस लोक पहुँचते है।

हमने कुछ विषयों के बारे में बात कर चुके है। पापी लोग कहा जाते है, पुण्य करने वाले कहाँ जाते है? ध्यानी लोग कहाँ जाते है और महान कार्य करने वाले कहाँ जाते है, ये सब जान चुके है।

इसलिए वहाँ पहुँचने के बाद क्या होता है। इसके बारे में जानेगें। उससे पहले ही अपना शरीर के बारे में जानना होगा।

उस आत्मा के ऊपर 7 शरीर होते है। पत्रीजी ने कहा है। इसलिए इनके बारे में जानते है। और इस सृष्टि में लोकों के बारे में जानेगें। तभी मरने के बाद की बात समझ में आएगा।

इसलिए पहले अपने 7 शरीरों के बारे में जानते है। मनुष्य को 1. स्थूल शरीर, 2. प्राण शरीर, 3. सूक्ष्म शरीर, 4. कारण शरीर, 5. महाकारण शरीर, 6. विश्वमय शरीर, 7. निर्वाणमय शरीर हाते है।

वैसे ही सृष्टि में ७ लोक है।

1.भूलोक, 2.भुवर्लोक, 3.शुवर्लोक, 4.जनालोक, 5.महालोक, 6.तपोलोक, 7.सत्य लोक, करके 7 लोक है।

हमें ये जानना है कि जब हम मरते है, स्थूल शरीर और प्राणमय शरीर को भूलोक में छोड़ते है।

सूक्ष्म शरीर मतलब मनोमय शरीर, भुवर्लोक या शुवर्लोक अपने कर्मो के हिसाफ से जाते है।

चौथा शरीर कारण शरीर के साथ जनालोक पहुँचते है, पाँचवा महाकारण शरीर के साथ महालोक पहुँचते है, छटवाँ विश्वमय शरीर के साथ तपोलोक पहुँचते है। सातवाँ निर्वाणमय शरीर के साथ सत्य लोक पहुँचते है।

यहाँ आपको याद रखना है कि जनालोक के पीछे (नीचे) 3 लोक है, और ऊपर 3 लोक है। बीच में जनालोक है, मतलब जनालोक के नीचे भुलोक, भुवर्लोक और सुवर्लोक है, ऊपर महालोक, तपोलोक और सत्यलोक है।

यह समझना है कि जनालोक का कुछ विशेषता है।

सबसे पहले जब हम मरते है तो यहाँ भूलोक में आत्मा पहले ही दिन स्थूल शरीर को छोड़ता है और दूसरा शरीर प्राणमय शरीर को तीसरा दिन भूलोक में छोड़ता है।

तब आत्मा, अपनी सूक्ष्म शरीर के साथ या तो भुवर्लोक या सुवर्लोक पहुँचता है। इन दोनों में जहाँ हमे अर्हत के हिसाफ से वहाँ, सहायकों ने हमे छोड़ देते है। अपने कर्मो के हिसाफ से अर्हत होता है।

भुलोक में कई तरह की कर्म करने वाले होते है। ये सहज है, कुछ लोग पाप करते है और कुछ लोग पुण्य करते है। कुछ लोग दोनों पाप-पुण्य करते है। जो तमोगुण और रजोगुण में है वो अधिक मात्रा में पाप ही करते है। अगर वो इन दोनों गुण के आगे जाकर सात्विक गुण में रहेंगे तो सिर्फ पुण्य कर्म करते है और अच्छा काम ही करते है।

इसलिए मैं कहता हूँ कि जो ध्यान करते है कम से कम वो सात्विक गुण तक पहुँचे। तब मन को शुध्दि करना होगा, और ज्यादा शुध्दिकरन होगा तो वो शुध्द सात्विक गुण में आयेंगे।

इसलिए अगर एक आदमी सिर्फ पाप कर्मो किया है, तो सहायकों ने इनको भुवर्लोक में छोड़ते है, इस भुवर्लोक में 8 भाग होते है। पत्रीजी ने कहा उसमें 4 ऊपर भाग और 4 नीचे है, ये नीचे वाले भाग में सिर्फ पापी लोग होते है और ऊपर वाला भाग में जो पाप-पुण्य दोनों किये है।

जो भी सात्विक गुण में होते है और सिर्फ पुण्य कर्मो करते है, तब सहायकों शुवर्लोक लेके जाते है।

भूलोक से कई गुने बड़ा होता भुवर्लोक, उसी तरह शुवर्लोक भी बहुत बड़ा होता है। इस भूलोक को ही हम नाप नहीं सकते, समझिये कितने बड़े होगें दूसरे लोक।

भागवत गीता में अध्याय-9 और 21 श्लोक में कहा गया -

**ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ।**
**एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते ।।** (**9-21**)

तात्पर्य - वो विस्तार रूप का स्वर्गलोक का भोग अनुभव करके, उसके कारण जब पुण्य फल खत्म हो जाता, मनुष्य लोक दुबारा वापस आता है। ऐसे करके केवल वैदिक कर्मो कर कर सांसारिक चक्र में घूमते रहते है।

मतलब विशाल स्वर्गलोक कितना बड़ा होगा, ये मत समझो कि कुछ देशों का समूह है, उनका अनंत होते है।

भूलोक में कितने आत्मायें (मानव) है, लगभग ७०० करोड़ो है, वैसे ही प्रति लोक में शतकों कारोड़ो आत्मयें रहते है। अपनी-अपनी अर्हत के हिसाफ से उस लोक चले जाते है।

भुवर्लोक जाने के बाद क्या होता है? कोई भी आत्मा पहला थोड़ा आराम करता है। वहाँ स्त्री पुरूष का लिंग भेद नहीं होता। ऊपर लोक में सब आत्मा है। क्योंकि निजी जीवन में बहुत कष्ट किये होगें, बहुत बाधायें झेले होगें, थक गये होगें। इसलिए जाने के बाद बहुत समय तक आराम लेते है।

थोड़ा विश्रांति के बाद स्वास्थ्या में आते है। और पूर्व जन्म में तब तक जो भी काम किये है, वो सोचते है, कौन से पाप किये है। क्या हिसां किया, कितना मुर्गी को खाया? कितने बकरें का खून पिया? सब को याद करता है और एक एक को सोचते सोचते अनुभव करता है। और दुख को महसूस करते है। अपने आप सो पूछता है कि, अगर मुझ पर हिंसा किया तो मेरी क्या परिस्थिति होता। जब वो ऐसे सोचने लगते, वैसी अनुभव उनको प्राप्ति होती है। वैसे एक एक करके याद करते करते उनका नरक का अनुभव होता है। जो भी वहाँ सोचती है, वहाँ उसी का अनुभव होता है। वैसे ही अगर उस को कुछ खाना या करना वो सब । आटोमेटिक हो जाता है।

ये सब होने के बाद, जो भी इच्छायें बाकी, सब कुछ अनुभव कर कर अगर कुछ नहीं बचता, तब सोचता मैं क्या करूँ? जो भी सोच लिया सब कुछ हो गया। ये सब केलिए कुछ समय लगता है, तब जब पूरा मनोकामनाये खत्म

होगा, तब अपना मनोमय शरीर को वहॉं छोड़ते है। तब उनका कारण शरीर रह जाता है।

फिर एक बार जानेगे, भूमि पर पहला दिन स्थूल शरीर को छोड़ता है। तीसरा दिन प्राणमय शरीर को छोड़ते है और सूक्ष्म शरीर या मनोमय शरीर अपनी सारे मनोकमानाये समाप्त होते ही उसको भुवर्लोक में छोड़ते है। तब कारण शरीर बाकी रह जाता है। और इस कारण शरीर के साथ कारण लोक या जनोलोक पहुॅंचते है।

सूक्ष्म शरीर के साथ वो जनालोक नहीं पहुॅंच सकता। भौतिक शरीर से भुवर्लोक नहीं पहुॅंच सकता, स्थूल शरीर सिर्फ भूलोक मे ही रहता है, सिर्फ सूक्ष्म शरीर भुवर्लोक जा सकता है, वहॉं वो भी छोड़कर कारण शरीर के साथ जनालोक जाते है।

ऐसे ही कुछ लोग पाप और पुण्य भी करते है। वैसे लोग भुवर्लोक मे ऊपर लोक को ले जाते है। वहॉं भी पहले आराम लेते है, क्योंकि वो पाप कर्म किया है। पहला वाला कि तरह वो भी सोचने ही उस कष्ट को अनुभूति करता है। वैसे ही नरक अनुभव करता है, उसी प्रकार सब इच्छाओं को पूरी करता है।

सारे पाप कर्मो के बाद उसको सुवर्लोक लेके जाते है, क्योंकि वो पुण्य कर्मो भी किया है। और जो भी सात्व्कि गुण में रहता है, वो सिर्फ पुण्य काम करते है और इसलिए सुवर्लोक प्राप्ति होता है।

सुवर्लोक मतलब स्वर्ग लोक, बहुत अद्भुत होता है। बहुत सारे रमणीय दृश्यों, पक्षियों का शब्दों, सुन्दर वृक्ष, फूल, नदियॉं बहुत सुन्दर और अहलादित होता है। वहॉं पहुॅंचते आराम लेते है। जो भी मनोकामनाये बाकी है वो सोचते ही सब अनुभव मिल जाती है। वैसे बहुत समय, कुछ लिमिट नहीं है, जितना चाहो उतना रह सकते हो। जब उनका पूरी तरह से मनोकामनायें समाप्त होगा, तब वो मनोमय शरीर छोड़ते है।

भौतिक (स्थूल) शरीर छोड़ने के बाद, प्राणमय शरीर होता है, उसको छोड़ने के बाद मनोमय शरीर रहती है। उसको छोड़ने के बाद कारण शरीर रहता

है। ये शरीर एक से एक सूक्ष्म होता और हल्का भी, जितना सूक्षम हो उतना महान लोक तक पहुँच सकते है। ऐसे ही कारण शरीर के साथ कारण लोक या जनालोक पहुँचते है।

जनालोक बहुत बड़ा है, जितना कोई सोच भी नहीं सकता। वैसे ही पापी लोग भी भुवर्लोक होते ही जनालोक पहुँचते है। वहाँ मास्टर्स जो ऊपर लोकों से आते है, उन्हें कौनसेल्लिंग करते है।

ऊर्ध्व लोक मतलब महालोक, तपोलोक और सत्यलोक जो भी यहाँ रहते है, उन्हें ऊर्ध्व लोक वासी बोलते है। ये लोग जो कारण लोक आते है उन्हें कौन्सिलिंग करते है। उनको जो काम भूलोक में करना, क्या क्या किया करने गये थे, और अपनी जीवन में जो करना था, वो सब छोड़कर क्या क्या नहीं किया और अपना समय बर्वाद करके आया है, जो मौका आपको दिया है, उसको नहीं इस्तेमाल किया, आप बहुत मुर्ख हो- ऐसे सारे प्रश्न करते है।

सब सुनता रहते है, और पूछते है कि अभी आगे क्या करना है। तब वो लोग बोलते है कि आप सब समझते है कि ये लोक के आगे कुछ नहीं है लेकिन इस सृष्टि में उसे भी बढ़िये बढ़िये लोक है। वहाँ तक पहुँचना है। यहाँ मॉटन मछली खाकर पाप करते रहने से अच्छा है। और यहा नरक में रहने से अच्छा ऊपर लोक तक पहुँचने की प्रयत्न करना चाहिए। एक बढ़िया अवसर आप को मिला है। आपको इस शरीर दिया गया है, उससे बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हो, ध्यान साधना कर सकते, किताबे पड़ सकते, सबका भाषण सुन सकते, सेवा कर सकते हो, ये सब कर कर पुण्य कर महान लोक पहुँच सकते हो। ये सब छोड़कर तुम ने सारे बेकार काम किये हो, ये समझाते है उसको।

वैसे जनालोक में सबको, जो पापी है, और पुण्य करने वालों को क्लास लगती है, और भी बोलते है कि आपने पाप के साथ-साथ पुण्य भी किये हो, ठीक है, लेकिन पाप क्यों किया है। अगली बार ऐसे मत करो, वैसे, जो पुण्य काम करके आये है, उन्हें बोलते है कि न केवल पुण्य काम है, उससे भी आगे महान काम है, जितना भी पुण्य करो, फिर वापस भूलोक जाना पड़ता है।

ऊपर लोक तक नहीं पहुँच सकते हो। इसलिए आप को न सिर्फ पुण्य करना, बल्कि मुक्ति कर्मो करना है मतलब जो काम आत्मा को लाभ पहुँचेगा। जो भी आत्मा को ऊपर लोक पहुँच सकते है, वैसे ही काम करना है और भी ध्यान करना है, ज्ञानी लोगों को किताबे पढ़ना है, आत्म ज्ञान सिखाने वालों का क्लास सुनना है, और आत्म सेवाएँ करना है। ये सब करते करते आप को ज्ञान प्राप्ति करना चाहिए। तब ऊपर लोक पहुँच सकते है।

तब उनको समझ में आता है कि इनके अलावा और भी लोक है। और वहाँ जाने से बहुत अच्छा होगा। वो सोचने लगता है, तब उसमें थोड़ा सा बदलाव आता है। लेकिन कुछ लोगों को समझ में नहीं आता है। और कुछ लोग पूछने लगते है कि हमें दुबारा मौका देने के लिए मतलब इसे शरीर दे दीजियेगा। लेकिन कुछ लोग अपनी पुरानी जिन्दगी का सारा दुख को याद कर कर वो वही रहने का निर्णय लेते है, ये लोग वहीं रह जाते है।

यहाँ पर एक विषय याद रखना है, कि सबको अपनी स्वेच्छा है। कोई किसी का जबरदस्ती नहीं होता। इसलिए जिसको यही रहना है, तो रह जाते, और जिसको जाना है वो जाने के लिए तैयार है। और कहते है कि जो भी कहेगें वो पालन करेगें। यहाँ बैठकर क्या करना? तब पूछते है कि क्या क्या करना?

तब जो भी तैयार है, जाने के लिए सब को एक एक कर कमरे में बुलाते है। वो है, आकाशिक रेकॉर्ड्स का कमरा। उसमें बड़ा सा स्क्रीन रहता है। उस पर आपने जो जो कर्म बचपन से लेकर किया है, सब देख सकते है। एक सिनेमा कि तरह।

वो कितना हिंसा किया है, कितने लोगों को बाधा/कष्ट किया है। जितने लोगों को अन्याय किया, रूलाया, सेवा किया, शोशन किया, लाभ किया, सब कुछ दिखता है। सारे कर्मो को दिखाते है। उस कमरे में जाने से पहले बताते है कि आप का सारा कर्मो का छिट्ठा देख सकते हो। तुम जन्म लेना चाहते हो, इसीलिए उनमें से आप को जो अनुभव करना, वो चुन सकते है।। मतलब कुछ पाप और पुण्य कर्मो का।

वैसे ही सब अपना किया हुआ कर्मो को देखता है। याद रखना है, जो भी ज्यादा सा पाप कर्मो किया है, उनके उसी में से चुनना होगा। और पुण्य कर्म बहुत कम होता है तो उनमें से कुछ चुनना है। यहाँ भी आप को समझना है कि कोई भी जबरदस्ती नहीं है। सब कुछ अपनी स्व इच्छा से होता है, सिर्फ जो जो आपने चुना है, उनको ही लेके जा सकते है, जरूरी नहीं है कि सारे पापों को लेना। जो पाप और पुण्य करें है, वो थोड़ा पाप और थोड़ा पुण्य लेते है।

और कुछ लोग सिर्फ पुण्य कर्म किये होगें। वैसे लोग कुछ वही पुण्य कर्मो को चुनते है, और एक या दो अगर है तो पाप कर्मो को भी चुनता है। यहाँ भी आप जानना चाहिए कि कहीं भी जबरदस्ती नहीं है। सब अपनी इच्छा से चुनाव कर सकते है, सारे कर्मो लेने की जरूरत नहीं। जो आप चुनेंगे, वो ही ले सकते है।

देखिए कहीं भी कोई जबरदस्ती नहीं है। जो भी आप चुनेंगे, अपने किये हुए कर्मो से वो ही लेने है। इन कर्मो को प्रारब्ध कर्म कहते है, उनको लेकर पृथ्वी पर आते है और यहाँ उन्हीं को भोगते है और जब कष्ट होता है, हम ईश्वर को निन्दा करते है कि उसने मुझे ऐसे किया वैसे किया। असलियत में हमने खुद चुनकर आये है। जो भी उसने चुना है, वो ही सामने आते है, सहज की बात है अगर ज्यादा पाप किये है, उसी को लेकर आये और उनको भोगने पड़ता । और बाद में रोते है कि ईश्वर ने मेरी किसमत ऐसे क्यों लिखा है?

इसीलिए पत्रीजी कहते है कि “आप का वास्तव को खुद ही सृष्टि कर्ता है”। अभी आपके जीवन में जो भी सुख, दुख या दुर्घटना हुआ, या गंभीर बिमारी और जो कुछ भी, अगर एक पागल जैसे पैदा हुआ या बुद्धिहीन जन्म हुआ, जेल में जाना पड़ा या दुश्मन के हाथों में दर्द झेलना पड़ा या पुलिस के हवाले में हिंसा में पड़ गये, अगर स्त्री है वो वेश्यघर में जाना पड़ा, कुछ स्त्री अपनी पति के हाथ से पिठाई होना या कुछ गृह हिंसा हो जाये, ये सब हमने खुद चुनकर लेकर आये है।

ऐसे हर प्रकार कि हिंसा को झेलते है, और ईश्वर को निन्दा करते है

कि क्यों मुझसे ऐसे किया? सच में ईश्वर है या नहीं का प्रश्न उत्पन्न होता है। और कुछ लोग जिसको रोग हुआ और कष्ट होने वाले लोग कहते है कि मैंने बहुत पूजा किया हूँ, प्रार्थना किया हूँ, और फिर भी मुझे इतना कष्ट मिला, करके रोते है। लेकिन याद रखना ये सब उन्होंने खुद अपनी किया हुआ, पापों से कुछ चुनकर लेकर आये थे। अपनी इच्छा से और कोई जबरदस्ती से नहीं हुआ।

इसलिए रोगी लोग या जिसको कष्ट है, याद रखना चाहिए कि ये सारा जीवन मैं खुद चुना है। और अगर ये समझ रखेंगे, तो धैर्य से उनके मुश्किलों को सामना कर सकेंगे। नहीं तो डर जायेगें, और याद रखना कि, अपने वास्तव के खुद ही मालिक है।

ऊपर लोकों को तरह-तरह लोग जाते है, बहुत पाप किये लोग जाते है, पाप और पुण्य करने वाले जाते है, और सिर्फ पुण्य कर्मो करने वाले भी जाते है। सहज है कि पृथ्वी पर जाने के लिए सोचते है, क्या मुझे पाप झेलने के लिए वापस भूलोक जाना है। अगर जाउँगा तो मेरा जीवन का क्या होगा, ऐसे सोचते है।

अन्त में, ये सोचता है कि मैं कितना देर तक यहाँ रहूँगा? इसलिए मैं जाकर इस बार जीवन को सही तरह जीऊँगा, कि उसी गलतियाँ नहीं करूँगा, पाप नहीं करूँगा, किसी तरह भी कष्ट और नष्ट उठाकर जो चुनी हुई मुश्किलों को पालन करूँगा। अभी से मैं कुछ गलत काम नहीं कर करूँगा और आगे भविष्य को बदल सकूँगा। ऐसे कह कर पृथ्वी पर जनम लेने का तैयार हो जाता है।

लेकिन कुछ ऐसे सोचते है कि अगर फिर से जन्म लूँगा, तो मुझे कष्ट उठाने पड़ेगा और मुश्किलों झेलना पड़ेगा, इससे अच्छा यही रह लेते है, ऐसे लोग यहाँ रह जाते है।

कुछ लोग तो ऐसे सोचते है कि यहाँ रहकर क्या करेंगे? कितना समय तक ऐसे रहेंगें, इसी प्रकार सोचकर कुछ कर्मो को चुनकर अगर ज्यादा पाप ही

किये है, तो उसी में से चुनते है। इन्हीं कर्मो को प्रारब्ध कहते है। आपलोगों ने एक आध्यात्मिक सत्य वीड़ियो देखे होगें, तो वहाँ इन्हीं प्रारूब्ध कर्मो लेकर आपका नाडी मंडल बनाते है। अगर ज्यादा पाप है तो नाडी मंडल अशुद्ध रहेगा और पुणय ज्यादा है तो शुद्ध होगा।

इस वीडियो में हम देख सकते है कि ध्यान करने से जब आपका सोच बंद होगा तब विश्व शक्ति आवाहन होती है और आपका नाडी मंडल शुद्धीकरण होती है।

ये ही नहीं और मास्टर्स आपको चुने हुए कर्मो के हिसाब से एक माँ का कोक चुनते है। उनको गरीब घर में, या पैसे वालों के घर में, या सुन्दर होना या नहीं या काला होना ये सब देखकर आपको इस लोक में प्रवेश करते है।

ऐसे किस धर्म में, जाति में, जगह, स्थान, देश ये सब आपके चुने हुए कर्मो के आधार पर आपको प्रवेश करते है।

देखिए पिछले जन्म में एक पुरूष रूप लिया था और मान ले अपनी बीबी को बहुत तंग किया है तो इस जन्म में स्त्री रूप लेकर एक पुरूष के हाथ मं ऐसी सारे कष्ट को उठाना पड़ेगा। उनके हिसाफ से जन्म होता है।

जब निर्णय हो गया जाने की, और कर्मो के बराबर माँ की कोक नहीं मिल रही है, तो इंतेजार करना पड़ता है।

कुछ लोग इंतेजार करने में इच्छुक नहीं रखते है, क्योंकि तब तक ५००-१००० साल हो चुके होंगे, तो ऐसे कहते है कि हमें थोड़ा समन्वय कीजिए, जैसे मुझे १००० करोड़ों वालों नहीं, लाखों गर्भ में देखिएगा। वैसे सुन्दर सा जन्म होना था, लेकिन गर्भ नहीं मिल रहा है, तब ये लोग थोड़ा समन्वय होकर कम वालों में भी चलेगा, ऐसे परिवार, धर्म, जाति, प्रान्त, देश में राज़ी हो जाते है।

जैसे कि शादी से पहले जब पार्टनर को देखते है, बहुत सारी माँगे होते है, लेकिन जब वक्त गुजरता आता है, और शादी नहीं होती तो उसे अपना शर्ते कम करते है, वैसे ही इधर भी समन्वय हो जाते है। आखिर कर बोलेगें कि कम

से कम एक लड़की या लड़का मिल जाना चाहिए, ऐसे कहकर शादी के लिए तैयार हो जाते है। तब एक लड़की या लड़का मिल जाता है। ऊपर लोक में भी यही हालत है, वहाँ समन्वय कर कर जन्म लेते है, और नीचे पहुँचने के बाद भगवान को पूछते है कि मुझे ऐसे जन्म क्यों दिया?

लेकिन, देखिए ऊपर अपना इच्छा से समन्वय किये है, अगर आप रूक सकते तो जितना रूख सकता है, आपको इजाजत देते है। वहाँ भी आपका ही इच्छा से होता है।

ऐसे तीन प्रकार के होते है, ज्यादा पाप करने वाले कुछ पाप और कुछ पुण्य भी करने वाले और ज्यादा पुण्य करने वाले भी होते है। जब पृथ्वी पर आते है, यही तरह के दिखते है। कुछ लोग बहुत अच्छे होते है, लेकिन कुछ कष्ट आने से सहन कर आगे चलते है, ये कष्ट उनका पाप कर्म है।

ऐसे ही कुछ लोग को कष्ट भी होते है और भोग भी होते है, ये दोनों पाप और पुण्य को लेकर आये है।

ऐसे ही कुछ लोग सिर्फ पुण्य कर्मो लेकर आये है। उनका जीवन बहुत वैभवशाली रहता है, किसी चीज कि कमी नहीं होती। पैसे भी, मकान भी होता, हर चीज रहता है। ऐसे लोग अपनी गर्व के कारण बहुत पाप और गलत काम करते है और लोगों को प्रश्न उठता है कि क्यों ऐसे लोगों का जीवन बढ़िया चलता है?

इस का कारण यही है कि, पूर्व जनम में उसने बहुत अच्छा काम किया है और बहुत पुण्य किया है, लेकिन अभी ऐसे पाप कर रहा है।

तो इसलिए याद रखना है कि हमारी जीवन यहाँ जैसा है, इसका कारण सिर्फ हमारी निर्णयों के आधार पर है।

# सीखने वाले जनम सिखाने वाले जन्म

देखिए जनालोक के ऊपर और भी सुन्दर लोक है, महान लोक है, वे है महालोक, तपोलोक और सत्यलोक।

सहज है कि प्रश्न होना है कि क्या सब लोग जनालोक जाकर वहाँ से फिर भूलोक में आ जाते है?, तो आगे/या ऊपर लोक होगें कैसे? कब जायेंगे? और इसका महत्व क्या है? ये सारे बातों पर थोड़ा सा ज्ञान होना है। नहीं तो सब बेकार है, कुछ फायदा नहीं है।

पापी लोग और पुण्य करने वाले भुवर्लोक, सुवर्लोक जाकर वहाँ से जनालोक पहुँचते है। कितने बार ऐसे चलते रहते है? पक्का है कि कम से कम 300-350 जन्म ऐसे चलते है, क्योंकि जो तमों गुण में और रजोगुण में है वो पाप करेगें, थोड़ा सा पुण्य भी करते है।

हमे पहले कह चुके है कि जो तमोगुण में 100-150 जन्म लेते है, और रजोगुण में 100-150 जनम लेते है। कुल मिलाकर 300 जनम होंगे। जब तक सात्विक गुण में न आये, तब तक पाप और पुण्य नहीं रूकेंगे।

ये रजोगुण और तमोगुण के लोग ऐसे मरते है तो जनालोक और वहाँ से फिर भूलोक पहुँचते है। ऐसे चलता रहता है। सात्विक गुण में आकर भी पहले पहले जन्मों में वो सिर्फ पुण्य कर्म करते है, पाप नहीं करते है, लेकिन जितना भी पुण्य कर्म करो, आप सुवर्लोक तक और वहाँ से जनालोक पहुँच पाते है, तो और ऐसे 50 जन्म कर जायेंगे। लगभग 350 जनम इसी घूमने में चले जाते है, जन्म लेना कुछ करना, मरना, अनुभव लेना, जनालोक पहुँचना और फिर भूलोक वापस आना। ये कम से कम 350 जन्म जनालोक के ऊपर नहीं जाते है। इससे अनुमान लगाना है कि कितना महान होगा, जो पार कर सकता है।

अब पत्रीजी के परिचय के बाद, इस भीमवरम क्लासों में और जूम

क्लासों में भाग लेकर आध्यात्कि त्रिरत्न की पालन कर कर ज्ञान प्राप्ति कर कर, हमें इसको पार करने का अर्हत मिलता है।

इसलिए आप सब लोग अभी जनालोक को पार करना है, तभी आप महान है। जो महान लोग यहाँ सिद्ध किये हे, उनकी सूची में आप भी शामिल होगे। मगर पृथ्वी पर बड़ा बड़ा महान काम करने से आप महान नहीं बन जाते। जब तक आप जनालोक को पार नहीं करते आप महान नही है, क्योंकि जनालोक के बाद महालोक, तपोलोक, और सत्यलोक है। वो सभी बहुत ही महान लोक है। जो भी वहाँ है सब महान महान व्यक्ति है। मामूली सा लेना नहीं है, महात्मा हो, या तपोधनी लोग, या देवता लोग, या जिस जिस को हम महान मानते है, वो सब उन्हीं लोक में है, अगर हम भी उस लोक तक पहुँच पायेगें तो हम भी महान होंगे।

याद रखिए कि जो भी जनालोक के नीचे वाले लोक पहुँचते है, वो सभी सीखने वाले हे, वो सारे जनम सीखने वाले जन्म है।

लेकिन जनालोक के ऊपर वाले लोक सब सिखाने वाले है, वो सारे जनम सिखाने वाले जन्म होते है।

इसीलिए सिर्फ यही घूम घूमने से कुछ फायदा नहीं है। याद रखिए जो तमोगुण में है, वो अपनी शरीर को ज्यादा प्रामुख्य देता है। जैसे कुंभकर्ण, हर वक्त सिर्फ खाना, पीना, सोना बस उसके अलावा कुछ नहीं। क्या खाना क्या पीना, कितना खाना, कितना पीना इसके अलावा कुछ सोचते नहीं। अपने पड़ोसी के बारे में भी नहीं सोचते है। हर वक्त अपनी शरीर का लाभ लेने में ही ध्यान रखता है। कहाँ मस्ती करना है, सुख रहना है, जो भी दिखा, खाना है। न इनको मालूम, क्या नहीं खाना, सिर्फ खाना ही खाना, बकरी हो, मुर्गा हो, हर वक्त अपना सेहत के लाभ में ही उनका समय गुजर जाता है। ऐसे तमोगुण 100-150 जन्म हो जाते है।

इसके बाद धीरे-धीरे इसमें थोड़ा सा बदलाव आकर तमोगुण से रजोगुण

में आते है। यहाँ वे मनोस्थिति में रहते है, जैसे मुझे प्रेसिडेंट बनना है, बास बनना है। कलेक्टर बनना हे, मैं पुरूष हूँ, मैं स्त्री हूँ, मेरा ये धर्म है, मेरा ये जाति है।

मुझे सबसे महान होना है, सब मेरे ही बात मानना है, ऐसे कहते है। ये सब रजोगुण के लक्षण है। जो मनोस्थिति में है। अपनी इच्छाओं को और धन प्राप्ति में प्रामुख्यता रखते है। सबसे धनिक बनना और सबके ऊपर राज करना, जैसे रावनासुर ऐसी सोच रखते है। ऐसे रजोगुण में १५० जन्म तक हो जाते है।

यहाँ तक ये लोग सिर्फ शरीर और मन कि अवस्था में रहते है। ये सब भुवर्लोक होकर, वहाँ से जनालोक और वहाँ से फिर वापस भूलोक में आते रहते है। ऐसे कर-कर 300 जन्म होने के बाद, वो वहाँ से निकलकर सात्विक गुण में आ जाते है।

पत्रीजी कहते है कि, उतना जन्म लेने कि जरूरत नहीं है, उनके अपनी कठोर परिश्रम या कृषि के ऊपर आधारित है।

सात्विक गुण में अपने मन का शुद्धीकरण होता है और अच्छा बनता है। इसलिए वो कुछ पाप या गलतियाँ नही करते हैं। जितना हो सकता, उतना अच्छा काम करते हैं। लोक कल्याण के काम करते हैं। मतलब पुण्य करते हैं। ये लोग भुवर्लोक नहीं जायेंगे लेकिन सुवर्लोक पहुँचते हैं और वहाँ भोगते हैं। सुवर्लोक बहुत ही बड़ा है और अद्भुत है, भागवद् गीता में कहा है-

**ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ।**

**एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते ।। (9-21)**

तात्पर्य :- लोगों को अपने पुण्यों के हिसाफ से विशाल सुवर्लोक जाकर, भोगकर खतम होने पर फिर भूलोक पहुँचते हैं। ये तीनों गुण वाले संसार कि चक्र में घूमते है। मतलब जो पुण्य करते है उनका भी जनालोक पार करने का अर्हत नहीं है। याद रखिए कि हमें पण्डित लोग बताते है कि पुण्य करो और

मोक्ष पायेंगे। हम तो अभी जनालोक ही नहीं पार कर सकते तो कहा से मोक्ष पायेंगे। मोक्ष पाना है तो सत्य लोक पहुँचना है। बहुत लोग को समझ नहीं आता। वो कहते है कि मैं बहुत पुण्य कर रहा हूँ। सच में पुण्य करना कोई महान काम है क्या? इसीलिए पत्रीजी कहते है आप लोग को न पुण्य चाहिए ना पाप चाहिए, दोनों को छोड़ना है और आत्म कर्मो, मतलब मोक्ष कर्म करना है। वो ही तुम्हें मोक्ष प्राप्त करवायेगा। मुझे भी पहले पहले बार सन्देह आया था कि ये पुण्य कर्मो मना कर रहा है, तो बिना अच्छा काम करने से कैसे होगा? वो सन्देह मुझमें था।

बाद में मुझे समझ आया। क्योंकि कोई भी भूलोक में शाश्वत नहीं रहेगें। कुछ समय बाद शरीर छोड़ना है, स्त्री हो या पुरूष। वो कर्म के हिसाफ से वो लोक पहुँचते है। बहुत सारे पुण्य करने वालें अपने आपको समझ बैठते है कि वो महान लोक तक पहुँच जायेगें। लेकिन सुवर्लोक जाने के बाद, जनालोक ही पहुँचते है। वहाँ पर ऊपर के तीन लोंकों के मास्टर्स आकर यहाँ उन आत्माओं को कौन्सिलिंग देते है।

मास्टर्स कहते है कि भैया, आप समझ रहे है कि आप बहुत महान काम किए है और बहुत महान स्थिति पहुँच गये होगें, लेकिन उससे आप ऊपर लोक नहीं पहुँच पायेंगे। आप ने दान किया, सेवा किया, उसके लिए आप फिर भूलोक जाकर भोग कर, अपनी अच्छे कर्मो के हिसाफ से, उसके अलावा कुछ नहीं होगा, ऐसे कहते है, उन्हें।

मगर ऊपर और भी लोक है। आप को उधर पहुँचना है। अभी आप हमें देख रहा है ना, हम वहीं के रहने वाले है। हमारी तरह आप को ऊपर आना है। तो हम आप को क्या क्या करना है, तुम्हें हम सिखा रहे है। क्योंकि आप भी हमारे तरह होना चाहिए। आप समझ रहे है कि आपने बहुत पुण्य किये है, फिर भी आप को भूर्लोक जाना ही तो है। लेकिन ऊपर जाने वाले ही महान होते है। जैसे हमारे तरह तरक्की करने वालें ही महान है। इसीलिए आप लोग

भी ऊपर जाने के लिए प्रयत्न करना है। देखिए आप सीख रहे हो और हम सिखा रहे है। हमे बहुत कुछ मालूम है, आपको कुछ नहीं मालूम।

तो ऊपर लोक पहुँचना है तो क्या करना। अगर अपने आप सिर्फ शरीर समझ कर बैठेगें तो कुछ भी नहीं होने वाला है। जब तक शरीर ही समझेगा तब तक जनालोक तक हीं पहुँच पायेंगे।

इसीलिए आपको आत्मा के बारे में अवगाहन होना चाहिए, अगर ये अवगाहन नहीं है, तो कभी भी जनालोक नहीं पार कर सकेंगे। भूलोक में करोड़पति लोग ये समझकर बैठते है कि अपने आप बहुत महान काम किया है लेकिन वो सबको भूलोक  में ही छोड़कर आना पड़ता है। जितना भी कमा लो आप को सब छोड़कर भुवर्लोक आना है। क्योंकि उसको कमाने में बहुत पाप किये होगें, और भुवर्लोक नहीं तो कहाँ जायेगा? ये कहते है। और कुछ लोग मैं CM बनूँगा, PM बनूँगा, मेरे से बड़ा कौन है, ऐसे घमण्ड होकर अंधकार में रहकर सब पाप कर्म करते है और गलतियाँ करते है। इतना पाप कर्मो कर कर सुवर्लोक भी पहुँचने का अर्हत नहीं मिल पायेगा।

ऐसे लोग भुवर्लोक में रहकर वापस भूलोक पहुँचते है, पूर्व में CM हो या कुछ भी हो, अपने पापों के हिसाफ से इस जन्म लेना पड़ता है। हो सकत गरीब के घर में, या भिखारी या तो जिस तरह दूसरों को कष्ट किया, वो सब भोगने के लिए वैसे जन्म लेना पड़ता है। तो उतना महान आदमी का क्या हुआ? जानेंगे हो तो आश्चर्य होगा।

बहुत लोग समझते है कि जब इतना महान पद मिलने के बाद भूलोक में मेरा क्या काम रहेगा? वो अपने आप को बहुत बड़ा समझते है कि, मैंने अपने से जो करना था उससे भी ज्यादा किया हूँ। कोई दूसरा 10 भवन, 20 भवन बनाते है, और पूछता है, किसने ऐसे बनाया, मेरा घर देखो, महल की तरह है, कहकर अपने आप को बड़ा समझते है।

लेकिन याद रखना जितना भी भवन या महल बनाओं आप भुवर्लोक

ही पहुँचेगें और सुवर्लोक का भी प्रवेष नहीं मिलने वाला है। अपने आप को बहुत बड़ा समझकर बैठता है। लेकिन यहाँ भूलोक में उसे देखकर भाग्यशाली समझते है कि, ये आदमी भाग्यशाली है, कितना कमाया है, हम ही है, बदनसीव वाले है, हमारे पास कुछ नहीं है।

लेकिन आपके पास कुछ हो न हो, धन, या होदा/स्थाई, नौकरी आप ध्यान कीजिए, ज्ञान प्राप्ति करीये जैसे पत्रीजी ने कहा है। आप किताबें पढ़िए और जानो क्या काम करना, नहीं करना। उसी ज्ञान से जीवन बिताइए, किस प्रामुख्य देना किस को नहीं - अगर ऐसा करेगें तो सुवर्लोक नहीं आप जनालोक पार करेंगे।

इसलिए जिस को प्रापंचिक विषयों पर लगन है, वो लोग जनालोक से वापस भूलोक आयेंगे और जिसको आत्म पर लगान है वो जनालोक पार करने का अर्हत पाते है। इसलिए बड़े लोगों का कहना है कि सब को विषय विरक्ति और आत्म आशक्ति होना चाहिए।

इसीलिए कम से कम 50% तक आत्म के बारे में सोचकर जीयेंगे, आत्म संबंधित कर्मो करेंगे, साधाना करेंगे, आत्म ज्ञान प्राप्त करेंगे तो जनालोक पार सकेंगे।

इसलिए सिर्फ भूलोक आना, जाना कुछ करना, जीवन बिताना और शरीर छोड़कर जाना - ये कोई महान काम नहीं है। जो कुछ भी हो अगर जनालोक पार कर सकते है, शरीर छोडने के बाद, तब भूलोक में बहुत कुछ हासिल करने समान है उनको महान कहलायेगा।

एक प्रकार से कह सकते है कि 350 जनम पार करने के बाद ही इसे हासिल कर सकते है। अगर आप हासिल करेगें तो करोड़ो लोगों से महान होंगे, आप स्त्री हो या पुरूष, धनवान या गरीब, पद हो या न हो, नौकरी हो या न हो, आप ही महान होगा।

क्योंकि महानता भूलोक पर नहीं, असली महानता ऊपर जाने वाले ही

महान है। इसलिए भूलोक में जितना भी बड़ा हो, लेकिन ऊपर जाकर महान लोगों से सीखना है और हम भी सिखाने वाली स्थाई पहुँचना है। न कि सीखने वाले। ये सब बाते कैसे मालूम होगा? जब आप मरने के बाद का जीवन के बारे में जानेगें।

सहज है कि जो सात्विक गुण में आने के बाद ३ स्थाई होंगे। वो है शुद्धत्व मतलब मन शुद्धीकरण होना है। इसके बाद परिशुद्धीकरण होना है, मतलब बहुत शुद्धी होना है।

इसके बाद महापरिशुद्धीकरण, मतलब बहुत-बहुत शुद्धीकरण होना चाहिए। इसी को पत्रीजी "शुद्धसात्विक" कहते है। ये लोग भूलोक पर महान कार्य करते है, और सेवा करते है। और वैसे लोगों को महात्मा कहलाते है। सिर्फ उनलोग जनलोक पार कर कर महालोक पहुँचते है।

हमें यहाँ आने का अवसर मिला, फिर ऊपर जायेगें। अगर इधर लाभ कमाना है तो ज्यादा साधना करना है। मन को बहुत शुद्धीकरण होना है। और हमारा काम भी अलग होगें, आपका प्रामुख्यता बदलेंगे, आपका प्रवर्तन भी बदल जायेगा, सब कुछ बदल जायेगा।

इसलिए सब लोग "श्वास पर ध्यान" करना चाहिए, सात्विक आहार लेना है, और भीमवरम क्लास में आना है, ZOOM में भाग लेना है, और ज्ञान प्राप्ति करना है, मन की शुद्धीकरण होगा।

जानिए, जिसने शरीर को प्रामुख्यता दिया वो अज्ञानी है, और जो आत्मा को प्रामुखयता देता है, वो ज्ञानी है। ज्ञानी लोग ध्यान साधना ज्यादा करते है। याद रखना है कि आत्मा की जो प्रामुख्यता देता है, उनको सारे लाभ हीं लाभ होता और जो शरीर को प्रामुख्यता देता है, उसको सिर्फ देह लाभ ही मिलने वाला है और बाकी कुछ नहीं।

# जनालोक पार करने के लिए क्या करना?

इसे पहले बता चुके है कि जनालोक में कौन्सिलिंग होता है। वहाँ सब को अच्छी तरह समझ आता है, क्योंकि वहाँ बोलने वाले मास्टर्स ऊपर लोकों से, मतलब महालोक, तपोलोक और सत्यलोक के होते है।

वो कहते है, भैया आप पृथ्वी पर जाकर हर वक्त सिर्फ उस मुर्गी पर या सुअर पर दृष्टि रखते है। और ज्यादा सोचा नहीं था?

जब तक भूलोक में रहा आप अपने आप को शरीर ही समझ कर बैठा। अब शरीर है क्या? मतलब नहीं है ना, अभी सिर्फ आत्मा है। आत्मा ही इस लोक तक पहुँचा, मतलब तुम आत्मा ही हो। इसके बारे में कभी सोचा? ऐसे पूछते है।

और भी पूछते है। आप बहुत जनम से यहाँ आकर वापस जा रहे है। सिर्फ यही काम है क्या? आप को और सारे विषयों को जानना है। इस लोक के ऊपर और भी लोक है। वहीं से आये है हम। अगर हम आपको सिखा रहे है तो हमे ज्ञान प्राप्ति किये है, पृथ्वी पर महान काम किये है। उसके ऊपर लोकों के बारे में आपको पता नहीं है और मालूम हीं नहीं चाहता। इसलिए आप ये लोक के ऊपर लोक जाने का प्रयत्न करना चाहिए। अभी तक बहुत जन्म लिये हो, आप भूलोक जा रहे हो और वापस उसी में जा रहे हो, किस लिए? आपको उच्च स्थिति पहुँचना है, महान बनना है।

अभी तुम्हें इस जनालोक से ऊपर लोक पहुँचने कि प्रयत्न करना है। कैसे? पृथ्वी पर जो जो काम करना है, उसे बताते है। मुख्य है वो ध्यान साधना को, ज्ञान प्राप्ति करेंगे और भी विषय बताते है। तब वो भूलोक जाने का निर्णय लेता है।

तब वो उनसे पूछता है कि अगर वह भूलोक जाना है, उन्हें क्या-क्या करना है। तब मास्टर्स कहते है कि अगर पृथ्वी/भूलोक जाना है तो आपको आपका किया हुआ कुछ कर्मो का अनुभव करना पड़ेगा और उन्हें आकाशिक

रेकार्डस कमरे में लेके जाते है।

इस कमरे में अपना किया हुआ सारे कर्मो को एक सिनेमा जैसा देखता है, तब आश्चर्य होता है कि उन्होंने इतने पाप किया है? तब सोचता है कि अगर मुझे ये सब लेकर भूलोक जाउँगा, तो कितना कष्ट का अनुभव करना पड़ेगा? अब कैसे होगा? ऐसे संशय में पड़ता है। तब कम से कम इस बार कुछ भी पाप नहीं कर कर ध्यान कर कर ज्ञान प्राप्ति करने का निर्णय लेता है।

तब कुछ कर्मो को चुनता है और भूलोक में आता है। और आने के बाद जो भी ऊपर सोचा, समझा भूल जाता है। फिर वो ही पुराना गाना, पुरानी आदते, वासन के हिसाब से ही काम करते है। पाप करते है। इसके साथ-साथ समाज और अपना कुटुम्ब प्रभाव में आता है। उन सब को देखकर उनकी तरह बन जाता है। सारे पाप और गलतियाँ करते है, जीव हिंसा करते है और मांस सेवन करते है।

साथ में अपने आप को शरीर समझ कर उसी के लिए कष्ट करता है। हर समय शरीर के सुख के बारे में सोचता है। शरीर की सुन्दरीकरण, स्वास्थ्य अलंकारण उन्हीं चीजों में निमग्न होता है। जो नहीं खाना चाहिए, उसी को खाते है। इच्छाओं पानें के लिए पाप करते है और फिर ऊपर पहुँचता है।

फिर वहाँ डाँट पड़ता है। इसी को शंकराचार्य जी ने कहा है कि पुनरपि जननं पुनरपि मरनं। यही होता है। तो ये सब जानने कि क्या जरूरत है? पत्रीजी कहते है कि -

जैसे ऊपर कौन्सिलिंग होता है, यहाँ पृथ्वी पर भी हमारे साथ वही हो रहा है। अभी पत्रीजी के द्वारा बहुत लोगों को ये सारी विषयों के बारे में जानकारी हुई है। और वो दूसरों को बता रहे है। एक तरह हम भी आपको कौन्सिलिंग ही दे रहे है।

इसे हमें यहीं, कह रहे है कि जो काम अभी तुम कर रहे हो, वो नहीं बल्कि जानों, क्या करना चाहिए और उसी प्रकार जीना चाहिए, और जो जो नहीं करना चाहिए।

इसलिए जान लो कि ऊपर जाने के बाद जितना भी ज्ञान हो, वहाँ आपका ध्यान करने के लिए शरीर नहीं होगा। ज्ञान प्राप्ति नहीं कर सकते हो। और जो जानते हो, इसका अनुभव करने को भी नहीं होगा। लेकिन जब हम पृथ्वी पर आते है और जानेगें तब हम ध्यान कर सकते है, क्योंकि शरीर है। और पुस्तक भी पढ़ सकते है। सज्जन सांगत्य भी कर सकते है और ज्ञान प्राप्त कर सकते है। और जो भी अनुभव करना है वो भी कर सकते हो।

विचित्र की बात ये है कि ऊपर जो भी हमने सोचा था, सब यहाँ याद नहीं रहता। सब भूल जाते है। लेकिन पत्रीजी जैसे गुरू कृपा से हमे जो करना या नहीं करना जाने है। तब हम उनका प्रवचनों सुनकर सही रास्ते पर चलते है और ऊपर जाने के बाद हमें मास्टर्स प्रशंसा करते है कि आप ने बहुत अच्छा काम किया, कष्ट सहना है।

आपने जो भी काम भूलोक में करना था वो सब कर कर आया है। आप भाग्यशाली हो, आप और भी आगे ऊपर लोक जा सकते हो। इसलिए याद रखना कि हर बार जनालोक से वापस भूलोक जाना नहीं आप को जनालोक को पार करना है। तब वो महान है। जो भी भूलोक आता वो जनालोक तो पहुंचता ही है, लेकिन असली महान वो होता है जो जनालोक पार करता है।

आप स्त्री हो या पुरूष, धनी या गरीब, कोई भी जाति, धर्म या कोई भी हो, याद रखना कि आप आत्मा है न कि शरीर। उस अवगाहन से जीना चाहिए। ये भी नही, कि मै सामान्य हूँ, सामान्य धर्म से हूँ और सामान्य परिवार का हूँ ये सब बातें छोडना है। आप सिर्फ आत्मा है। आप बूढ़ा हो या जवान, सफेद हो या काला, सुन्दर हो या न हो, याद रखना कि आप आत्मा है, हर वक्त।

इसलिए आपको बड़ी से बड़ी अक्षर में अपने घर में या कमरे में, जहा हर वक्त दिखता है, वहाँ पर लिखो कि “मैं आत्मा हूँ”, क्योंकि हम माया में रहकर भूल भी सकते है। जब भी हम देखते है, याद आता है कि वह आत्मा

है।

क्योंकि अगर तुम शरीर समझकर होंगे तो आपका काम काज अलग होंगे, अगर आत्मा समझकर होंगे तो आपको जो करना होगा वो काम अलग होंगे। इसलिए बार-बार याद रखना है कि तुम आत्मा हो। इस विषय के बारे आपने सुना है, जाना है, वो आपको अच्छी तरह से धारण करना है। अभी तक जो सुना वो अलग है और आगे जो जानेंगे वो और गहराई में बताउँगा। ये सब कह रहा हूँ कि आप लोग जनालोक पार कर सकेंगे।

क्योंकि "मौत के बाद का जीवन" में बहुत सारे विषय है। बहुत सोचना है। जानना है। सिर्फ मरना है, ऊपर जाना, वापस आना है, इससे कोई फायदा नहीं है। इसलिए ये सारे बातों पर विचारण कीजिए।

पृथ्वी पर स्त्री हो या पुरूष, जब भी शरीर को छोड़ते, सब आत्मा ही है। जब तक शरीर है, तबी हम स्त्री या पुरूष, या ये जाति वो जाति या ये धर्म वो धर्म, ये देश या वो देश होता है।

इसलिए शरीर के बारे में सोचना नहीं। हम आत्मा है तो आत्मा के बारे में सोचना है। भूलोक हमारा नहीं है। भूलोक हमारे लिए परलोक है। परलोक ही हमारे स्वलोक है। आत्मा यहाँ नहीं, वही रहता है।

हम भूलोक से वहाँ नहीं जा रहे है, हम ऊपर लोक से यहाँ आये है, पहले ये बात जानना जरूरी है।

क्योंकि हर एक आत्मा कुछ अनुभव पाने के लिए, और उनके द्वारा कुछ सीखने के लिए, ध्यान साधन केलिए, कुछ ज्ञान प्राप्त करने के लिए यहाँ भूलोक आये है। ये हमारा स्थाई जगह नहीं है। और जो भी यहाँ हमारे पास है, वो सब हमारा नहीं है। और रिश्तेदार भी हमारा अपना नहीं है। ये सब यहाँ जब तक है, तबतक केलिए है। जिस वक्त हम भूलोक छोड़ते है, उसी वक्त किसी चीज से हमें संबंध नहीं है। सब कुछ छोड़कर ऊपर जाना है। ये विषय हर वक्त याद रखना चाहिए।

इसलिए परलोक ही हमारा स्वलोक है। हमारा उन्नति महानता सब

ऊपर ही होता है। पृथ्वी पर महानता जो भी हो आप इधर, वो कुछ नहीं है।

क्योंकि समझिये कितने साल रहेंगे पृथ्वी पर? सोचिये? कितने सारे CM चले गयें, या PM चले गयें?

इसलिए PM या CM होने से महानता नहीं होता है। क्योंकि कुछ सालों के लिए है। उसको देखकर खुश होने का कुछ नहीं। जो ऊपर लोक में महानता मिलेगा वो ही शाश्वत है, उसे पाना है। आखिर कर आप सुवर्लोक (स्वर्ग लोक) भी पहुँचने से बड़ा फायदा नहीं।

हमारे पण्डित लोग कहते है कि पुण्य कर कर स्वर्ग लोक प्राप्त करना है। लेकिन स्वर्गलोक भी जनालोक से नीचे है।

इसलिए उसको पार करना है। अगर जनालोक के ऊपर कोई भी लोक पहुँचते, आप बड़ा महान है। क्योंकि कोई जरूरत नहीं है कि सीधा सत्य लोक पहुँचे। अगर जनालोक पार कर महालोक भी पहुँचे तो आप पृथ्वी पर बहुत मेहनत किये है और बहुत कृषि किये है। और बहुत हासिल किये है। इसलिए जो भी पृथ्वी पर मेहनत करते है, उसी से जनालोक पार करने कि स्थिति पा सकते है।

जो कुछ भी हो अगर जनालोक पार करेंगे, तभी आपको मोक्ष की प्राप्त करने का मौका मिल सकता है। क्योंकि सत्य लोक पहुँचने से ही मोक्ष मिलता है। भागवत गीता में कहा गया है -

**आब्र्ह्माभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।**
**मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ।।** (8.16)

तात्पर्य - अर्जुना - ब्र्हमलोक मतलब तपोलोक भी पहुँचते हो, तब भी आपको भूलोक जाकर जनम लेना पड़ता है। लेकिन सत्यलोक जिसमें मैं रहता अगर आप पहुँचे तो वापस जनम लेने की जरूरत नहीं है।

बहुत लोग ध्यान में आकर कुछ ही दिनों में तीसरी ऑंख खुलने की आशा रखते है, लेकिन तीसरी ऑंख पाना इतना आसान है क्या? सिर्फ कुछ दिखने से अपने आप को 3rd Eye Master समझते है, लेकिन तीसरी ऑंख

प्रापत करने केलिए कितना कष्ट करना है? कृषि करना है, उन्नति करना है, इतना मामूली नहीं है?

इसलिए अब हम जनालोक पार करने के लिए क्या क्या करना चाहिए? जोनेंगे।

बहुत लोग ध्यान को तपस्या मानकर, समझते है कि वो तपस्या करने से सीधा तपोलोक पहुँचेंगे।

लेकिन जानिए, सिर्फ ध्यान करने से आप तपालोक प्राप्ति नहीं होगी।

क्योंकि 90 प्रतिशत ध्यान करने वालों में सिर्फ शारीरिक लाभों के लिए यानि कुछ अनारोग ठीक करने केलिए या कुछ मनोकामनों पूरी करने केलिए, अनुभवपाने केलिए कर रहे है। समझते है कि ये ही बहुत महान कार्य है। और समझते है कि बहुत उन्नति हो चुका है। बहुत लोगों को अपनी परिवार के समस्याओं होते है, बहुत होते है, उनके जरूरत बहुत होते है। जब ध्यान करेंगे तब बहुत लाभ पायेंगे, इच्छायें पूरी होती है। और सारी मुश्किलों दूर हो जायेंगे, ऐसे सोचकर ध्यान करते है। बिना कुछ सोचकर नहीं करते है। तो उन्होंने इच्छायें से अगर ध्यान करेंगे तो कुछ फायदा नहीं है, क्योंकि वे जनालोक नहीं पार करेंगे।

क्योंकि वो आत्मा के लाभ के लिए ध्यान नहीं किए है। समय सिर्फ इच्छा पूरी करने केलिए या संकल्प ध्यान करते है। बहुत मास्टर्स भी ऐसे सलाह देते है कि आप संकल्प रखकर ध्यान करो और सब कुछ ठीक हो जायेगा।

सोचना है कि आप आत्मा है और यहाँ किस लिये आये हो? शारीरिक लाभों के लिए या आत्म उन्नति केलिए? अगर हर समय सिर्फ शारीरिक लाभ केलिए सोचते तो आत्म उन्नति के बारे में कब सोचेगें? जनालोक को कब पार करेंगे? कभी आत्मा उन्नति केलिए सोचते थे कि नहीं? हर समय सिर्फ शरीर केलिए नहीं, आत्मा के बारे में सोचना है। ध्यान कीजिए ज्ञानी लोगों का किताबें पढ़ना, ज्ञानी लोगों के सांगत्य करना और ध्यान मार्ग में सेवा करना चाहिए, ज्ञान प्राप्ति करना। पत्रीजी कहते है "सिर्फ ध्यान से ज्ञान", तभी

आत्मा को उन्नति होता और जनालोक पार कर सकता है।

लेकिन कुछ मास्टर्स कहते है कि जब रोगी है, तब कैसे ध्यान कर सकते है? सोचिए, पृथ्वी पर सारे रोगी लोग ध्यान करने का स्थिति में नहीं है क्या? उनको आत्मा के बारे में सोचने का स्थिति में नहीं है क्या?, कुछ लोग जनालोक और मोक्ष प्राप्ति करने केलिए, आकांक्षा नहीं रखते है क्या? क्यों नहीं होंगे, इन्हीं लोगों को ये सब बता रहे हैं।

और कुछ लोग ये भी कहते है कि अगर हम नहीं बतायेंगे कि रोग ठीक हो जायेगा, तो नया लोग कैसे आयेंगे। ध्यान करने के लिए? और बहस करते हैं कि सब ध्यान से अपने स्वास्थ्य ठीक करने को ही आते है।

लेकिन ध्यान में आने के बाद 1 साल, 3 साल, 5 साल होने के बाद भी शरीर और उसका स्वास्थ्य के बारे में अगर सोचेंगे, तब आत्मा के बारे में कब सोचेंगे? आत्म ज्ञान कब प्राप्त करेंगे? असलियत में आप आत्मा होकर पृथ्वी पर आया क्यों? शरीर को ठीक करने आया है क्या?

सोचिए, आखिर बीमारी क्यों आता है? आत्म ज्ञान न होने से न? इसलिए अगर रोग नहीं होना तो पहले आपको आत्म ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, तो मेहनत करना। इसलिए मैं कहता हूँ कि जो भी संकल्पों के साथ ध्यान करते है, वो कभी जनालोक नहीं पार कर सकते है। लेकिन जब आप निश्चय करेंगें कि किसी भी हालत में मैं जनालोक पार करूँगा, तब बिना किसी संकल्प से "श्वास पर ध्यान" करता है, ज्ञान प्राप्त करता है, तभी आप जनालोक पार करेंगे।

बहुत लोंगों को जनालोक के बारे में ही पता नहीं। और फिर भी उन्हें मोक्ष पाने का इच्छुक रखते है। मोक्ष का अर्थ भी मालूम नहीं होता और उस शब्द को उपयोग करते है।

शास्त्रों में एक वाक्य है कि "बिना कामना, मोक्ष नहीं" कामना मतलब इच्छुक। कौनसा कामना होना चाहिए, मुझे मोक्ष प्राप्ति होने का कामना रखना है। ऐसे कामना नहीं है तो वो मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकता। सिर्फ सोचने से कुछ

नहीं होता। उसको पाने का तीव्र आकांक्षा या वांचना, जिज्ञासा, आशक्ति और तपन होना चाहिए। ऐसे जिद्दी लोगों ही प्राप्त कर सकता है।

पत्रीजी कहते है कि "यद्भावम तद्भवति"।

मतलब आपका भावना जैसा होता है, वो ही प्राप्त कर लेगा। पत्रीजी का परिचय होने के बाद मुझे समझ आया कि "मैं शरीर नहीं हूँ, बल्कि आत्मा हूँ"। ये सारे धन दौलत कुछ भी मेरे काम के नहीं। आत्मा उन्नति के लिए, मुझे सिर्फ आत्मज्ञान चाहिए।

मुझे ये समझ में आने के बाद, कि मैं आत्मा हूँ, मैंने सब कुछ छोड़कर इस स्थिति तक पहुँचा हूँ। इस से पहले मैं सब की तरह था।

कुछ ही दिन पहले PMC में पत्रीजी ने "यूत फर ट्रूत" करके युवकों का प्रश्न समाधान का कार्यक्रम किया था। उसमें एक युवक ने पूछा था कि इस स्थाई तक पहुँचने केलिए कितने जन्म लेना है, या एक ही जन्म में पहुंच सकते है?

तब पत्रीजी ने हँसते हँसते कहा कि ये सब आपका कृषि के ऊपर आधार करता है। अगर मेरे जैसे कृषि करेंगे तो एक ही जन्म में पहुँच सकते हो। अगर तुम में इतना दृढ़शक्ति नहीं है तो कुछ जनम लेना पड़ेगा। और पूछा कि मैंने 50 हजार किताबें पढ़ चुका हूँ, आपने कितने पढ़ लिया? और कहा है कि मैं अपनी पूरी समय दे रहा हूँ, आप कितना समय दे रहे हो? इसलिए मेरी तरह आप कष्ट करेंगे, तो आप भी मेरे जैसे, इसी जन्म में, हो सकते हैं।

और कहा मैंने लाखों लोगों को ध्यान सिखाया, आपने कितने लोगों को सिखाया? आप ही देख लो।

लेकिन कुछ लोग ज़ूम में सिर्फ 25 या 50 लोगों को बिठा-बिठाकर सालों तक क्लास करते है। क्या वो लोग पत्रीजी जैसे हो जायेंगे क्या?

सही में उन लोगों को दिमाग है क्या? कुछ समय बिताने के लिए वो आकर बैठते है, और कुछ लोग बिठाते है। इतने सालों से और कोई नहीं क्या? सोचिए ज़रा?

इसलिए अगर आपको जनालोक पार करना है, ये बात समझ में आया, तो उसके हिसाफ से कष्ट करना है। ऊपर लोक पहुँच सकते और मोक्ष भी प्राप्त कर सकते है। मतलब सत्य लोक पहुँचेंगे। इस केलिए दढ़निश्चय होना चाहिए। याद रखना अगर जनालोक पार करना है, तो कठोर ध्यान साधना करना है, जैसे कि कुछ महीने या सालों तक कठोर परिश्रम करना है। तब हासिल होगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि सिर्फ 2 घंटे काफी नहीं है, और ज्यादा करना है। उन्नति चाहिए तो महान स्थिति प्राप्त करना है। मतलब मन शुद्ध करना है। साथ साथ आहार का नियम पालन करना है। और निस्वार्थ सेवा करना है। किसी और लोगों के बारे में ज्यादा सोचना नहीं। सब सुखी रहना है और सबको लाभ पाना है - ऐसे सोच रखना है।

ऐसे लोगों में महात्मा गांधी, मदर टेरेसा, जैसे ही नहीं और भी बहुत लोग है। वो लोग अपना जीवन दूसरों को समर्पित कर दिय। ऐसे लोग महात्मा कहलाते हैं। ये लोग महालोक पहुँचते है। मतलब जनालोक पार कर चुके है।

इसलिए वैसे ही लोग जैसे महात्मा गांधी, और मदर टेरेसा अपनी स्वार्थ छोड़कर दुसरों की भलाई मे जीवन बिताये है। वैसे ही लोग महालोक पहुँचते है।

याद रखिए कि अगर कोई भी वहाँ तक नहीं रूक  कर मन को महा परिशुद्ध करेंगे, पत्रीजी उन्हें शुद्ध सत्विक लोग कहते है, तो वो निर्गुण स्थिति के पास में हैं।

तब उनका मन का प्रभाव पूरी तरह से हट जाता है। जैसे कि वो है या नहीं। उस स्थिति में रहता है। ये शुद्ध सात्विक स्थिति है। उसे रामायण में हनुमान जी का उदाहरण ले सकते है। इस स्थिति में उनके सिद्धियों और शक्तियाँ आते हैं और बहुत लाभ भी होते है।

ऐसे लोगों को तीसरी आँख होती है। ये सब इस स्थाई पर मिलते है, न कि सिर्फ ध्यान में बैठने से।

देखिए हनुमान जी ने, अपनी दूसरी साल से ही ध्यान किये है, ऐसे

लोगों को ध्यान के अलावा कुछ नहीं है। सिर्फ अनन्त तपन से ध्यानकरते है, उसी को तपस्या कहते है।

जो भी ऐसे तपस्या करते है, उनको कुछ इच्छुक नहीं होते है, संकल्प नहीं होते। आशा नही, और स्वार्थ नहीं है। सिर्फ ध्यान, तपस्या ही उनका काम है। ऐसे कठोर तपन से सालों तक साधना करने के बाद वो शरीर छोड़ने के बाद तपोलोक पहुँचते है।

शुद्ध सात्विक मतलब महा परिशुद्ध स्थिति। ये लोग सत्य लोक नहीं पहुँचते है, लेकिन कठोर साधना और कष्ट करते है, दृढ़निश्चय से ध्यान करते है।

अन्दर का इस कठोर तपन कि पैदा करने के लिए (भीमवरम में) ३ दिवसीस क्लास शुरू किये है। ध्यान एक घंटा करना और उठ जाना नहीं। यहाँ पर ३-४ घंटे एक ही दफा बैठ सकते हो। यहाँ निशब्द ध्यान होता है, जैसे पत्रीजी ने कहा "श्वास कर ध्यान" सही ध्यान करवाते हैं। इसलिए परिणाम अच्छे होते है।

बहुत लोग गईडिंग करवाते है। गईडिंग से मन काम करता रहता है। इसलिए बिना सोच वाला स्थिति नहीं पहुँचेगें। और शक्ति नहीं मिलेगा। क्योंकि मन काम कर रहा है, जब मन काम नहीं करेगा, तभी शक्ति मिलेगा, लाभ मिलेगें और ज्ञान प्राप्ति करेंगे। लेकिन जब कोई गईडिंग कर रहा है, मन उनका शब्दों पर ध्यान रखता है और इसलिए जितना भी समय बैठेगें तब भी उनको शक्ति नहीं मिल पायेगा।

इसलिए पत्रीजी का कहने वाला "श्वास पर ध्यान" कर कर अपना मन को शुद्धीकरण कर सकते है। और आगे महाशुद्धीकरण भी कर कर बहुत (अपार) शक्ति प्राप्त कर कर, जनालोक को पार कर सकते है।

# ज्ञान प्राप्त करने से क्या होगा?

पूरी दुनिया में सब लोग अपने आप को शरीर मानकर ही जी रहे है। मगर असलियत क्या है? हम आत्मायें है, शरीर नहीं। यहाँ, मतलब, पृथ्वी पर कुछ समय रहेंगे और यही अपने शरीर छोड़कर चले जाते। आत्मा होने के नाते आत्मज्ञान चाहिए। इसीलिए ये शरीर आत्मज्ञान सुमुपार्जन करने के लिए ही है।

इस शरीर के सहारे ध्यान करना, स्वाध्याय करना, सांगत्य करना, सेवा करना और ज्ञान प्राप्त कर कर मरने के बाद उन्नति स्थिति प्राप्त कर कर महान  लोकों में पहुँचना है। बल्कि यहाँ पृथ्वी पर कर्म कांड करने से, या उस समय दान देने से कुछ फायदा नहीं है।

बहुत लोग विश्वास करते है कि, जब वो मर जायेंगे, उनके पुत्र द्वारा कर्मकांड करने से, ऊपर लोक को पहुँचते है। इसलिए मरने के बाद का जीवन के बारे में सोचते नहीं है। इसलिए ज्यादा तर लोग पुत्र प्राप्त करने में इच्छुक रखते है। किस लिए? सिर्फ उनको मरने के बाद कर्मकाण्ड करने केलिए।

लेकिन जानना चाहिए कि लड़का या लड़की दोनों एक ही है। जानना है कि मरने के बाद कर्मकाण्ड करने से कुछ भी फायदा नहीं होने वाला है। जब जीवित है, उनके किये हुये कर्मो आदारित ही, उनको ऊपर लोक का प्राप्ति मिलता है।

और वैसे ही, मरने के बाद जो दान देते है, उस पुत्र को फल मिलेगा, न कि, उस मरीज को। ये जानना जरूरी है, कबीर महाशय ने कहा था कि "वो हाथ जो कर्म करते है, उसी को फल प्राप्त होता है"।

नारद महर्षि ने भी वाल्मीकी से पूछा था, "आपके किये हुए पापों में, पूछना कि आपकी पत्नी, हिस्सा लेगी? लेकिन जब अपनी पत्नी से वाल्मीकी पूछा था तब उसने मना किया कि मुझे कुछ भी संबंध नहीं है।

इसलिए, जब तक जीवत है, हमे सिर्फ अपने किये हुए कृषि से,

साधना से, सेवा से, कुछ हासिल कर सकते है। मतलब ऊपर लोक प्राप्ति, महान लोक प्राप्ति, ऐसे सब कुछ अपने किये हुए कर्मो से ही पा सकते है। न कि किसी दूसरे ने किया हुआ कर्मो से, हमे कुछ फायदा नहीं - ये हर एक को जानना चाहिए वो स्त्री हो या पुरूष हो।

अगर आप रमन महषि को देखे है तो मालूम होता है। वो अपने जन्म में कितना पाया है। उसी तरह मुम्मिदविरम बाल्योगी जी ने भी जन्म में बहुत पाया। इसी तरह जो भी महान लोग है वो अपने बालक अवस्था से ही अपने भविष्य के लिए बहुत कष्ट किये है। और अपना-अपना जीवन सफलता प्राप्त किये है। महान बने और महान लोक पहुँचे है।

हमे ये याद रखना चाहिए, अभी हम पृथ्वी पर है, शरीर के साथ है, मतलब हम शरीर पहने हुए है। बल्कि शरीर हम नहीं है। मतलब आत्मा ने शरीर को पहनाया है। ये याद रखना है, पहले ये जानना चाहिए, कि जितना हम ज्यादा जानेगें, उतना जीवन में फायदा होंगे।

देखिए माता-पिता ने अपने बच्चों को 20-25 साल तक प्रापंचिक विद्या देते है। अगर वो अच्छा पढेंगे, तो वो महान मानेगें। लेकिन याद रखना कि वो महान नहीं बल्कि जो महान ज्ञान प्राप्त करेगा वो ही असली महानता है। ये विषय कब मालूम होगा? जब मरने के बाद ऊपर जायेगा, तब मालूम होगा।

देखिए IAS बनो या बड़ा इंजनीयर, या उत्तम विद्यार्थी हो या कुछ भी बनो, लेकिन क्या फायदा है? सिर्फ जब तक पृथ्वी पर है। सोचिए इतना साल मतलब 20-25 साल अपना जीवन खर्च कर देते है, उसमें थोड़ा सा भी आत्मज्ञान केलिए कुछ दे रहे है क्या? कुछ भी नहीं दिखाई देता है।

उसका मुख्य कारण अपने माता-पिता का अज्ञानता। अपने बच्चों को कुछ भी समझा नहीं सकते, और वो भी कुछ नहीं जान पाते है। ऐसे बहुत पीड़ियाँ आ रहे है, सब जन्म ले रहे, अज्ञान में जीते है। और निकल जाते है।

हर समय उनका यही सोच है कि मरने से पहले जितना ज्यादा वैभवशाली जीना है, मस्ती करना है, और सुखी रहना है। सिर्फ उसी पर दृष्टि

रखते है। ये सब करने के लिए चाहिए पैसे। इसीलिए 20-25 साल की पढाई में लगाते है।

इसीलिए बड़े लोगों का कहना है, न कि क्षर विद्या सीखना, बल्कि अक्षर विद्या प्राप्त करना चाहिए। क्षर मतलब जो खत्म होगा, अक्षर मतलब जो खत्म नहीं होता।

बहुत लोग कहते है कि अपने बच्चों को अक्षर अभ्यास किये है। असलियत में ये  लोग अक्षर अभ्यास नहीं बल्कि क्षरा अभ्यास किये है। ये लोग उनको प्रापंचिक विद्या सिखा रहे है, जो नाश होने वाले है, क्योंकि प्रापंचिकता अशाश्वत है।

अक्षर विद्या मतलब जो नाश नहीं होता, वो है आत्म विद्या, क्षर विद्या जो नाश हो जाता है वो शरीर को संबंधित विद्या है। क्षर विद्या में अपने शरीर के ऊपर जाँच करने वाले विद्या होता है, लेकिन आत्म संबंधित विद्या जो नाश नहीं होता, उसका पढ़ाई नहीं करवाते है।

सच में अगर बचपन से जिसको आत्म ज्ञान सिखाते है, और ध्यान सिखाते है, वो ही असली अक्षरभ्यास करने वाले होते है। बल्कि सिर्फ चार शब्द लिखवाने से अक्षरभ्यास नहीं होता है। यहाँ विषय की बात ये है कि जितना ज्ञान प्राप्त करते है, उतना महान है।

इससे पहले जान चुके है कि मरने के बाद अज्ञानी लोग, सहायकों का बात नहीं मानते है, और यही प्रेतात्मा बनकर घूमते है। ऐसे कुछ शतकों साल बेकार करते है। लेकिन जो भी थोड़ा भी ध्यान कर कर ऐसे विषयों के बारे में जानते है, ज्ञान प्राप्त करते है, वो सहायकों के साथ ऊपर लोक चले जाते है। वहाँ जाकर आगे जो करना, उसमें लग जाते है।

इसीलिए जानिये, भूलोक में 300-350 जन्म तक जनालोक तक जाते है और वापस भूलोक आते है। जनालोक पार नहीं करते है। असली महान लोग वो होता है, जो जनालोक पार करते है, अपने ही कृषि से।  वो ही काम अब हम कर रहे है। जो भी हमारे जूम क्लास में आते है, भीमवरम 3 दिवसीय

क्लास मे आते है, ये ज्ञान प्राप्त करते है, निश्चय कि बात है वो सब लोग यही प्रयत्न कर रहे ह। थोड़ा सा अगर समझ सकते है और थोड़ा कृषि करने से जो हासिल करना है, वो मिल जयेगा।

यही बात जब ऊपर जायेंगे तब पता लगेगा। और अपने आप को भाग्यशाली मानेंगे। आप आश्चर्य होंगे कि जब मालूम होगा कि कितने सारे विषयों जानना और अनुभव भी लेना है। पृवथी पर ये सब समझते नहीं है, लेकिन ऊपर पहुँचने के बाद हमे मालूम होगा कि हमे बहुत विषयों को जानना है और बहुत पाठों को सीखना है।

सहज में हम मरने के बाद क्या होता है? ये कह सकते है कि, अगर पाप किया है तो भुवर्लोक, पुण्य किया है तो सुवर्लोक, सेवा किया तो महालोक, तपस्या किया तो तपोलाक और अगर सत्य अनुभव में आता है तो सत्यलोक पहुँचते है। ऐसे जानने या सुनने के बाद, हम सत्यलोक पहुँच जाते है क्या? इतना आसान है क्या? पृथ्वी पर जिसको हम देवता समझते है, उस स्थाई तक पहुँचना है, तभी वो हो सकता है।

याद रखिएगा कि जो भी मनुष्य जनम लेने के बाद इसे पहले बहुत जन्मों में सीखते है और बाद में सिखाते है। जैसे पहले ही कहा था कम से कम ३००-३५० जन्म तक सुनते हो, जानते रहते हो और सीखते रहते है।

ऐसे हम अभी सिखाने के स्थाई पर पहुँचे है। इसलिए मैं सब को क्लास लेने का बताता हूँ, अगर क्लास ले सकते हो तो प्रमोशन मिल गया, अगर आप को सीखने की स्थाई से सिखाने, स्थाई पहुँचना है, तो जितना ज्ञान आप को मालूम है, सबको बांटना चाहिए।

याद रखना कि जबसे आप ज्ञान सिखाना शुरू किया, ऊपर लोक जाने का अर्हत प्राप्त कर लिया। पूरी अर्हन नहीं लेकिन अर्हत बना लिया। इसीलिए पत्रीजी कहते है कि ध्यान सबको सिखाईए। वो ही मैं  कह रहा हूँ कि न कि सिर्फ सीखना है, बल्कि सिखाना भी है।

सिखाने, ऊपर लोक वासी का लक्षण है, याद रखिये कि, नीचे तीन

लोकों के वासी शिष्य होते है, ऊपर 3 लोकों के वासी गुरू होते है और सिखाते है। इसलिए अगर सबको गुरू बनना है तो सिखाना पड़ेगा, यही बात पत्रीजी हमें कहते है।

मैं भी पहले-पहले आश्चर्य होता था कि क्यों पत्रीजी ऐसे बोल रहे है कि सबको सिखाना है। बाद में पता चला था कि कितना महत्व है, सिखाने में। पत्रीजी ने कहा "जब बॉंटते रहेंगे, तब बढ़ता रहेगा"। मतलब जो भी धन हो या ज्ञान हो जितना देता रहेगा, उतना आता रहेगा।

याद रखना आत्मा को ज्ञान चाहिए न कि धन। तब अगर ज्ञान चाहिए तो ज्ञान बांटना चाहिए, थोड़ा बहुत बॉंटेगें तो थोड़ा बढ़ेगा और ज्यादा करेगें तो ज्यादा बढ़ेगा, अगर बढाना है तो बांटना ही पड़ेगा। मैंने ये समझ गया, इसीलिए मेरे सारे व्यापार को बंद किया, और अपने बच्चों को भी उनका हिस्सा बांटकर, बाहर भेज दिया। मैं और मेरी पत्नी, दोनों अपना पूरा समय ज्ञान बॉंटने में लगे रहते है।

ध्यान और ज्ञान को पिछले 20 सालों से, मतलब 2002 से बांटते ही रहे है। जब से पत्रीजी का परिचय हुआ तब से हमे अंजान ने ही अपने ज्ञान को बढ़ा रहे है और आगे बढ़ा रहे है, इसीलिए आप भी, कम सही, बांटना शुरू कीजिए।

क्योंकि जो परिशुद्ध में जाता है वो महानलोक पहुँचता है, महा परिशुद्ध पाने वाले तपोलोक पहुँचते है, और जो मन पूरी तरह शूण्य किया, निर्गुण में रहेगा, तो सत्य लोक पहुँचते है। मतलब इन तीन गुणों को पार करते है।

यही विषय भागवत गीता में कहा गया है -

**त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।**
**निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान ।। (2.45)**

ओ अर्जुना, वेदो में संसार का त्रिगुणात्मक विषयों पर ही बताते है, आप को ये पार कर कर निस्त्रैगुण होकर, बिना द्वन्द्वत्व रहना। निरंतर शुद्ध सत्य को आश्रय लेना, बिना योग क्षेम के दृष्टि में रहना है, आत्म ज्ञानी बन जाओं।

इसी तरह हनुमान जी को भी पूर्ण ज्ञान नहीं है। जितना श्रीराम जी को है। उसने अच्छा तपस्या किया, मतलब साधाना किया, बहुत सिद्धियों प्राप्त किया, बहुत मंहिमायें है, बहुत शक्तियाँ मिली, लेकिन ज्ञानी नहीं बना हनुमान जी ने श्रीराम जी को आश्रय लेने के बाद ही ज्ञानी बना।

मरने के बाद अगर इन तीन गुणों में रहेंगे तो जनालोक नहीं पार करेंगे, और नीचे ही रहेंगे। अगर तीन गुणों को पार करेंगे तभी जनालोक पार कर सकते है। यहाँ पर पत्रीजी का विषय और महान लोगों का विषयों और जो विषय भगवत गीता में है, उनका सार ही यहाँ हमने कहा है।

इसीलिए याद रखिए, जो भी इन नीचे वाले लोक में त्रिगुण वाले है, वो पृथ्वी पर पूजा करते है, आराधना करते है ओ अपने आप को भक्त समझते है।

और भी कहते हैं कि, मुझे भगवान बहुत इष्ट है। लेकिन ये समझ नहीं पाता कि अगर वो भगवान को इष्ट हुआ है कि नहीं। मगर भगवान को वो ही पसंद है जो जनालोक पार कर कर ऊपर 3 लोकों जाने का अर्हत पाता है। वैसे लोगों को जिसने ज्ञान प्राप्त किया है। क्योंकि वो ही उपर ३ लोकों पहुँच सकते है।

उसने कहा है कि मुझे जो आराधाना करते है कि वो चार तरह के है, वो है, आर्ती, अर्दार्थ, जिज्ञास और ज्ञानी। इन में से मुझे ज्ञानी पसंद है, भ.गी. श्लोक 7-17, 7-18 में कहा गया है।

इसीलिए जो ज्ञान प्राप्त करता, उसीको भगवान पसंद करता है। वैसे ही लोग जनालोक पार करते है।

पत्रीजी, उसी ज्ञान को हमे प्राप्त करने को कहते है। पत्रीजी वो जो कहते है वो सभी ऊपर लोक तक पहुँचने का ज्ञान ही है। इसीलिए ध्यान करों और ज्ञानी बनो।

पत्रीजी 4 विषय कहा है ज्ञान पाने का 1. ध्यान साधना, 2. स्वाध्याय, 3. सांगत्य, 4. सेवा। इसलिए अगर ऊपर लोक पहुँचने का इच्छुक रखते है, वो इन चार विषयों को आचरण मे लाना है।

# ऊपर लोक पहुँचने केलिए कौन से लक्षण होना चाहिए?

जो भी जीवित रहकर, मौत के बाद का लाभदायक होने वाले कार्य करते है वो ही महान है। मेरी विषय में तो मैं वो ही काम कर रहा हूँ। जो पहले करता था, छोड़ दिया हूँ। मेरा पूरा जीवन बदल गया है। उल्टा अब सबको आश्चर्य होता है कि ऐसे कैसे बदल गया?

इसका एक ही कारण है कि जब मुझे पत्रीजी का परिचय हुआ मुझे मालूम पड़ा कि मैं शरीर नहीं, बल्कि आत्मा हूँ। ये बात मैं समझ चुका था और ये भी समझा कि पृथ्वी पर शाश्वत नहीं हूँ। वैसे ही सब को एक न एक दिन जाना ही है। और ये भी जाना कि, मरने के बाद, पाने वाले लाभ शाश्वत है न कि इस पृथ्वी पर पाने वाला।

तब से जो भी है मेरे पास, मैं उसी का खर्च कर रहा हूँ, जिसमें मुझे मरने के बाद लाभ पहुँचे। इसके लिए क्या करना? मुझे ये ही पता किया कि कौन सा कर्म, मरने के बाद लाभ पहुँचाता है। जैसे पत्रीजी कहते है, वैसे करेंगे तो आत्मा का लाभ होगा। मतलब मुझे लाभ होगा। तब से आत्म लाभ केलिए जीवन बिता रहा हूँ।

मुख्यतः कि, कोई भी हो, पत्रीजी ने जो बताया सब कुछ करना चाहिए। वे कहते है कि अगर अज्ञान से बाहर निकलना है तो ज्ञान प्राप्त करना है। और ज्ञानी बनना है। इसकेलिए ध्यान करना है। सिर्फ ज्ञान केलिए न कि मनो कामना केलिए या स्थ्वाथ्य केलिए या किसी अनुभव केलिए, ये बात बार बार कहते है।

और कहते है कि अगर आप ध्यान सिर्फ ज्ञान केलिए ही करेंगे तो आपका जो भी इच्छा है, अपने आप वो भी पूरा हो जायेगा। छोटे-छोटे चीजों की मांगने की जरूरत नहीं। उनके बारे में सोचना ही नहीं, इस मार्ग में जो भी

आध्यात्मिक सेवा करता है, पत्रीजी ने कह दिया। अगर वो करते रहेंगे तो जो भी मुश्किल है, अपनी भौतिक जीवन में वो सब धीरे-धीरे हट जाऐगें। और अच्छी तरह से जीवन जी सकते है। हमारे ही सोसएटी में श्री श्रीकांत नाम करके लड़का है, हर जगह क्लास लेता है। एक समय पर अपना गाँव छोड़कर हैदराबाद पहुँच गया। अपना जीवन से असंतुष्ट था। उसको और कुछ जानने का इच्छा रखता था। जीवन में और क्या करने का सोचता था। उस कारण से अपना परिवार को छोड़ा था। छोटा मोटा जो भी सम्पत्ति था वो सब छोड़कर आ गया था, क्योंकि वो वहाँ नहीं रह पाया।

साथ में एक पैसा भी नहीं था, फिर भी उसने डरा नहीं, उसका तपन देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। बिना कुछ, न नौकरी, न पैसे, बिल्कुल खाली हाथ पहुँच गया था। आना आसान है लेकिन खाना पीना और सोना कैसे होगा? वैसे किसे से मांग कर, कुछ सेंटर में रहकर, ऐसे घूमते-फिरते मुझ तक पहुँच गया था। मेरे क्लास को सुनकर थोड़ा ज्ञान प्राप्त करना शुरू किया। बहुत श्रद्धालु है। उनमें एक गुण है कि कभी कुछ भूलता नहीं है। एक बार सुनने के बाद वो फिर से उसी को अच्छी तरह से सुनाते है। वो पत्रीजी का विषयों को और मेरी बातों को सब सुनकर ज्ञान प्राप्त किया।

तब मैंने उसको सब को क्लास लेने को कहा था, क्योंकि वो भी बहुत बड़ा सेवा है। वो समझ कर वो भी अपना क्लास शुरू कर दिया। भीमवरम् के क्लास में आकर ज्ञान प्राप्त कर कर वो ही ज्ञान सब को बांटता रहता था। इनका बालेने का पद्दति सबको पसंद आया था। इसीलिए एक जगह से दूसरे जगह घूम कर क्लास देता था। साथ साथ अध्यात्मिक किताबें भी बेचना शुरू किया, क्योंकि वो भी बड़ा सेवा ही है। धीरे-धीरे उनमें थोड़ा पैसे कमाकर अपना जीवन बिताना शुरू किया। ऐसे करते करते उसका कृषि, सेवा के वजह से सब कुछ अनुकूल होता था। जितना ज्यादा कृषि करेंगे उतना ही फल मिलेगा। ऐसे करते करते एक-एक काम अनुकूल होते होते, धीरे-धीरे यज्ञ कार्यक्रर्मो, पुस्तकों

भंडार शुरू किया। ऐसे करते सब के साथ परिचय बनाकर, इस स्थाई तक पहुँचा कि, सबके बराबर मार्केटिंग कर रहा है। किसी को भी किताबें चाहिए तो वो अभी उपलब्ध कर रहा है। एक भी पैसे जेब में नहीं रह कर भी बहुत बड़ी स्थाई पहुँचा है। ये सब सिर्फ उसका किया हुआ सेवा कि वजह है।

इसीलिए कोई भी कमी के वजह से दुःख नहीं होना चाहिए। वो सब पहले के किये हुए कर्मो का फल भुगत रहा है। कम से कम सेवा करते रहिए और आपका भविष्य बढ़िया रहेगा। बिना कुछ करकर परिस्थितियाँ नहीं बदलेंगे। आप जो भी करेंगे, उसके हिसाफ से मिलेगा।

मुझे बहुत लोग पूछते है कि उनका आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। तब मैं कहता हूँ कि वो सब, पहले किया कर्मो का परिणाम है। हम इसको नहीं बदल सकते। सिर्फ थोड़ा इंतजार करना। और अब से थोड़ा सेवा करने की यज्ञ कार्यक्रम में भाग लेना न सिर्फ धन, तन, मन से भी सेवा कर सकते हो। जैसे आपका गाँव में क्लास लगवाना, ऐसे कुछ कर्मो से धीरे-धीरे आपका स्थिति बदलेगा।

ऐसे लोगों को बहुत देखा हूँ, बहुत लोगों का उन्नति हुआ है। हमने भी सब छोड़कर सेवा में भाग लेते है और उससे जो भी हमारे अन्दर की कमियों हैं, वो भी निकल गये है। इसलिए सब को एक ही सलाह देता हूँ कि पत्रीजी से कही गई विषयों, साधना, सज्जन सांगत्य और सेवा कीजिए। आपका जीवन हर तरह का धन, मन और शांति से जीयेंगे। इससे महान जीवन क्या होगा?

जानिए, कुछ हो या न हो अगर शांति में है, तो सबसे महान है। ऐसे ही पत्रीजी कहने से कही गई विषयों का आचरण करना है। उसने कहा है कि "मौत से पहले मरना है" मतलब मौत के बाद का जीवन के बारे में जानना चाहिए। तब हम अभी क्या करना है, मालूम होगा।

मुख्यतः मौत का डर निकल जायेगा। मरने के बाद अगर लाभ पाना है, उसके लिए क्या करना है और उसी पर ध्यान दे सकते है। पत्रीजी कहते है

जिस पर श्रद्धा रखेंगे है वो ही बनेंगे।

अगर आप संगीत पर श्रद्धा रखते हो तब संगीतकार बन जायेंगे, अगर राजनीति पर श्रद्धा रखते हो तो रानजीतिज्ञ बनेंगे और व्यापार पर श्रद्धा रखेंगे तो धन सम्पति प्राप्त करेंगे। वैसे ही अगर ज्ञान पर श्रद्धा रखेंगे तो ज्ञानी बनेंगे, और वो ही ज्ञान हम ऊपर लोक पहुँचने में मदद करेगा।

इसी विषय के बारे में पहले हम थोड़ा सा बात कर चुके है, मतलब जो भी भगवान को पसंद है, मतलब ज्ञानी बनेगा, वो निश्चय रूप से जनालोक पार करते है और ऊपर पहुँचते है। इसीलिए हम सब भगवान को पसंदीदा होना चाहिए।

इसीलिए ध्यान कर कर ज्ञान प्राप्ति करना है। और इससे पहले जानना है कि आपका व्यवहार कैसे करना? कैसे होना चाहिए? क्या लक्षण होना चाहिए? क्या क्या गुण होना चाहिए?

ध्यान कर रहे है और ज्ञान प्राप्त कर रहे है। लेकिन सिर्फ आपका व्यवहार जब बदलेगा तभी आप ज्ञानी बनेंगे और भगवान को पसंदीदा होगा और जनालोक पार कर सकते हो।

इसीलिए पत्रीजी कहते है कि, "कष्ट, नष्ट और अपमान, ये सब आद्यात्मिक प्रगति का सिडी है। और ये भी कहा कि, ये सब आपका आत्मा का उन्नति करेगा, कुछ नष्ट नहीं करेगा। अगर वो सब जीवन में नहीं रहेगा तो आत्मा का पुरोगमन नहीं होता है। इसीलिए अगर आत्मा का उन्नति होना है तो जीवन में कुछ कष्ट, और नष्ट होना है तभी जितना ज्यादा कष्ट होंगे, उतना आगे बढ़ेंगे। इसलिए सुख और दुख में समभाव रखना जरूरी है।

अभी हम लोग ध्यान करते है, ये भी कठिन कार्य है। बहुत आसान काम नहीं है, हाथ बंद करना, पैर को क्रोस करना, आँखे बंद करना, आसान है, लेकिन उसके बाद बहुत कष्ट होता है।

दो घंटे तक बैठना, बीच में बहुत दिक्कत रहता है तब हमे सहनता

दिखाना, तितीक्षा होना और सबूरी रखना, तभी तो हम न आँखे खोलेगें या हाथों। यही है जो काम हमें महान लोग सिखाया है।

इसलिए श्रीकृष्ण ने भी कहा है कि हमें सहनशीलता की जरूरत है, पत्रीजी भी और शिरडी बाबा सबूरी कहा था।

ये नहीं कि एक सोच आया है और फटाफट उठ गया। कितना भी कष्ट हो तो बैठना सीखना। क्यों कि सहनशिलता भी एक लक्षण है, जिसे भगवान को पसंद है।

ध्यान द्वारा हम लोग भगवान पर दृष्टि रखते है और इसीलिए हममे सहनशीलता होना चाहिए। शरीर को बिठते हो ठीक है, लेकिन जब विचार आना शुरू होता तब आपका सहनशीलता दिखाकर बैठना चाहिए और आलोचना रहित स्थिति पहुँचना है। वो ही भागवत स्थिति है।

इस प्रकार अगर भगवान पर दृष्टि रखना, या उन्हें पहुँचना हममे सहनशीलता होना चाहिए। सिर्फ बैठना कोई भी कर सकता लेकिन सहनशीलता से बैठना चाहिए। इसीलिए पत्रीजी कहते है, सहनने में ही प्रगति। उनका दिया हुआ ज्ञान नवरत्नों में एक है। जो भी सहनशीलता दिखाता है, वो ही जीवन प्रगति करता है । ध्यान करना आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग है । उसमें भी सहनशीलता होने से ही प्रगति होगा। इसलिए अगर ऊपर लोक पहुंचना है, तो सहनशीलता बहुत जरूरी है।

# मानव जीवन का लक्ष्य क्या है?

ध्यान में आने से पहले मैं अपने आपको शरीर समझ कर जिया था। लेकिन पत्रीजी का परिचय होने के बाद से अपने आप को आत्मा जानकर, इसी तरह का जीवन बिता रहा हूँ।

इससे पहले मुझे कुछ संदेश देने से डरता था, लेकिन ध्यान में आने से लगातार घंटों तक भाषण कर रहा हूँ। ये बदलाव इसलिए हुआ कि पत्रीजी का दिया हुआ "श्वास पर ध्यान" करने की वजह से।

पत्रीजी के संदेशों में कभी कभी मरने के बाद वाला जीवन के बारे में प्रस्तुत करते है। मुझे ये सब सुनकर बहुत कुछ ज्ञान मिला। वो एक विषय को लेकर तरह तरह कोणों से प्रस्तुत करते है। मैंने उन सब इक्ट्ठा कर कर एक ही पुस्तक में लिख लिया और जब भी पढ़ना है, तब एक ही जगह होगा।

क्योंकि बहुत लोग समझते है कि एक बार सुनने से ही पूरी समझ में आ जाता है। लेकिन ऐसा नहीं होता। उन सब एक एक कर कर पड़ेंगे एक जगह रख कर तब एक अद्भुत किताब हो जाता है और अच्छी तरह समझ में आता है।

साथ-साथ मैंने भगवत गीता, भजगोविन्दम और वशिष्ट अमृतम अध्ययन किया हूँ। तो जहाँ हो सकता है उन विषयों को भी जोड़ता हूँ। उसे और भी अच्छी तरह समझ आता है।

आप भी ज्ञान बढ़ाओं और इसके लिए सारे योगी लोगों का विषय एक साथ रखकर पड़ेंगे तो ज्यादा अच्छा समझेंगे।

सब विषयों एक ही साथ में रखकर पढ़ना है। थोड़ा सा कष्ट करना है तभी हमे ज्ञान प्राप्त होगा। नहीं तो ऐसे थोड़ी मिलेगा? सिर्फ ध्यान करने से ही सब कुछ नहीं मिलेगा, पत्रीजी कहते है कि ध्यान आप को सहाय करता है, आपका बुद्धि बढ़ेगा, अवगाहन शक्ति बढ़ेगा और विश्लेषण करने और समझना आसान हो जायेगा।

लेकिन अगर ज्ञान को बढ़ाना है, तो ज्ञानी लोगों का पुस्तक पठन करना, सज्जन सांगत्य करना। कुछ नये लोग बोलेगें कि मुझे ये दिखा वो दिखा वो अनुभव हुआ, ऐसे बातों से हमे कुछ फायदा नहीं मिलने वाला है।

लेकिन ज्ञानी लोगों का विषयों को सुनने से अपना ज्ञान को बढ़ा सकते है और जो भी मैं विषय बताता हूँ अगर अच्छी तरह सुनेंगे तो आपका ज्ञान भी बढ़ेगा।

पत्रीजी कहते है कि समय बर्बाद नहीं करना। अपना काम करते रहो, और सुखमय संसार में रहते हुए, जब भी खाली समय मिलेगा, तब अच्छे किताबे पढ़ना न कि कुछ बहस में या बेकार बातों में समय बर्बाद नहीं करना।

इससे सिर्फ दिन में ही नहीं रात को भी बहुत समय मिलता है। उस समय को हम ध्यान केलिए, स्वाध्याय और सज्जन सांगत्य में उपयोग करेंगे तो, क्यों नहीं होगा उन्नति? अगर हम उसी पर दृष्टि लगायेंगे तो हमे ज्ञान कैसे नहीं प्राप्त होगा? हम भी बहुत महान बन सकते है।

अभी उस मौत के बाद का जीवन के बारे में जान रहे है। इस भूलोक के ऊपर और छः लोक है। उनमें जनालोक के बारे बहुत प्रस्ताव किये है। क्योंकि वो बीच में है। साधारण लोग जनालोक के नीचे  लोक में पहुँचते है और महात्मा, ज्ञानी लोग, और योगी लोग, तपस्वी लोग जनालोक को पार करते है।

इस जनालोक के बारे में कुछ विषय और सीखते है।

पत्रीजी ने कहा है कि पूर्णात्मा या मूलात्मा अपने से ही एक अंश को पैदा करते है। मतलब अंशत्मा को सृष्टि करकर उनको एक लक्ष्य देता है। ये है कि आप भी अपार ज्ञान प्राप्त कर कर हम जैसे बनो और सत्य लोक पहुँचना और तभी आप को बार-बार जन्म नहीं लेना पढ़ेगा। किसी भी लोक में पहुँचेगे तो भी आपको जन्म लेना पड़ेगा। अगर सत्य लोक के नीचे तपोलोक भी पहुँचेगें तब भी आप को फिर से जन्म लेना पड़ेगा। यही बात भगवद् गीता में कहा है -

**आब्रह्माभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।**
**मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते (भ.गी. 8-16)**

तात्पर्य :- हे अर्जुना। इस ब्र्त्म लोक जैसे लोक तक पहुँचने के बाद भी आपको जनम लेना पड़ेगा। लेकिन आप मेरे लोक में पहुँचने से जनम नहीं लेना पड़ेगा। हमने इस बात को, जो श्रीकृष्ण ने कहा, बहुत बार बता चुके है।

ऐसे एक पूर्णात्मा एक अंशत्मा को लक्ष्य निर्देश करता है। मतलब हम सब अंशात्मा है और हमे अभी सत्य लोक पहुँचना है। ये ही हम सब का जीवन का लक्ष्य है। तो कौन पहुँच सकता है, सत्य लोक? सत्यलोक में सिर्फ और सिर्फ पूर्णात्मा ही रहते है। उन्हें ही अर्हत है। मतलब सब को पूर्णात्मा बनना पड़ेगा। ये सब हमारी जीवन लक्ष्य है। सहज है कि कुछ लोगों को संदेह होता है। ज्यादा तरह जिनको बहुत सारे कष्ट है, वो भगवान से पूछते है - मुझे क्यों पैदा किया? क्यों मुझे कष्ट देना है? जीवन में क्या करना है? किसलिए ये जीवन? बहुत सारे प्रश्न होते है।

कुछ  लोग ये समझते है कि सिर्फ खाना है, पीना है, और मस्ती करना है, धन कमाना है और उसके खर्च करना है।

लेकिन जब जन्मों कि संख्या बढ़तें है ये सारे प्रश्न उठते है, मुझे जीवन में क्या करना और मैंने क्या हासिल किया? भ्रमों में रहते है। और समाधान भी नहीं मिलता है।

अब हम ऐसे प्रश्नों का उत्तर जानेंगे।

पूर्णात्मा एक अंशात्मा को सृष्टि कर कर आदेश देकर जनालोक में प्रवेश करते है। ऊपर लोक के मास्टर्स, क्योंकि आत्मा का पहला जन्म है, उनको सारे जो बताना था, बताते है। उनको जन्म लेने के बाद, खुद की मेहनत से लक्ष्य साधना करने को याद करते है। तब प्रारंभ में वो एक जन्म लेता है या स्त्री हो या पुरूष, धनवानी या गरीब कुछ भी जनम लेता है।

ऐसे पृथ्वी पर पहला जनम प्रारंभ करता है। माँ के गर्भ में प्रवेश कर जन्म लेता है। शुरूआत में सब कुछ याद रहता है। बाद में सब चीज भूल जाता

है, क्योंकि बाहर के लोग का प्रभाव में आ जाते है।

मुख्यतः है, पहले के ७-८ साल तक माता पिता या परिवार के लोगों का प्रभाव पड़ता है वो जैसे कहेंगे वैसे ही करते है। वो जो खाते है, वही खाता है और वो जो करते है, वही करता है और वो जैसे जीते है, वैसे ही जीता है, उनका हालत ऐसा होता है।

अगर वो मांसाहारी है तो वे भी हो जायेगा, या अगर वो शाकाहारी है तो वैसे बन जाते है, ऐसे जो हिन्दू या मुस्लिम या ईसाई है। उन जैसे व्यवहार सीख लेते है।

इसके बाद समाज का प्रभाव आता है, वो दोस्त, स्कूल, का वातावरण सब उन पर प्रभाव पड़ता है। सहज बात है कि, लोग पैसे के पीछे लगे हुए है। और सिर्फ पैसे वालों का ही इज्जत देते है।

जैसे वो लोग जीवन बिताते है, वो सब उन पर प्रभाव पड़ता है। उनके आदतें भी वैसे ही हो जाते है। और धीरे-धीरे पढ़ाई के बाद वो शादी कर कर संसारिक जीवन में डूब जाते है। वो ही बच्चा, उनका पर्वरिष करना, सारे समय उसी में चला जाता है। इसी तरह वो प्रारंभ जन्म में कुछ कर्म नहीं है। इसलिए ज्यादा कुछ कष्ट नहीं होता है।

इसलिए उन लोगों को अहंकार और गर्व बहुत होता है। इसीलिए कहते है कि जब तक कोई कष्ट न हो तब तक भगवान याद नहीं आता है। तभी जिसको कोई कष्ट नहीं है वो किसी के बारे में सोचते ही नहीं और भगवान को भी याद नहीं करता और अपने आप को बहुत महान समझ कर बैठता है। धीरे-धीरे कुछ गलतियाँ और पाप कर्मो कि शुरूवात होता है।

तब उनका कर्मो का चिट्ठा शुरू होता है और अब कर्मो का जमा होता रहता है। इसी जन्म म् कुछ कुछ अनुभव करेगा और जो बाकी है, वो शरीर छोड़ने के बाद उसका संचित कर्म बन जाता है।

शरीर छोड़ने के बाद वो ऊपर चले जाता है। अगली बार उन संचित कर्मो से कुछ छुनकर जन्म लेता है। फिर वो ही, जीवन में अनुभव लेते है, कर्म

करते है। कर्म बढ़ाते-बढ़ाते अपने जन्म भी बढ़ाते है। इसी प्रकार जन्म का संख्या बढ़कर अपना जीवन चलता रहता है।

पत्रीजती कहते है कि प्रारंभ जन्मों में वो शरीर भाव में रहते है, मतलब शरीर को खाना-पीना और सोना।

ऐसे 100-150 जनम होने के बाद थोड़ा बदलाव आता है। उनका गुण में बदलाव आता है। तब वो मनोस्थिति में आते है। तब वो मन को प्रामुख्यता देते है। बहुत इच्छायें होते है, बहुत महान होने का इच्छा रहता है, कुछ पद हासिल करना चाहता है या तो बड़ा नाम कमाना चाहता है। ऐसे स्थिति में गर्व के कारण कुछ गलतियाँ भी और पाप कर्मो भी करता है। साथ साथ उनका कष्ट भी बढ़ता है, ऐसे करते-करते 100-150 जन्म हो जायेगें।

ऐसे ही जन्म के बाद जन्म में कष्ट बढ़ता रहता है क्योंकि पृथ्वी पर पुराने किये हुए कर्मो को ही भुगतना पड़ता है और वे ही अनुभव करना पड़ता है।

जब कष्ट बढ़ते है, तब उनका आलोचना शुरू होता है कि क्या है सारे कष्ट? मुझे क्यों आये है? उनको कुछ समझ नहीं आता। तब बड़ों से गुरूओं से पूछता रहता है। इससे कैसे निकलना है और क्या करना है। और जो भी वो कहते है वो करते है।

पहले जन्म में इसको और किसी गुरू का कोई जरूरत नहीं था। लेकिन इस स्थाई पर पहुँचने तक मतलब 250-300 जनम पार करने के बाद उन्होंने गुरू को ढूंढ़ते रहते है। जब पसंद की गुरू मिल जाता, तब धीरे-धीरे उनका प्रवचन या भाषण सुनकर अपना प्रवर्तन को बदलाव करते है और धीरे-धीरे सात्विक गुण में आते है।

इस समय वो और ज्यादा जानकारी पाने की प्रयत्न करते है। अंत में पत्रीजी जैसे गुरू तक पहुँचते है। तब उन्हें बताते है कि पूजा नहीं, भजन नहीं, स्तोत्र नहीं सिर्फ ध्यान करने को कहते है।

तब ध्यान करता है, शाकाहारी बनता, बुद्धि विकास हाता है और

अचछा-बुरा, पाप-पुण्य, सही-गलत, धम-अमर्ध के बारे में सोचना लगता है। धीरे-धीरे सारे गलत काम छोड़कर सिर्फ सही काम कर कर सेवा करते रहते है। और धीरे-धीरे आध्यात्मिक प्रगति करते है।

तब ध्यान करते-करते और गुरू को कहने पर किताबों पढ़कर उनका संदेश सुनकर, धीरे से अपना ज्ञान को बढ़ाते है।

अब हम उसी स्थाई पर है। हम सब उतने जनम लेकर सारे परिसिथतियों को पार कर अब यहाँ तक पहुँचे है।

लेकिन कुछ लोगों ध्यान में आने के बाद भी इस स्थाई में नहीं है। वो शारीरिक या मनो स्थिति में ही है। वो सब अपना शारीरिक स्वास्थ्य केलिए या कुछ मनो कामनायें केलिए आते है, बल्कि ज्ञान केलिए नहीं।

इसलिए ऐसे लोग गईडिंग ध्यान, संकल्प ध्यान और कई प्रकार का ध्यान क्लास में जाते है। उनको और कुछ जन्म लेना है। कम से कम 50 जन्म तक लेना पड़ता है। इस ज्ञान स्थाई तक पहुँचने के लिए 100 जन्म और लेना पड़ेगा, वो हम कहने पर भी नहीं समझ सकेंगे।

ये सब आपने पार कर लिया। इसीलिए तो मैं आप सब को बता रहा हूँ। आप में से बहुत लोग गईडिंग में कुछ नहीं पाया है। इसीलिए ये ज्ञान मार्ग में आये है। जो गईडिंग में है, उनको आत्म ज्ञान समझ में नहीं आता है।

इसलिए पत्रीजी कहते है, एक तरह की पक्षी एक ही जगह पहुंचते है। इसलिए अभी हमें अपनी ज्ञान को बृद्ध करना चाहिए। अपनी जन्म को बेकार नहीं करना। अभी तक 300-350 जन्म बेकार हो चुके है। जितना जल्दी हो उतना जल्दी हम अपना जीवन लक्ष्य को प्राप्त करना है। मतलब पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर कर सत्यलोक पहुँचने की ओर बढ़ना चाहिए। और कृषि करना चाहिए। जनालोक के ऊपर वाले बहुत कृषि करते है। ध्यान साधना कर कर ज्ञान प्राप्त कर कर, महान सेवा कर कर, जनालोक पार करते है।

यहाँ एक और चीज याद रखना। जनालोक पार करने वालों को दुबारा जनालोक जाने का जरूरत नहीं है। इसीलिए कोई भी जनालोक के ऊपर लोक

जाने को कोशिश करना चाहिए।

हम लोग पहले बता चुके है कि जो भी भूलोक आकर विशेष सेवा करते है, निस्वार्थ जीवन बिताते है, दूसरों केलिए जीते है, वो महात्मा कहलाते है। शरीर छोड़ने बाद वो महालोक पहुँचते है। वहाँ से फिर पृथ्वी पर आते है। सेवा करते करते ध्यान में आते है। ध्यान साधना के साथ साथ ज्ञान भी प्राप्त करते है।

विषेष ध्यान कर कर, मतलब तपस्या कि तरह करते है, और बाद में वो तपोलोक पहुँचते है। उस तपोलोक से फिर पृथ्वी पर आते है और अधिक से अधिक साधना कर कर एक हनुमान जैसे बन जाते है। एक मुम्मिडिवरम वालयोगी जैसे, एक जिल्लेमुडि माता जैसी, एक चिवटम माता जैसे अवधूत बन जाते है। पूरा जन्म सिर्फ साधना किए थे और कुछ नहीं। ऐसे करते करते सत्य को अनुभूती करते है।

आखिर कर एक साईबाबा जैसे, सत्य साई जैसे, विवेकानन्द जैसे, रमन महर्षि जैसे, सत्य को अनुभूति कर कर, सत्य लोक पहुँचते है। इसके बाद उनको भूलोक में जाने की जरूरत नहीं पड़ती है। सत्यलोक में रहकर वहाँ अपना काम करते रहते है।

जब ये सब समझते है तब हमारी पूरी दृष्टि उसी पर होती है। अगर नहीं समझते तब अलग दृष्टि होता है। अलग-अलग काम करते है। कोई भी अपनी शरीर की देखभाल के लिए कुछ करना ही पड़ता है। जो सांसरिक जीवन में है, अपने बच्चों और परिवार लोगों को देखभाल करना, ये सब सहज है। इसी को पत्रीजी कहते है कि "संसार में ही निर्वाण"।

जैसे हमने अपने माता-पिता के सहारे भूलोक में आये है, वैसे ही दूसरों को आने के लिए सहायता करना है। जो भी संसारिक जीवन में रहता है। नहीं तो श्रृष्टि कैसे चलेगा? हमें भी माता पिता का पात्र पोषन करना है, हमें भी बच्चों को जन्म देना, इनका पालन करना, बड़ा करना और प्रायोजक बनाकर अपना जिम्मेदारी निभाना है।

जब वो एक नौकरी में लग जाये, अपने आप जी सकेंगे, तब उनको छोड़ना है। जैसे एक पक्षी करता है। उनका बच्चा जब उड़ना सीखता है वो उनको छोड़ देता है। मृत्यु तक नहीं पकड़कर बैठना। इसीलिए परिवार को पालन पोषण करना और धन भी कमाना।

उसमें दोनों पति और पत्नी का भाग होता है। दोनों मिलकर अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करते रहना चाहिए। तब कोई घृणा नहीं होता है। साथ-साथ अपना जीवन लक्ष्य के भी साधना करना चाहिए। तब हमारा जीवन सफलता होगा। जिस उद्देष्य के लिए आये है वो हासिल करते है। इस प्रकार जीयंगे तो हम महान है।

अगर ऐसे आपका प्लान के प्रकार जीवन बिताते है तो और क्या चाहिए? और पत्रीजी जैसे गुरू मिल जाते है तो उससे भी बड़ा काम हासिल कर सकते है। इसीलिए हम जिस स्थिति में भी है, युवक अवस्था, या कौमार अवस्था, या बुढ़ापे में, अपना लक्ष्य जानकर, इसकी ओर कष्ट करना चाहिए। जो भी समय बाकी है आत्मा केलिए बिताना है।

कुछ मुश्किलों हो सकते है, और कुछ अवरोध भी हो सकते है। परीक्षा भी होते है। बहुत कुछ होता है। उनका अपना रास्ता हम अपनी रास्ता में दीक्षा के साथ, दृढनिश्चय के साथ अपने लक्ष्य की ओर जाना है। इसलिए यहाँ स्त्री या पुरूष, धनी हो या गरीब उनसे कुछ मतलब नहीं है। वो सब शाश्वत नहीं है। हमें नहीं भूलना कि हम आत्मा है, हम सब अपने-अपने रास्ते में अकेले आये है।

इसीलिए पत्रीजी कहते है कि बाजू वाले के ऊपर दृष्टि नहीं रखना चाहिए, अपने आप पर ध्यान रखों। क्यों सोच रहे हो दूसरो के बारे में?

ये गाईडिंग मास्टर्स कहते है कि अगर ऊपर मास्टर्स से  नहीं मागेंगे तो वो क्यों देंगे? आप जब मांगेंगे तभी वो देंगे। इस तरह मॉगना, पूछना, और कहना कि मॉ भी मांगने पर ही खाना देती, ऐसी बातों के पीछे पड़ते है।

लेकिन भगवान कि सृष्टि में कोई किसी से कुछ मांगने कि जरूरत नहीं

है। अगर आप जो करना है वो करेंगे तो जरूर आपको जो मिलना है वो मिलेगा। इसीलिए पत्रीजी कहते है कि हमारे दृष्टि मांगने पर नहीं, बल्कि करने पर होना चाहिए। पत्रीजी कहते है कि प्रारंभ जन्मों में, आप मांगने से नहीं मिलता, सिर्फ आपका अर्हत से मिलता है। आप धन मांगते हो, आपको नहीं मिलने वाला है। लेकिन अपने पूर्व जन्मों में दान देकर अगर अर्हत प्राप्त किया तो उसके हिसाफ से आप लखपति या करोड़पति बन जायेंगे।

इस लिए मुकेश अंबानी का पौत्र जन्म हुआ तो आटोमेटिक ही जन्म होते ही वो अपर कुभेर हो जाते है। उसने तो कष्ट नही किया। इसके अपने पूर्व जन्म का अर्हत से ही इस परिवार में जन्म लेता है। पत्रीजी कहते है, वैसे ही मध्यस्थ जन्मों में मांगने से नहीं मिलता, सिर्फ जो जरूरत है वो मिलेगा। यही मेरा जीवन में हुआ है। मैं बहुत कुछ चाहता था लेकिन मुझे वो जरूरत नहीं था, सिर्फ मुझे ज्ञाान कि जरूरत थी। मुझे वो विषय मालूम नहीं था और धन के पीछे पड़ गया था।

तब मुझे हर चीज में मुश्किले ही मिले और नष्ट हुआ। जो कुछ भी करता था, सब में मुझे नष्ट मिला। तब मुझे कुछ समझ में नहीं आया। उसी समय मुझे पत्रीजी मिले थे। इस ध्यान मार्ग और ज्ञान मार्ग मिला। इस पर लगाव था। इसलिए मैं इसमें आ गया हूँ। मतलब मुझे ज्ञान की जरूरत थी, इसलिए प्रकृति इधर खींच कर लाई। आपका रास्ता यही है, करके दिखाई। और लोगों के साथ भी ऐसा कुछ हुआ होगा।

ऐसे ही आखिरी जन्मों में, जैसे पत्रीजी, जो भी लोक कल्याण कि जरूरत है, वो सब आपको मिलता है।

इसलिए जानिए कि किसी भी स्थाई पर आप को माँगने पर नहीं मिलेगा। यही श्री कृष्ण कहते है कि, महान पुरूष वो है, जिसको कोई चाहते नहीं है।

इसलिए अगर हम ऐसे गुणों कि प्राप्ति होंगे, तब जरूर जनालोक पार करेंगे और ऊपर लोक जाने का अर्हत प्राप्त करेंगे।

# अगर सत्य लोक पहुँचनता है तो?

ये बात जानना न केवल मुख्य है बल्कि जरूरत भी है। क्योंकि अगर आप जनालोक के ऊपर लोक नहीं पहुँचेगें तो 100-200 या 300 जन्म लेने से भी कुछ फायदा नहीं है। सबको ऊपर लोक कभी न कभी पहुँचना है।

यही बात भगवद गीता में कहा है -

**श्लोक - आब्रह्माभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।**

**मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते (भ.गी. 8-16)**

तात्पर्य - हे अर्जुन। अगर आप ब्रह्म लोक भी पहुँचते हो, तब भी आपको वापस जन्म लेना ही पड़ेगा। लेकिन अगर मेरे लोक में, जहाँ मैं हूँ, (सत्यलोक) पहुँचेंगे तो आपका पुनर्जन्म नहीं होगा।

इसीलिए आप को जनालोक के नीचे लोक, में नहीं रहना बल्कि उसको पार करना है। वहाँ से अपने आप ऊपर जाना है। जो जनालोकके नीचे है, उनको बहुत कृषि करना पड़ता है। एक बार जनालोक पार करने से, वहाँ से जो भी आपको करना है, वो करता रहेगा और आगे बढ़ते रहेंगे। वो आसान से हो जायेगा।

क्योंकि हम आत्मायें, इस स्थूल शरीर लेकर भूलोक में रहते है। साथ साथ दूसरा शरीर, मतलब, प्राणमय शरीर, भी यही होता है।

सूक्ष्म शरीर मतलब मनोमय शरीर के साथ, भुवर्लोक और सुवर्लोक पहुँचते है। वहाँ हम स्थूल शरीर के साथ नहीं पहुँच सकते है। वैसे ही मनोमय शरीर को छोड़ने के बाद ही कारण शरीर के साथ जनालोक पहुँच सकते है। वहाँ पर अपना भविश्य का निर्णय लेकर, प्लान बनाकर जन्म लेते है।

इसके बाद जो महा कारण शरीर के साथ महान सेवा करने के बाद महाकारण लोक पहुँचते है।

वैसे, भूलोक में तपस्वी लोग, मतलब, जो इच्छाओं और संकल्पों के

बिना ध्यान करते है, विष्वमय शरीर के साथ तपोलोक पहुँचते है।

ऐसे जो भूलोक पर सत्य दर्शन का अनुभव कर कर अपना निर्वाणमय शरीर के साथ सत्यलोक पहुँचते है। विश्वमय शरीर के साथ सत्य लोक नहीं पहुँच सकते है, न महाकारण शरीर के साथ तपोलोक पहुँच सकते है।

इससे पहले हम बात कर चुके है कि महान महान सेवा करके, मतलब जैसे गांधीजी या मदर टरेसा जो निस्वार्थ सेवा किए है, वो महालोक पहुँचेगें। लेकिन उनको फिर से भूलोक में जन्म लेना पड़ेगा और कठोर ध्यान साधना कर कर, ये समस्त जीवों से मैं अलग नहीं हूँ, का अनुभव करना है, तब तक वो तपोलोक नहीं पहुँचेगें।

वहाँ से फिर भूलोक आकर और कठोर ध्यान साधना कर कर सत्य को अनुभव करते है। मतलब आपको यहाँ भूलोक में आत्मा की तरह जीना है, और पूरी तरह आत्मा का ही प्रामुख्यता देना है। जैसे रमन महर्शि या स्वामी विवेकानन्द।

वे लोग सिर्फ अपनी जरूरतों को देखकर हर समय आत्मा की तरह जीते है। उनका काम, बोलना, कार्यक्रम, सब आत्मा का संबंधित होता है।

उदाहरण के लिए एक शादी है। उस वक्त आपको ३ दिवसिये भीमवरम क्लास भी है। सहज है कि आप समझेंगे कि हर महीने क्लास होता है लेकिन मैरेज तो नहीं? तो आप शादी में जायेंगे तो आप शरीर को प्रामुख्यता दिया है। अगर क्लास में ही जाते तो वे आत्मा को प्रामुख्यता देना होता है।

इसलिए अगर आप आत्मा के स्थिति में रहते है, तब पहले आत्मा को ही प्रामुख्यता देते है, शरीर को नहीं। हम सबको कहते हैं कि 50 प्रतिशत शरीर को और 50 प्रतिशत आत्मा को प्रामुख्यता देने के लिए। ऐसे जीते जीते उस प्रतिशत को 60 आत्मा को 40 शरीर को, बाद में (70-30) बाद में (80-20) और उसके बाद 90 प्रतिशत आत्मा को और 10 प्रतिशत शरीर को अगर दे सकता है, तब 100 प्रतिशत आत्मा को अगर दे पायेंगे, धीरे से आत्मा अनुभव में आयेगा।

इससे  पहले आत्मा अनुभव में नहीं आया है। जितना भी साधना करने से, कठोर तपस्या से, जितना सिध्दि प्राप्त करने से या शक्तियों होने से या अद्‌भुतों को प्रदर्शित करने से, आपको सत्य अनुभव में नहीं आया है, और सत्यलोक नहीं पहुँचते है।

ऐसे लोग अगर धीरे-धीरे कठोर साधना बढ़ाऐगें तब धीरे से सत्य का अनुभव करते है और तब वो सत्य लोक पहुँचते है।

ऐसे साधना करते करते आप को क्या मालूम होगा? कि मैं असलियत में कहा हूँ? अभी तक 'मैं' कर रहा था अगर 'मैं' तो कुछ भी नहीं, सब परमात्मा  ही है, वो परब्रह्म ही है। वो आत्मा ही 'मैं' हूँ, का अनुभव होता है। इसलिए आत्मा की तरह जीते है।

ये सहज बात है कि उस पूर्णात्म से आया हुआ आत्मा, शरीर में आकर अपनी असली मैं को भूल कर नया मैं आ जाता है। वो नया मैं इस संसार में आकर ये मेरा है, वो मेरा लोग है, समझकर जीता है। लेकिन मरने के बाद, मैं और मेरा सब छोड़ता है और अगला जनम मैं नया लेते है।

जब ये सत्य को समझ में आयेगा कि यहाँ पर कुछ अलग नहीं है, सक एब ही है, वो ही आत्मा ही ब्रह्मं है, और सब कुछ रहते हुए भी नहीं है, का समझ आता है। अगर नहीं समझेगें तो हमारा मूर्खत्व और अज्ञान ही है। ऐसे लोग नीचे लोक में ही रहते है।

इसलिए सब को धीरे-धीरे विचार कर कर धीर से, पत्रीजी का कहने वाले साधना करेंगे, तब मन को प्रामुख्यता कम हो जायेगा, और मन शूण्य हो जायेगा।

अगर मन शूण्य हो गया तो, मैं, कहाँ होगा? तब असली मैं का अनुभव शुरू होता है । मतलब मैं शरीर हूँ का सोच निकल जाता है। जब शरीर का सोच निकल गया, तो बचा सिर्फ असली मैं, अनुभव में आता है।

ऐसे स्थिति में पहुँचने के बाद हम सत्यलोक पहुँचते है। परमात्मा होगें और सह सृष्टिकरता बनते है।

इसलिए ध्यान साधना कर कर ऐसे स्थिति पहुँचना है। मतलब जब तक जनलोक को पार नहीं करेंगे तो ऐसी स्थिति में नहीं पहुँचेंगे। तो पहले जनालोक पार करने का आकांक्षा बढ़ाना है। और इसके लिए पहले हमें जनालोक पार करने का फायदे जानना चाहिए। तभी किसी को प्रेरणा मिलेगा। और ऐसे ही हम ये भी जानेगें कि जनालोक के ऊपर तीन लोक पहुँचने का अर्हत क्या है।

फायदे जानेंगे तो दृडनिश्चय से साधना करेंगे और हासिल करेंगे, ऐसे ही हमे जानना जरूरी है कि अर्हत कैसे मिलेगा।

अभी हम ये ही जानेंगे। श्रीकृष्ण और पत्रीजी का बहुत विषयों पर पहले ही बात कर चुके है। उन सब को अच्छी तरह से अध्ययन करना और देख लेना कि आप में वो लक्षण है कि नहीं। अगर वो सारे लक्षण आप में आ रहे है तो आप जनालोक पार करने का अर्हत पा रहे हो।

पत्रीजी कहते है कि "अगर छोटा सा भी दुख है आप के अंदर, तो आप अभी भी अज्ञान में है"। मतलब अगर किसी भी चीज, तुम्हें दुख दे रहा है, जैसे मेरी जीवन बर्वाद हो गया, मेरे को क्या कष्ट आया है। जैसा कारोना आया है तो दुखी नहीं रहना है। आप अपने आप से पूछना है, वो हमे क्या करेगा?

हम आत्मा है, कारोना क्या करेगा, आत्मा को? भगवत गीता में पड़े है ना?

श्लोक - **नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक ।**

**न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।।** (भ.ग. **2-23**)

तात्पर्य - आत्मा को अग्नि दहन नहीं कर सकता, शस्त्र कुछ नहीं कर सकता, न ही जल उनको भिगो सकता, वायू भुजा नहीं सकता, इसलिए आत्म नित्य है, शाश्वत है। उस आत्मा को कौन क्या कर सकता है। कारोना भी कुछ नहीं कर सकता है।

याद रखिए मैं आत्मा हूँ, तभी कारोना मुझे कुछ नहीं किया। मुझे कोई दिक्कत नहीं है। यह बात सिर्फ एक ज्ञानी ही समझेगा और इसलिए कोई चिंता नहीं रखता है।

इसलिए कौन कब मरेगा तो किसी को मालूम नहीं है। थोड़ी ही देर में जा सकते है। इसलिए अभी जो करना है वो सब करने से हमें बाद में नष्ट नहीं होगा। और मरने से क्यों डरेंगें जब हमें लाभ मिलेगा? वो ही डरेगा, जिसको लगता है कि उन्हें नष्ट हो रहा है।

जो भी मौत से डरता है, समझो कि वो अपने आत्मा को या आत्मा का लाभ में कुछ भी नहीं कर सकता है। वो ध्यान नहीं करते, ज्ञानियों का किताबें नहीं पढ़ते, ज्ञानियों का सांगत्य भी नहीं करते, आत्मा सेवा नहीं करते और थोड़ा सा भी आत्म ज्ञान प्राप्त नहीं करते है। सिर्फ उनको पैसे ही पैसे और पद चाहिए, नाम कमाना। उन्हीं के लिए वो अपना पूरा जीवन लगे रहते है। आत्मा के लिए कुछ नहीं करते है, न प्राप्त करेंगे।

ऐसे लोग मरते वक्त उन्हें डर लगता है कि मेरा सम्पति चले जायेगा। पद चले जायेगा और सब चीज। वो भी नहीं, उनको अपनी पत्नी, बच्चे पर बहुत ममता होता है। इसलिए उन्हें डर लगता है कि वो सब दूर हो जायेंगे। ये सब अज्ञान की वजह से होता है।

अगर वो आत्म ज्ञान प्राप्त करते है, तो समझेंगे कि सब एक ही है और मैं सब कुछ हूँ। ऐसे ज्ञान लेकर मर जायेंगे तो इस स्थिति से आगे बढ़ेगें और उच्च जन्म ले सकते है, तब वो मौत से नहीं डरेंगे। आराम से, संतोष से निकल जायेगें।

इसीलिए समझिए कि मौत का मतलब पुराना कपड़ा को छोड़कर नया पहनना। मतलब आत्मा अपना पुराना शरीर को छोड़कर नया शरीर लेना। यही बात भगवद् गीता में कहा है -

श्लोक **वासांसि जीर्णनि यधा विहाया नवानि गृहणाति नयोपराणि।**

**तथा शारीयणि विहाय जीर्णा न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।**

**(भ.गी.2-22)**

तात्पर्य - जैसे कि पुराने फटे कपडे को छोडकर नया कपड़ा पहनते हो, वैसे ही आत्मा इस शरीर को छोड़कर नया शरीर लेता है।

इस शरीर के साथ जो करना था, वो कर लिया। अब आगे कर्म करने के लिए दूसरा नया शरीर चाहिए। इसलिए पुराने को छोड़कर नया लेते है, पत्रीजी यही बात को समझाते है।

लेकिन यहाँ करना क्या है? जो करना है करना चाहिए, जो हासिल करना वो भी और जो ज्ञान प्राप्ति करना है वो भी करना है। इसकेलिए जितना ध्यान कर सकते है, उतना करना है, जब वक्त मिले तो किताबें पढ़ना है, ऐसे क्लास में आना चाहिए। हम भाग्यशाली है कि अब यू-ट्यूब है। उसमें PMC चेनेल में पत्रीजी का प्रवचन भी देख सकते है। तब आपको एक एक विषय का ज्ञान मिलता रहता है और आपके अन्दर दुख नहीं रहेगा।

श्रीराम से अलग होकर भी माता सीता ने शोक नहीं जताया। उसने ध्यान किया और उसी स्थिति में रह गई। वो महा ज्ञानि है। इसलिए उनको पता था कि श्रीराम आयेंगे और रावण का वध करेंगे। रावण मूर्ख था। इसलिए न केवल अपने आप को नष्ट किया बल्कि पूरी जाति को नाश कर दिया।

वशिष्ट महर्षि कहते है कि आत्म ज्ञानि, धन को देखकर खुशी से नहीं डूबता, या पद को पाने से, गर्व नहीं होता है, और बल्कि ऐसे लोगों को देखकर आत्म ज्ञानी को सहानूभूति होता है।

क्योंकि अज्ञानि समझता है कि ये सब शाश्वत है और उनको पता नहीं है कि एक दिन सब दूर हो जायेंगे। इसलिए वशिष्ट महर्षि कहते है कि आत्मा ज्ञानी उनको देखकर सहानूभूति जताया। माता सीता ने भी रावण को सहानुभूति जताया।

हमें भी ऐसे होना चाहिए। क्यों कि जिसने भी हमें कष्ट दिया, या नष्ट किया उन्हें प्रकृति हिसाफ करती है।

रमन महर्षि का जीवन का एक विषय को प्रस्ताव करते है। उनके आश्रम में एक बार एक चोर पहुँचा था। वो चोर समझाता कि वहाँ बहुत भक्त लोग आ रहे है तो बहुत सामान दिये होगें। इसलिए वो चोरी करने आये थे इस सामान को।

जब रमन महर्षि ने इसको देखा था, और चोर को अन्दर आने के बाद कहा कि, है भाई आज रात को तुमने यहाँ चोरी करने आये हो। तो एक काम कर, मैं अभी निकल जाता हूँ, जो भी तुम्हें चाहिए, सब बोरी में भर कर ले जाओ। क्योंकि अगर मैं इधर हूँ, तुम शर्माओंगे। नहीं रहूँगा तो अपनी खुशी से ले सकते हो। उसको अन्दर छोड़कर बाहर आ गया। तब चोर ने उनका पैर पड़ गया था।

रमन महर्षि को कुछ सामान खोने का डर नहीं था। इस स्थिति पर पहुँचे है। हमें भी उसी स्थिति तक पहुँचना है।

मैंने एक बार पत्रीजी को ट्रेन में छोड़ने गया था। तब वो बैठा था और मैं खड़ा हुआ था। मैं देख रहा था कि वो किसी भिखारी पर ज्यादा ध्यान नहीं देता था।

और बोलते थे कि वो अपनी पुराने जनम में ऐसा कुछ किया होगा, कि इस जनम में उसी का परिणाम अनुभव कर रहा है। इसी तरह कोई अंग वैकल्य हो, या अंधे हो, ऐसे लोगों पर सहानुभूति का मतलब हीं नहीं है।

याद रखिए कि ये सब लोग को देखकर हमें बहुत सहानुभूति होता है। लेकिन सोचिएगा कि उनको ऐसे क्यों हुआ? ये प्रकृति का निर्णय है। प्रकृति मतलब भगवान? सृष्टिकर्ता? मतलब वो इतना कठोर है क्या? सोचिए एक बार?

भगवान ने इतना कठोर शिक्षा क्यों दिया? उनका निर्णय गलत नहीं है ना? वो सब सही निर्णय लेता है। क्योंकि वो आदमी पूर्व जन्म में अपनी अज्ञान

से बहुत लोगों को कष्ट किया होगा या नष्ट किया होगा।

उसने वो जानवारों को, प्राणियों को, साथ वालों को बहुत हानि किया है। उसने ऐसे क्यों किया? क्योंकि उनका बाधा या दुख समझ नहीं पाया। उसी बाधा या दुख को उनको अनुभव लाने केलिए उस शिक्षा प्रकृति दिया है। जब अनुभव होगा तब सीख लेगा और आगे उन्नति प्राप्त होगा।

ऐसे करते एक एक जनम में अपने किये हुए गलतियों को सुधार करते है। इसलिए जनम अनुभव करने के लिए और पाठ सीखने केलिए है। और उन्नति प्राप्त करने केलिए और आत्मा को प्रगति करने केलिए है।

ऐसे जब वो कुछ पाप करने बंद किया तो, मतलब आत्मा की थोड़ा प्रगति हुआ। याद रखना जितना तुम पाप या गलतियाँ करने बंद किया, तो उतना आत्मा का उन्नति हुआ। मतलब आपका प्रगति हुआ। इसीलिए पत्रीजी उन भिखारी या अंगवैकल्य लोगों पर ध्यान नहीं देते है।

तब मुझे समझ आया है कि ऐसे लोगों को उपकार करने से कोई फायदा नहीं है। और पुण्य कर्मो की भी जरूरत नहीं है। हमे करना है मुख्ति कर्मो। और आत्म कर्मो। मतलब हमें आत्म सेवा ही करना है। श्रीकृष्ण ने कहा है -

श्लोक - **यो न ह्यष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।**

**शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः (भ.गी. 12-17)**

तात्पर्य - जिसमें संतोश नहीं होता, ध्वेश नहीं करता, शोक नहीं होता, जो शुभ और अशुभ छोड़ता, अच्छा-बुरा, पाप-पुण्य। उसी भक्त मुझे पसंद है।

इसलिए पत्रीजी कहते है कि हमे न केवल पाप कर्म छोड़ना है, बल्कि पुण्य कर्मो को भी छोड़ना है। और सिर्फ आत्म कर्मो ही करना चाहिए। जब हम ऐसे हो सकते है, तब हम जनालोक पार करेंगे। और ऊपर लोक और अंत में सत्यलोक पाने का अर्हत प्राप्त करते है। इसलिए एक एक चीज आचरण में लाना है। पत्रीजी को अनुसार करेगें तो, आचरण में लायेंगे तो, जरूर सत्यलोक पाने का अर्हत मिलेगा।

# जनालोक पार करने वाले को इच्छा जन्म होता है।

जब हम ऊपर लोकों का महत्व जानेंगे तब हम वहॉं पहुँचने का प्रयास करेंगे। इसलिए जनालोक के ऊपर महालोक और तपोलोक पहुँचने का फायदे जानते है।

देखिए हम अपने बच्चों को अच्छे-अच्छे स्कूलों में पढ़ाने के लिए भेजते है, बल्कि मामूली स्कूलों में नहीं। क्योंकि वहॉं बच्चे कोई रिक्षावाला का लड़का होगा या मजदूरों के बच्चे होंगे। अगर अपने बच्चों को ऐसे स्कूलों में भेजेंगे तो उनका संगत्य में रहते है और स्नेह होता है।

कुछ समय बाद उन लोगों की तरह यह भी बन जायेगा। लेकिन अच्छे स्कूल में भेजेंगे तो सोसईटी का उच्च लोग के बच्चे रहेंगे। जैसे कोई कलेक्टर का, या डाक्टरों का या मिनिस्टर के बच्चे रहेंगे। तब उनका सांगत्य और स्नेह हो जायेगा और उनकी तरह की बातें या पढ़ाई अमेरिका जाने का या आस्ट्रेलियॉं या ब्रिटेन जाने की तैयारी में रहता है। ये सब बड़ी बड़ी विषयों को अपने दोस्तों से या उनके माता पिता के द्वारा जानता है।

और जब पढ़ाई खत्म होता है उनका स्नेह जीवन पर्याप्त तक रहता है। इनके साथ रहने से, जीवन में उच्च स्थान पहुँच पायेंगे। और कोई भी काम आसान से हो जायेगा, तभी ऐसे स्कूलों में पढ़ाई करने केलिए उत्सुक होते है।

अगर मामूली स्कूलों में भेजते हो अपने बचचों को, तब वहॉं रिक्षा वाला और मजदूर लोगों के बचचे के साथ पढ़ने में क्या होगा? उनके घर में मॉं बाप पीकर झगड़ा करते रहते है और गालियॉं देते रहते होंगे और उन बच्चे यह सब देखकर स्कूल में यही बातें चलता रहता है। जैसे वो बोलेगे कि मेरे बाप ने मेरी मॉं को मारा, घर से निकाल दिया, और हम सब को छोड़कर चली गयी। यही विषयों की बात होती है। और आखिर में भी ऐसे ही पियक्कड़ बनेगा और सिगरेट और जो भी उनके आदते रहेगें वो सब होगा।

इसलिए कोई भी मामूली स्कूलों में भेजने का नहीं सोचते है और उत्तम स्कूल में भेजने का सोचते है। वहाँ पर बच्चों का भविष्य हर तरह अच्छा होगा।

इसी तरह अगर आप जनालोक के नीचे लोक मतलब भुवर्लोक पहुँचते हो, वहाँ पर आप से पहले कुछ पापी, गलत, हिसांयुक्त लोग होंगे और आप को उनकी सांगत्य मिलेगा। उनको क्या जानकारी है। सिर्फ किसको मारा कैसे मारा, नहीं तो बकरा खाया, मुर्गी खाया, लड़ाई झगड़ा किया, यही बातें चलती रहती है उससे ज्यादा जानकारी नहीं है।

लेकिन अगर जनालोक के ऊपर मतलब महालोक पहुँचते है, वहाँ एक महात्मा गान्धी या मदर टेरेसा जैसे लोगों का सांगत्य मिलता है। अगर आप एक पियककड़ का सांगत्य होता, या जूआ खेलेने वालों के साथ सांगत्य होता या किसी खूनी का सांगत्य होता, क्या होगा? इसी प्रकार अगर महान लोगों के साथ, जैसे गांधी जी या अन्य लोग, तब क्या होगा? उनके बातों सुनने आदर्शनीय होते है। अभी भी उनके विषयों का चर्चा होता है। अगर उनका सांगत्य होगा तो कैसे होगा, सोचना?

ऐसे ही अगर हम तपोलोक पहुँचते है, वहाँ तपस्वी लोग मतलब साधना किये लोग होंगे, मतलब त्रषियों, महर्षियों आदि। वो सब तपस्या कर कर बहुत ज्ञान प्राप्त किये है। उन लोगों के साथ सांगत्य होगा तो ज्ञान होगा, इसके अलावा कुछ नहीं।

वहाँ आपको मालूम पड़ेगा कि थोड़ी और मेहनत से जीवन लक्ष्य मतलब सत्यलोक पहुँच सकते है। और भी बहुत महान कार्य कर सकते है, आत्मज्ञान और बढ़ाने का इच्छा रखेंगे।

साधना करने में बहुत सूचनाएँ जानेंगे, कठोर साधना में आपका पाया हुआ अतीन्द्रीय शक्तियों का इस्तेमाल करना सीखेंगे।

जब ऐसे लोगों के सांगत्य होता है, आप लोगों का आत्माज्ञान का अवगाहन बढ़ता है और उनका लक्ष्य साफ दिखता है। अगली बार जब जनम

लेते है तब ये सब ज्ञान आत्मा से सीधा मिलता है। तब वो ही कर्मो करते रहते है।

देखिए अगर आप भीमवरम आत्म ज्ञान शिविर में आये है तो वो आपका अन्तर्वाणि हि का प्रोत्साहन है न? नहीं तो क्यों आयेंगे? ऐसे लोग आत्मज्ञाान का, और ज्ञान संबंधित कर्मो ही करते है। वो सत्यलोक पहुँचने का कठोर प्रयत्न करते है। इसलिए अगर जनालोक पार कर सकते हैं तब अपने आप को भाग्यशाली समझे। सब को इसी का प्रयास करना चाहिए।

ये भी नहीं, अगर जनालोक के नीचे होगें तो आपको सिर्फ आपका किया हुआ कर्मो का चिट्ठा से ही चुनना पड़ेगा। और उसी को जन्म लेकर अनुभव करना है। ज्यादा पापी हो तो पापों से ही चुनना पड़ता है। अच्छा जीवन कैसे मिलेगा?

मगर जनालोक के ऊपर पहुँचेगें तो उन योगी लोग का जन्म अपनी मर्जी से होता है। वो तपस्या कर कर अपना जन्म, कर्म राहित्य बना दिये है। इसलिए उनका जन्म अपने मर्जी से होता है। और जो भी उनका उन्नति केलिए सहाय करेगा, वैसे ही जन्म लेते है। अपना परिवार चुनते है।

इसी विषय भगवद् गीता में कह चुका है, श्रीकृष्ण ने, योगी जब मरते है, उनका क्या होता है?

श्लोक - **प्राप्य पुण्यकृतां लोका- नुषित्वा शाश्वतीः समाः ।**
**शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते (भ.गी.6-41)**

तात्पर्य - योगभ्रष्टी, मतलब जिसका योग समाप्त होने से पहले मर जाता है, जब शरीर छोड़ेगा, तब पुण्य लोकों में कुछ सालों तक रहकर, बाद में परिशुद्ध महान के घरों में जन्म लेता है।

**अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम ।**
**एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम ।। (भ.गी.6-42)**

तात्पर्य - ज्ञानी और योगी लोगों के वंश में जन्म लेते है। ऐसे जनम लेना बहुत

दुर्लभ है।

क्यों ये सब जानने की जरूरत है? क्यों कि जब जानेंगे आपका कृषि बढ़ेगा और दृढ़निश्चयता बड़ेगा।

इसलिए पत्रीजी "मौत से पहले ही मरना है" को कहते है। मतलब मरने के बाद का जीवन के बारे में जानना चाहिए। तभी जीवन में मालूम होगा कि क्या करना चाहिए। इस बातों को, बहुत योगी लोग और अतीन्द्रीय शक्तियों प्राप्त करने वाले लोग ने, योगीश्वर लोग ने, बताये है।

इसलिए ये सब जानकर अपना साधना और कठोरता से करेगें और ऊपर लोक जाने का अर्हत प्राप्त कर सकते है। नहीं तो और जन्म लेते रहते है।

इसलिए सब को जनालोक में रूकना नहीं। उसको पार करने का प्रयत्न करना चाहिए। उस केलिए आपको सात्विक गुण तक रूकना नहीं, आगे परिसात्विक और महा परिसात्विक गुण तक पहुँचना है। ये इतना आसान नहीं है।

एक मुम्मिडिवरम बालयोगी जैसे, रमन महर्षि जैसे, विवेकानन्द जैसे बीरब्र्म्हेन्द्र स्वामी जैसे कठोरता से साधना करना है। आहार का नियम पालन करना है। ज्ञान प्राप्त करना है। तभी कोई हासिल कर सकता है।

# अगर मरने के बाद के बारे में जानेंगे तो क्या फायदें।

परम योगी कबीर कहते है कि "जिस मौत से दुनिया डरता है, उसी को प्राप्त करने में मुझे आनन्द है।"

गुरू नानक ने कहा है कि "जीवन मरन प्राप्ति करने वाला योग के लिए हम सब को कृषि करना चाहिए।"

बैबिल के सुवातों में सैंट पाल ने कहा है कि "मैं हर वक्त (नित्य) मरता रहता हूँ।"

मुहमम्मद महान ये कहा है कि "मौत से पहले ही मरना सीखों।"

दादु महात्मा ने कहा है कि "एक जिन्दा लाष जैसे जीना सीखों, तभी आपको प्रभु का दर्शन होगा"।

और ये भी कहा है कि सब लोगों की तरह नहीं, बल्कि "मोत से पहले ही मरना सीखो, और मरना है। नहीं तो कुछ फायदा नहीं है।"

अगर हमें ये सब बातों का समझना है तो मरने के बाद का जीवन के बारे में जानना चाहिए।

क्योंकि मरने के बाद का जीवन जानेगें तो बहुत फायदे है। मुख्यतः जीते हुए ही कुछ भय दूर हो जायेंगे। और जो काम नहीं करना वो सब छोड़ते है और सिर्फ आत्म को लाभ पहुँचाने वाले कर्मो ही करते है। और ज्ञान प्राप्ति करते है।

मुख्यतः कि मौत से डरेंगे नहीं। और अपने आपको शरीर नहीं समझेगें और आत्मा का अवगाहन होगा। यही विषय जीते हुए नहीं समझते है, लेकिन मरने के बाद बहुत अच्छी तरह समझते है।

क्योंकि मरने के बाद भौतिक शरीर कांट पर लेटता है और आत्मा हवा में उडता है। तभी जब नीचे देखेंगे उन्हें आश्चर्य होगा यहाँ भी हूँ और उधर भी हूँ, मगर वो कौन है? वो संदेह में आता है।

बाद में पता चलता है कि जो हवा में उड़ रहा है, वो ही असली मैं हूँ,

पहली बार उन्हें अब मालूम पड़ता है, कि वो शरीर नहीं है का अनुभव होता है।

इधर-उधर घूमता है, पत्नी के पास जाकर रोने का मना करता है, क्योंकि वो यही है। लेकिन कोई सुनने वाला नहीं है। सबके पास घूमता रहता है और बताने को कोशिश करता है कि वो वही है और मरा नहीं। लेकिन कोई भी उनको देख नहीं सकते और न हीं सुन सकते है। इसलिए सब लोग उसे मरे हुए समझकर रोते रहते है।

तभी उनको मालूम पड़ता है कि उनको मौत नहीं है।

जब जीवित है अगर कोई मौत के बाद का जीवन के बारे में जानेगें तो उनहें पहले ही मालूम पड़ता है कि वो शरीर नहीं है, और आत्मा है। इसलिए मौत भी नहीं है, क्योंकि शरीर मरता है आत्मा नहीं। ये बात स्पष्ट होता है।

इसलिए जिन को मौत के बाद का जीवन के बारे में जानते, उन्हें कोई कारोना या रोग होने से डरता नहीं। क्योंकि उन्हें अच्छी तरह मालूम है कि उन्हें मौत नहीं है।

दुनिया में बहुत लोगों को किसी न किसी चीज से डर रहता है। अगर ये डर से दूर होना है तो उन्हें मौत के बाद का जीवन जानना चाहिए। ये ही नहीं और भी बहुत कुछ लाभ है। उनका करने वाले काम बदल जाते है। क्योंकि अब तक सारे काम सिर्फ शरीर केलिए किया है। जब मालूम पड़ता कि वो आत्मा है, शरीर नहीं, तब से वो आत्मा को लाभ करने वाला कर्मो को ज्यादा प्रामुख्यता देता है। और शरीर के सेवा बंद करते है और आत्मा का सेवा शुरू करते है। इसी तरह सब कर्मो में बदलाव होता है।

मरने से पहले जितना भी कोशिश करें, तो उनहें समझ में नहीं आता कि वो शरीर नहीं है, बल्कि आत्मा है। मरने के बाद अच्छी तरह समझता है। ये ही नहीं उनका कर्तव्यों में बदलाव आता है। देखिए अगर हम किसी से ध्यान करने को बोलते है और किताबे पढ़ने को कहते वो मना करता है कि उनहें वक्त नहीं मिलता, उन्हें बहुत कुछ कर्तव्य है।

अगर पुरूष है तो उनका कर्तव्यों में धन कमाना, परिवार का देखभाल करना। तो कहते है कि समय नहीं क्योंकि सुबह जाना है और देर से रात को आते है, इसलिए नहीं कर सकते है। ऐसे कहते है।

अगर स्त्री है तो उनहें घर का देखभाल करना है, बच्चों के देखना है, ये सब उनका कर्तव्य है। इसलिए उन्हें समय नहीं मिलता, ऐसे कहते है।

सब लोग यही कर्तव्य समझ कर उसी पर ध्यान देते है, और करते है। लेकिन ये सब, जब अपने आप को शरीर मान कर चलते है। जब उन्हें जाना है कि, वो आत्मा है, तब अपनी सारी कर्तव्यों बदलते है।

मतलब आत्मा का कर्तव्य क्या है, आत्मा को क्या लाभ देता है। और उन्हें समझ में आता है कि जो आत्मा को चाहिए, वो ही उनका कर्तव्य है। मतलब आत्मा को आत्मज्ञान चाहिए। इसलिए ध्यान करना है।

पत्रीजी का किताबे पढ़ते है, ज्ञानी लोगों का पुस्तक पढ़ते है और आत्मज्ञान का संदेशों सुनते है।

ये सब इसीलिए कि वो आत्मा है, और उनको ज्ञान चाहिए और वो ही उनके साथ जायेगा। और वो ही उन्हें लाभदायक है। इससे पहले पुरूष समझकर धन कमाना कर्तवय था, स्त्री समझकर घर का देखभाल कर्तवय था, लेकिन अब आत्मा को ज्ञान प्राप्त करने का कर्तव्य है।

इसी प्रकार प्रामुख्यताओं भी बदल जायेंगे, पहले शारीरिक विषयों को प्रामुख्यता देते थे, अब आत्म संबंधित विषयों को प्रामुख्यता देते है। जैसे मेरे ही जीवन में पहले मैं हर शादी में जाता था, अब छोड़ दिया। कोई भी फंक्सन में चले जाते थे। जैसे जनम दिन हुआ, आदि। वो सब छोड़ दिया, क्योंकि सब समय का बर्वाद है। इससे अच्छा कहीं जाकर ध्यान क्लास बता सकते है। उससे हमारा ज्ञान भी बड़ेगा और नहीं तो हम बैठे किताबे पढ़ सकते है। नहीं तो २-३ घंटो बैठकर ध्यान कर सकते है, इन्हीं को प्रामुख्यता देते है।

इसलिए जिसको अपने आप को आत्मा का अवगाहन है वो शारीरिक व्यवहारों वो प्रामुख्यता नहीं देते है बलिक आत्म संबंधित कार्यक्रमों को देते है।

जैसे ३ दिवसीये भीमवरम क्लास को जाते है, अगर शादी भी हो वे छोड़कर क्लास में जाते है।

अगर भीमवरम आयेगे तो आत्मा को प्रामुख्यता देना और दूसरे कार्यक्रम में जायेंगे, तो शरीर को प्रामुख्यता देना। मौत से पहले मरने वाले लोगों का ऐसे बहुत सारे विषयों में बदलाव आयेगा। वो आत्मा को लाभदायक देने वाले सेवा में ही रहता है।

इसी तरह अपना समय, वाक, धन सब आत्मा को लाभ देने वाले विषयों में ही खर्च करते है। इसलिए बड़ों का कहना है कि मौत से पहले ही मरने के बाद वाला जीवन जानना चाहिए।

मेरे जीवन में भी यही हुआ। जब मुझे पत्रीजी को परिचय से पता लगा कि मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं, मैंने अपने सारे रैस मिल का कारोबार बंद कर दिया। एक उचित होमियों अस्पताल भी बंद कर दिया। इसी तरह मेरी मैडम ने हर रोज 200-300 स्त्रीयों को उचित में ट्रेयनिंग सेंटर होता था। वहाँ 2, 3 लोगों को रखकर सेलरी देकर, उन स्त्रीयों को उचित में सिखाते थे। वो भी बंद कर दिया। क्योंकि वो सब शरीर के संबंध कार्यक्रम है और शरीर को लाभदायक है।

अब मैडम सिर्फ आत्मा कि सेवा में है। मतलब आत्म ज्ञान की क्लास बताते है। ज्ञानी लोगों का किताबें पढ़ती है, पहले कुछ बड़ी बड़ी उपन्यास देती थी, अब सिर्फ पत्रीजी का आत्म ज्ञान का विषयों पर ही, क्लास सुनाती है। ऐसे उनका कार्यक्रम और प्रामुख्यताओं में बदलाव आया है।

इसी तरह अगर आप को भी आत्मा का अवगाहन होगा तो, जरूर आपका प्रामुख्यताओं में बदलाव आयेगा। अगर नहीं हुआ तो मतलब शरीर को ही समझकर बैठे हो। हमारे सोसईटी में भी बहुत लोग सिर्फ शारीरिक विषयों को ही प्रामुख्यता दे रहे है। बहुत लोग जो ध्यान करते है वो समझते है कि सारे रोग को कम करने से ही काफी है।

लेकिन जो भी इस ज्ञान मार्ग में आते है, अपने आप आत्मा है, कि

अवगाहन मे रहते है, और वो सब जानेंगे। और उनका सोचने का तरीका भी बदल जाता है। पहले की तरह नहीं होता अभी पूरा अलग होता है।

ऐसे ही जो मौत के बाद का जीवन जाना है वो लोग रक्त संबंधी को नहीं बल्कि आत्म संबंधियों को ज्यादा प्रामुख्यता देते और ज्ञान को कैसे बढ़ाना? मुझे क्या करना, ऐसे सोचते है। इस प्रकार शरीर संबंधित कार्यक्रर्मो को प्रामुख्यता कम कर कर आत्मा संबंधित कार्यक्रमों को प्रामुख्यताओं को बढ़ाव देते है।

और विषयों को जानते है। जैसे किसी को भी, या प्राणि को भी, हानि नहीं करना। जब शरीर सोचा था, सब अलग अलग मानकर जीते थे। अब उन्हें सब में एकता दिखता है और किसी प्राणि को कष्ट नहीं देता है। न खाता है, न कोई पाप करता है, क्योंकि वो भी आत्मयें है। और उनको लहसुन नहीं खाने का, और मासांहार वालों कार्यक्रर्मो में नहीं जाना। बेकार बातों भी बंद करते है और किसी के जीवन में गुसते नहीं है। जितना हो सकेता उतना मौन रहना चाहिए, इस तरह पूरी जीवन ही बदल जायेगा।

जब अपने आप शरीर समझते थे तब गलतियॉं, पाप बहुत किये है। दूसरों को दूशण करना, असूय होना, निन्दा करना आदि किये है।

लेकिन अब जब आपको मालूम हुआ कि आप आत्मा हो, तब सब लोग मैं हूँ और एक हूँ तो किसको गाली देगें? हिसां छोड़ते है। किसी को नीचे नहीं दिखाऐगें। सब कुछ आप ही है तो, किसी को कुछ नहीं करेगें।

इसलिए जब आप जो करना चाहिए वो ही करेंगे, तो सब कुछ अच्छा होगा, और नष्ट नहीं होता। आपका भविष्य पूरा बदल जायेगा।

अभी जैसे भी हो भविष्य तो बहुत अच्छा रहेगा। समय आने पर आप में इतना बदलाव आयेगा कि आप आश्चर्य होंगे।

वो हीं नहीं जब आप को समझ आ गया कि आपको मौत से पहले ही मरना है, तब एक और लाभ है कि, हम न केवल शतकों साल, हजारों सालों का समय बचा कर सकते है। मतलब अपना जनम कम हो जायेंगे, क्योंकि जब

शरीर के भाव में रहते है, सिर्फ जनम के बाद जन्म लेते है और कुछ भी आत्मा को लाभ वाले कर्म नहीं करते है। ऐसे लोगों आत्मा हंतक कहलाते है।

देखिए अगर अपने आप शरीर को खत्म करते है, वो आत्महत्या कहते है। जैसे अग्नि में कूदना, फासी करना आदि। और अगर दूसरों ने किया तो हत्या कहते है।

लेकिन पूरा जीवन में अगर आत्मा के बारे में नहीं सोचेंगे तो आत्मा हंतक कहलाते है।

असल में आत्मा भूलोक में क्यों आया है? वो क्या करना है? मतलब आत्मा अपने लाभ के लिए ही आया है। और आत्म लाभदायक कर्म करने आया है। लेकिन पूरा जीवन आत्मा के लाभ के लिए कुछ नहीं किया, सिर्फ शरीर को लाभदायक कर्म किये है। ऐसे लोगों को आत्मा हंतक कहलाते है।

मतलब वो जन्म बेकार हुआ है। ऐसे जितने भी जन्म है वो सब बेकार हुए है। यहॉ एक बात और याद रखना है कि जैसे ही हम मरते है, अगला जन्म नहीं मिलने वाला है। कुछ लोगों का गलत सोचना है।

लेकिन अगला जन्म लेने के लिए कुछ हजारों साल भी लग सकता है। बहुत ही कम लोगों में एक जन्म के बाद अगला जन्म जल्द होता है।

क्योंकि पृथ्वी पर उनको अनुकूलित जन्म देने के लिए मातायें मतलब स्त्री लोग बहुत ही कम है। लेकिन ऊपर लोक में बहुत करोड़ो आत्मा जन्म लेने के लिए बैठे है। इसलिए जन्म उतना आसान से नहीं मिलता है।

पत्रीजी कहते थे कि वो २५०० साल पहले बुद्धा के साथ आननदा करके रहते थे। बाद में एक जन्म में बेंजमिन फ्रेंक्लिन करके जन्म लिया था। एक जनम में ओड़ीशा में लिया था। एक और जन्म में हैदराबाद में हज़रत इनायत खान का जन्म लिया था। अब पत्रीजी बोधन गॉव में जन्म लिया है।

तब मैंने पत्रीजी से पूछा था कि आप बुद्धा के पास २५०० साल पहले था, इतना समय क्यों लगा? तब उसने कहा था कि आपको यहॉ लग रहा है कि हजारों साल है, लेकिन ऊपर पहुॅचेगें तब आपको पता लगेगा कि ये समुन्दर

का एक बूंद है। इसका मतलब यहाँ पृथ्वी पर शतकों साल लगता है, लेकिन ऊपर से देखेंगे तो रोजों के हिसाब है। ये कुछ बड़ा नहीं है।

तब मुझे समझ आया है कि जन्म इतना आसान से नहीं मिलता है। तब इस जीवन जो मिला उसको बेकार थोड़ी करेंगे? सोचिए।

हम पहले समझ चुके हैं कि आपको मरने के बाद सहायक लोग आते है, आपको ले जाने को। अगर सब चीजों पर ममता रखेंगे तो ऊपर नहीं जायेंगे और प्रेतात्मा बन कर रह जायेंगे।

और सहायकों को जाने के बाद आत्म द्वार बंद हो जाते है। और वो इधर उधर भटकते रहते हैं हजारों सालों का बर्वाद करते हुए। कोई यहाँ न देख सकता है ना सुन सकता है और सब अपने अपने कर्मो में लगे हुए है।

बहुत समय बाद उनको लगेगा कि अब यहाँ नहीं रहना और जब कठोर इच्छा होगा, वापस जाने का, तभी कोई ऊपर से आते है और वापस लेके जाते है।

ऐसे लोगों को कुछ समय केलिए अच्छा रहता है, अपना घर देखना, बच्चों, पत्नी को, आदि, लेकिन एक समय बाद उसे लगता है कि यहाँ सब अपने काम में लगे है तो यहाँ रहना कोई मतलब नहीं है। अगर मान लो वो पहचान भी लिया, इनको ये तो कुछ भी नहीं कर सकता। उनके लिए क्या कर सकता है? पूरा समय बेकार हो गया।

लेकिन जब आप मौत से पहले ही मरते है, मतलब मरने के बाद ऊपर लोक जाने के बारे में जानेंगे, तब सहायाकों के साथ सीधा चले जायेगा, और हजारों सालों का समय बच जायेगा।

इसलिए आप जब मौत से पहले ही मरते है, तब आपको किसी पर ममता नहीं रह कर, सहायकों के साथ चले जाते है।

लेकिन जिसको अवगाहन नहीं है, पूरा जीवन रोते रोते बैठते है। और भगवान को निन्दा करते है कि मैंने बहुत पूजा किया, वो किया, ये किया, करते रहते है। मुझसे अन्याय क्यों किया करते पूछते है? और दुखित रह जाते हैं।

और ये भी कहेंगे, मैंने अपना जीवन में किसी को अन्याय नहीं किया, कोई भी पाप नहीं किया, क्यों मेरे साथ ऐसे हो रहा है। और कुछ लोग अगर छोटी उम्र में ही मर जाते है, तब तो दुखित होकर पूरा जीवन नष्ट करते है। सब कुछ होगा, धन, दौलत, लेकिन दुखी ही रहते है। और सोचते है कि इससे अच्छा मर जाऊँ तो अच्छा है।

मगर आप जानेंगे कि आप आत्मा है, आप जानेंगे कि आपको मौत नहीं होनी और तब ये किसी के ऊपर अपना ममता नहीं बढ़ाते है। और इन केलिए पाप और गलत कर्म नहीं करेंगे, अपना भविष्य को नष्ट नहीं करेंगे।

और भी समझ आयेगा कि जिसके, अपना, समझ रहा था उनसे कोई संबंध नहीं है।

जैसे अर्जुन ने जाना है कि अभिमन्यु के साथ कुछ संबंध नहीं है। श्रीकृष्ण के सहारे वो ऊपर लोक में गया, जहाँ अभिमन्यु था। और उनसे बात करने कोशिश किया। अभिमन्यु ने पूछा कि आप कौन हो? तब अर्जुन को समझ में आया कि मरने वालों के साथ कोई संबंध नहीं रहता है।

ऐसे बहुत लोग तब तक वो मेरा है, समझ कर बैठे रहे है। लेकिन मरने के बाद समझ आता है कि वो मेरे नहीं है। इसलिए शंकराचार्य जी ने कहा है

श्लोक - **कांते कांता कसते पुत्रः**
**संसारो यमतीव विचित्रः**
**कस्य त्वं कः कुत आयातः**
**तत्वम चिन्तय तहिद भ्रातः**

बहुत स्पष्टता से कहा है।

तात्पर्य - आपका पत्नी कौन है? आपका पुत्र कौन है? ये संसार बहुत विचित्र है। असली में आप कौन हो? कहाँ से आया है। भैया, इस लोक में कभी न कभी आप इस विषयों पर विचारण करने को कहा है।

उसने ये कहा है कि उनका, आपके साथ कोई संबंध नहीं है। ये विचारण करने से समझ आयेगा।

ना किसी संबंधी केलिए, आप पाप और गलत कर्म करते है। पहले आप जानिए आप कौन हो? आप जो करना है वो नहीं कर रहे हो। इसलिए आप आत्म तत्व विचारण करना है और ये भी कहा -

श्लोक - **कस्त्वं कोहं कुतः आयातः**

**कामे जननी कामे तातः**

**इति परि भावय सर्वम सारं**

**विश्वं तत्व स्वप्न विचारं, कहा था।**

तात्पर्य - मैं कौन हूँ, मैं कहा से आया हूँ, मेरी माँ कौन है। मेरा पिता कौन है। सारहीन और स्वप्न तुल्य इस विश्व को, इस विचारण कर कर छोडना चाहिए। शंकराचार्य जी ने कहा है।

और ये ही नहीं, बहुत कुछ जानेंगे जब मौत से पहले मरेंगे तो, मतलब मौत के बाद का जीवन के बारे में जानेंगे। तब असिलियत मालूम होगा कि जो भी हो रहा यह सब सिनेमा जैसा है। एक स्वप्न जैसा ही है। तब तक ये सच समझकर बैठा था, और ये सच जानेंगे कि स्वप्न है।

क्योंकि मरने के बाद सब यहीं छोड़कर चले जाते है। मतलब कोई नहीं होगा और कुछ भी नहीं होगा। लेकिन जब जीवित थे आपका ही ये सब समझकर बैठे थे। अब मालूम होता है कि असली सच क्या है। इसलिए धन सम्पति सब इकट्ठा कर कर मेरा सब कुछ है, समझकर, अब तक बैठा था। अब मालूम पड़ता है कि कुछ भी मेरा नहीं है। न कोई पद, धन, दौलत, बड़ी बड़ी नौकरी, अवार्ड, जिनता भी बड़ा हो, वो सब, मुझे, मतलब आत्मा, को कुछ भी फायदा नहीं है। ये समझेंगे।

इसलिए जिस केलिए अब कष्ट कर रहे हो, जानिए कि वो कुछ भी आप के साथ नहीं आने वाला है। उनके लिए गलत और पाप मत करना।

जैसे सिनी हीरो चिरंजीवी १०० सिनेमा बनाकर बहुत महान समझता है। लेकिन वो सौ क्या पाँच सौ भी करें, लेकिन वो कुछ भी फायदा नहीं है। कोई गिन्निस पुस्तक में नाम लिखवाता है। वो कुछ भी फायदा नहीं है। वो शरीर नहीं रहेगा और वो नाम भी नहीं रहेगा। आखिर में वो भी नहीं रहेगा। वो दूसरा शरीर लेकर कहीं और होगा किसी और नाम लेकर।

इसलिए जिसको ये सब समझ आता वो एक जीवन क्यों बेकार होने देगा? जानिए न कोई **CM** या **PM** या कोई **SP** हो गया कोई मिनिस्टर, कुछ नहीं रहेगा।

आखिर में ये सब स्वप्न जैसे रह जायेगा। तब समझ जायेगा कि जीवन एक दिन का स्वप्न है। ऐसे चीजों पर मोह सब चला जायेगा।

वो ही नहीं, जब मौत से पहले मरते हो, आप समझेंगे कि जीवन एक स्वप्न जैसा है। जैसे स्वप्न में सब सच ही लगता है, लेकिन जब खत्म होता है कुछ भी नहीं रहता है। न कोई कष्ट या संगठन या दुख, जो स्व्प्न में देखा था, कुछ नहीं रहेगा।

देखिए स्वप्न में राजा और स्वपन खत्म होने बाद, न राजा होगा न उसका राज्य। वैसे ही स्वपन में CM हो, तब सब अधिकारी उनको जब नमसकार करते है, वो बहुत गर्व महसूस होता है। लेकिन जब स्वप्न खत्म होगा तब कुछ नहीं रहेगा। यह जीवन भी ऐसे स्वप्न ही है।

वो रात का स्वप्न है और ये दिन का स्वप्न है। लेकिन आखिर में स्वप्न ही है ना? जब उठते है रात को स्वप्न वाला चीज कुछ नहीं रहता। वैसे ही जब मरते है यह जीवन का कुछ नहीं रहेगा। इसलिए ये सब विषयों को याद रखकर अपना जीवन बिताना चाहिए। तब आपको बहुत लाभ मिलेगा।

इसलिए हमें देखना है क्या लाभ देगा? उसी को पाने के लिए प्रयास करना चाहिए। और उनमे से अधिक लाभ है ज्ञान। इसीलिए ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयास करना चाहिए। उस केलिए पत्रीजी का जो कहना है, पालन

करना चाहिए। और कुछ नहीं।

और मौत से पहले मरने से “एक और विषय हम समझेंगे, वो है कि, थोड़ी समय का जीवन, सब नाटक है। हर व्यक्ति कुछ ही समय के लिए रहेंगे। जैसे अब करोना आया था उसमें बहुत लोग मर गये है। मतलब कुछ ही समय रहे है।

जैसे नाटक में एक पात्रधारी आता है अपना पात्र कर कर चले जाता है। वैसे इस जीवन जितना भी हंगामा करो, पद पर बैठो, लेकिन, कुछ समय बाद कहीं नहीं दिखेगा। मरने के बाद समझेंगे के ये जीवन भी नाटक है।

यही बात शेक्सपियर ने कहा है कि, ये पूरा दुनिया एक ड्रामा है, उस ड्रामे में हम सब पात्रधारी है, अपना पात्र कर कर निकल जाते है। यही बाते पत्रीजी हर बार याद दिलाते है कि, ये आप नाटक के पात्रधारी हो, ये दुनिया ही एक नाटक रंग है। हम सब इनमें पात्रधारी है। कुछ समय के लिए अपना पात्र धारण कर कर चले जाते है। बहुत बार कह चुके है, पत्रीजी।

वैसे ही सिनेमा में कोई किसी का पति, पत्नी, भाई, बहन का पात्रधारण करते है और बाद में अपने अपने रास्ते में चले जाते है। देखिए अगर सिनेमा में हिरोईन को चुम्मा देने से कुछ नहीं कहेगी। लेकिन बाहर अगर कहीं चुम्मा देगें तो मानेगी, क्या? नहीं ना।

यह भी वैसा ही है, पति, पत्नी, अपना अपना पात्र करते है। जब नाटक मतलब जीवन खत्म होता है, अपने अपने लोक में चले जाते है। वैसे ही कुछ गेस्ट ऐक्टर होते है, जल्दी ही चले जाते है। वैसे ही कुछ लोग अपना शरीर जब छोड़ते है, तब मालूम पड़ेगा कि ये जीवन नाटक ही है।

इसलिए, मौत से पहले मरना जानने से बहुत ही फायदे है।

# मरने से पहले मरना कि और लाभ जानेंगे।

"मौत से पहले ही मरना" अगर उसका अवगाहन रहेगा तो और बहुत लाभ मिलेगा। मुख्यतः कि जानेंगे कि जन्म जितना बड़ा त्योहार है, मौत भी उतना ही बड़ा त्योहार है।

मौत के बारे में वशिष्ट महर्षि ने कहा है कि आत्म ज्ञानी को पुराना शरीर को छोड़कर नया शरीर पहने को, एक नया महोत्सव का भाव रखता है।

आत्मज्ञानी मरने से दुखी नहीं रहता है। वो संतोश होगा कि उनको नया शरीर मिल रहा है।

इसी संदर्भ में पत्रीजी, तिरूपति में एक संगठन के बारे कहते है कि, जब वो एक जनम दिन का पार्टी में गया था, चाकलेट लेकर आधा पैकेट देकर आधा पैकेट अपने पास रखा था। जब पूछा ऐसा क्यों किया, उसने बताया कि ये जन्म दिन महोत्सव है, और दूसरा आधा थोड़ी समय में जब वो मरेगा तब केलिए रखा था। तब सब लोग हैरान हो गये थे।

तब उसने कहा कि जन्म भी उत्सव है और मौत भी उत्सव है। ऐसे भाव जब रख सकते हो, तब वही ज्ञानी का लक्षण है।

इसलिए वशिष्ट महर्षि ने कहा है कि पुराना शरीर को छोड़कर नया शरीर पहनना, एक नूतन महोत्सव का भाव होना चाहिए।

क्योंकि जब पुराना फटा कपड़ा बदलकर नया कपड़ा पहनते हो, कितना खुश होता है।

देखिए जब त्योहार पर सब लोग नये कपड़े पहनते है तब कितना खुश दिखते है, मजा में रहते हैं। सबको अपना नया कपड़े सबको दिखाकर पूछते है। कैस लग रहा है? उनको उस वक्त सब को दिखाने केलिए घूमने जाते है, सिनेमा जाते है, छोटे पार्टी करते है सब के बीच में घूमने का इच्छा रखते है।

मतलब नया कपड़े पहनना कितना संतोश देता है। इसी तरह नया

शरीर लेना एक महोत्सव कि तरह देखना चाहिए। वशिष्ट महर्षि कहते है, देखिए कोई फटे कपड़े को छोड़ने का दुख नहीं होता है। इसी तरह आत्म ज्ञानी पुरानी शरीर छोड़ने से दुख नहीं होता है।

इसलिए सदाननद योगी ने मरने से तीन दिन पहले पत्रीजी को बुलाकर कहा था कि, तीन दिन बाद मैं शरीर छोड़ रहा हूँ और मेरा शरीर को दफन करने के लिए एक जगह ढूंढना। तब पत्रीजी हर जगह घूमकर नन्दवरम् को चुना था।

जिस समय पर कहा था, उसी समय को शरीर छोड़ दिया था। खुशी से छोड़ दिया था। इसलिए कहते है कि "योगी लोग बताकर मरते है, भोगी लोग अगर बतायेंगे तो मर जायेंगं।"

क्योंकि भोगी लोग अच्छा धन सम्पति इकट्ठा किये है ओर उन्हें उस पर ममता है। और जब कोई डाक्टर बतायेंगे कि उनका वक्त आने वाला है, तब सब को बुलाकर कहते है, तब भोगी को भय शुरू होता है। उस वक्त उनको सारे सम्पति याद आता है। और सोचने लगता है कि वो सब का क्या होगा। अभी तक अपनो को कुछ तैयारी नहीं करा हूँ, अभी मेरी क्या स्थिति है? तब वो डर जाता है और एक हफ्ते अन्दर अन्दर मर जाता है। इसीलिए कहते है कि अगर भोगी को बतायेंगे तो मर जायेंगे।

और वशिष्ट महर्षि ने कहा है कि "नया शरीर लेना एक नया महोत्सव का भाव होता है। देखिए जब शरीर बूढ़ा होता है, तब अपना काम खुद नहीं कर पाता। किसी के आधार चाहिए होता। उस स्थिति में हर तरह की रोग आयेगा, न उनको कमाने की शक्ति रहेगा। कुछ भी चाहिए तो बच्चों पर आधार करना पड़ता है। बच्चे भी कुछ समय केलिए ठीक तरह देखभाल करते है। बाद में निर्लक्ष्य करते है। कुछ भी मांगने से क्रोधित होते है या कुछ लोग वृद्धाश्रम में छोड़ देते है। बहुत पैसे वालों भी वृद्धाश्रम में रखते है।

बड़ी जीवन बिताकर ऐसे हालत में रहने से दुखी होते है। तब मौत की इंतजार करते है और भगवान को प्रार्थना करते है। ऐसे लोगों को मौत एक

महोत्सव ही है न?

लेकिन आत्म ज्ञानी को सब कुछ मालूम है, मौत के बाद क्या होता है। आत्मा को मौत न हीं है और मौत का मतलब शरीर छोड़ना और दूसरा लेना।

और उन्हें ये भी मालूम है कि जो भी ध्यान साधना किया है, जो ज्ञान प्राप्त किया है, उससे वो ऊपर लोक प्राप्त करते है। इसलिए वो मौत से नहीं डरते है। उनको मालूम है कि मौत लाभदायक है।

इसलिए आत्मज्ञानी मौत को एक महोत्सव मानता है, जो वशिष्ठ महर्षि ने कहा है।

और जब आत्मा पुरानी शरीर को छोड़ती है नया मिलेगा, तब उसे दुख क्यों होगा, ये उत्सव की बात है न?

इसलिए पत्रीजी कहते है कि आप को मौत ही नहीं है। क्योंकि ये छाड़ते है तो एक और नया मिलेगा, तब दुखित क्यों होगा?

नया शरीर के साथ उसी परिवार में जनम ले सकते हो या दूसरी में। ऐसे ही जब नया शरीर में प्रवेश कर कर नौ महीने बाद जन्म होता है, तब देखो उसको कितना वैभव होता है। जब से जन्म लेता है, तब से बिना पूछते ही उसे दूध मिलता हे, इससे पहले पुरानी शरीर में जब मांगता था, उनको डॉंट मिलता था, और बच्चा बड़ा होते होते उन्हें दूध के साथ साथ बिस्कुट भी मिलता है बिना कुछ पूछने से ही।

पूर्व जन्म में जब इनको नीन्द नहीं आता था, या बुढ़ापे में कुछ रोग आता था, वो कफते समय दर्द होता था और साथ में डांट पड़ता था।

अगर वो छोटी घर है तो और भी डांट पड़ता था, क्योंकि सबको दिक्कत होता था। लेकिन नया शरीर लेने के बाद उसको झूला में झुलाकर गाना गाते गाते नीन्द में डुबाने के लिए कितना कष्ट उठाते है।

लेकिन देखिए जब नया शरीर लेने वाले को कितना वैभव सा जीवन होता है। इसलिए आत्मज्ञानी को मालूम है और वो पुराना शरीर छोड़ने को दुखी

नहीं रहता है। इसलिए यह महोत्सव है और आगे का जीवन खूबसूरत रहता है।

जो भी ध्यानी है, और ज्ञान प्राप्त करता है, वो किसी भी हालत में दुःखी नहीं होता। क्योंकि इससे महान जन्म लेने का अवसर मिलता है। इसलिए वो महोत्सव है, वशिष्ठ महर्षि ने ऐसा कहा है। इसलिए आत्मज्ञानी मौत से संतोश रहता है। जैसे जन्म उत्सव है। मौत भी उत्सव ही है, का भाव रखता है।

वैसे ही वशिष्ठ महर्षि ने ये भी कहा है कि क्यों सोचते हो कि मैं मर जाउँगा, मैं मर जाउँगा, करके। अपने आप को ये कहना है कि मरने के बाद भी मैं रहूँगा, मैं रहूँगा, मैं रहूँगा करके। इसलिए अगर आप कहेंगे कि आप मर जायेंगे, तब आप अज्ञानी है, जो भी मरने के बाद भी रहूँगा ... रहूँगा कहेंगे, वो इस सत्य को जानेंगे, तब उनहें आत्मज्ञानी कहते है।

एक और बात जो वशिष्ठ महर्षि ने कहा है कि, जिसने आत्मा को जाना आत्मज्ञानी, मौत को, जन्म को और जीवन को तृण मानता है और ज्यादा प्रामुख्यतः नहीं देता है।

मौत को ज्यादा प्रामुख्यतः नहीं देते है, वैसे ही जन्म और जीवन को भी, वैसे आत्मज्ञानी इच्छा रहित होगा और बिना कोई चाहतें, रहेगा। और वासन भी शूण्य होता है। मतलब पूर्व जन्म का कोई गुण और आदतें नहीं रहता है। आत्म स्थिति में रहकर बाहर भोले दिखता है। पर्वत जैसा निश्चल होता है। जो कुछ भी हो, न जन्म को, जीवन को, न मौत को भी प्रामुख्यतः देता है। क्योंकि उनको मालूम है कि ये सब सहज है।

ज्ञानी को मालूम है कि जो जन्म लेता है उन्हें मरना है और जो मरता है उन्हें जन्म लेना पड़ता है। इसलिए ज्यादा सोचने का नहीं है। वशिष्ठ महर्षि इनसब के बारे में कह चुके है।

इसलिए अज्ञानी लोग मरने के बाद यही पृथ्वी पर रह जाते है। और प्रेतात्मा होकर शतकों वर्ष बेकार करते है। लेकिन ज्ञानी लोग ऊपर लोक में

चले जाते है, और बहुत विषय जानते है। मुख्यतः है कि ये जानते है कि इस भूलोक के अलावा दुसरे लोक के बारे में अवगाहन मिलता है। वहाँ उनको मालूम होता है कि जनालोक पार करने से महालोक, तपोलोक और सत्यलोक भी है और वहाँ पहुँचने का प्रयास करना चाहिए।

जिनको ये अवगहान होता है, जब पृथ्वी पर आते है, वो लोक में जाने का प्रयत्न करते है। उसी प्रयास करने वालों में है हम लोग। यहाँ एक और विषय जान लेते है कि मरने के बाद जो पापी है, उन्हें लेने के लिए पितृ देवता आते है। वैसे ही ध्यान कर कर ज्ञान प्राप्त करने वालों को लेने के लिए योगी लोग आते है।

मतलब जनालोक के नीचे लोक में रहने वाले को लेने के लिए पितृ देवता आयेंगे और जनालोक पार करने वाले को लेने के लिए योगी लोग आते है, यही विषय पत्रीजी ने हमें बताया। यहाँ पितृ देवता मतलब हम से पहले जो उस लोक पहुँचे है, उसे कहते है, हमारे दादा लोग, परदादा लोग, और पहले पीडियों के लोग अपने जन्म लेने के लिए देखते है। वैसे लोगों को भेजते है, यह सृष्टि (प्रकृति) का नियम है। वैसे ही जो ध्यान कर कर महान स्थिति पहुँचते है, ऊपर लोक में रहते है, उन्हें योगी कहते है।

मैंने एक बार पत्रीजी से पूछा कि मरने के बाद हमे लेने के लिए, यम बटुक लेने आते है, ये सिनेमा में दिखाते है। लेकिन हमे सहायक क्यों कहते है? ये सहायक कौन है? तब पत्रीजी ने कहा था कि सहायक लोग और कोई नहीं पितृ देवता ही है।

इसलिए जो भी पाप और पुण्य करते रहते है, सिर्फ उन्हें लेने के लिए पितृ देवता लोग आते है। ये सब जनालोक के नीचे लोक में रहने वाले है। जिस जिसने जनालोक पार करने का अर्हत प्राप्त करते है, उन्हें लेने पितृ देवता नहीं बल्कि योगी लोग आते है। क्योंकि अगर ऊपर लोक जाना है तो उसी लोक का ही लोग होना चाहिए।

वैसे ही अगर हम ऊपर लोक पहुँच पाते है, वहाँ हम महान लोगों का सांगत्य मिलता है। वो ही नहीं, हम एक मौका भी होता है कि, हम जिस जन्म चाहिए उस जनम को चुन सकते है। वैसे जन्म लेकर भविष्य को उन्नति प्राप्त कर सकते है।

क्योंकि वैसे लोगों के सांगत्य में और बहुत ज्ञान प्राप्त कर सकते है। आध्यात्मिकता और आत्मा को बढ़ावा करने का अवसर मिलता है।

पत्रीजी भी पृथ्वी पर वैसे ही सज्जन सांगत्य करने को कहते है। क्योंकि उनसे बहुत सारे ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

इसलिए शंकराचार्य जी ने कहा है कि "त्रिजगति सज्जन संगति रेका, भवति भावार्णव तरणे नौका"। मतलब तीनों लोकों में ऐसे दुख से निकलने के लिए सज्जन सांगत्य के बहतर कुछ नहीं है।

हम ऐसे ही सांगत्य पृथ्वी पर करना चाहिए। ऊपर लोक जाने के बाद भी ऐसी सांगत्य करना चाहिए। क्योंकि कोई भी ऊपर लोक जाने का अर्हत का प्रयास करना चाहिए। उस केलिए कठोर कृषि करना चाहिए। मतलब कठोर साधना करना चाहिए, ज्ञानी लोगों का किताबें पढ़ना चाहिए, ज्ञानी लोगों का सांगत्य करना चाहिए। आत्म सेवा करना चाहिए, ऐसे करेंगे तो जरूर हमे ऊपर लोक जाने का अर्हत प्राप्त करेंगे।

इसलिए याद रखिए कि अभी हम यही प्रयास कर रहे है। हर दिन जूम में ढ़ाई घंटे निशब्ध श्वास पर ध्यान कर रहे है। और जब भी समय मिलता है, ध्यान कर रहे है। यही हमारा कालक्षेप हो गया है। दूसरा कोई काम नहीं है। सच में हम भाग्यशाली है। इसलिए हमें जरूर ज्ञान को बढ़ाना है। और महान लोक तक पहुँचना है और इसी जनम में हासिल करेंगे। जनालोक पार कर कर सात्विक स्थिति पार कर कर तब ऊपर लोक चले ही जायेगा।

इसलिए हमें कठोर ध्यान साधना करना और आहार नियम पालन जरूर करना है।

# श्री तटवर्ती वीरा राघवराव का हिन्दी किताब

1) आत्म शास्त्र । .................................Rs.200/-
2) ध्यान विद्या । ..................................Rs.160/-
3) भगवद् गीता का सार ।.......................Rs.160/-
4) एक और जन्म । ...............................Rs.160/-
5) सत्य मार्ग ।.....................................Rs.160/-
6) 'गाइडिंग' ध्यान क्यों नही ? ................Rs.120/-
7) भगवान कौन हैं।...............................Rs.120/-
8) कर्म सिद्धांत । .................................Rs.120/-
9) विज्ञान का अर्थ - निहितार्थ ..................Rs.120/-
10) मरने से पहले मरना है। .......................Rs.130/-
11) ब्रह्म ज्ञान।.......................................Rs.100/-
12) यह जीवन क्यों हैं ? ...........................Rs.100/-
13) दुख निवारण का मार्ग.......................... Rs.75/-
14) क्या हम इस लोक के वासी हैं
या परलोक के वासी हैं?...................... Rs.50/-

**For Books Please Contact :**

**TATAVARTHI VEERA RAGHAVARAO**

**BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812**

# योगियों के संदेशे

आत्मज्ञानी "पुराना शरीर को छोड़कर नया शरीर पहनना को, एक नया महात्सव जैसा मानता है।" - वशिष्ट महर्षि

आत्मज्ञानी "मरने से पहले मरता है"। आत्मज्ञानी को "जन्म लेना त्यौहार है और मरना भी त्यौहार है।" - ब्रह्मर्षि पत्रीजी

"जिस मौत से दुनिया डरती है उसी को पाने मे मुझे आनंद है।" - कबीर

"एक शव मे प्राण जैसे, जीना है, तभी आपको प्रभु दर्शन होगा, मतलब आत्म का दर्शन होगा।" - सेइंट पाल के सुबातें

श्वास पर ध्यास रखकर ध्यान कीजिए, ज्ञानि लोगों के पुस्तक पढिये, ज्ञानि लोगों के सांगत्य करिये, ध्यान मार्ग मे सेवा करिये। ज्ञान प्राप्त कीजिये। तब आप, जो आत्मा है, को उच्छ लोकों का प्राप्ति होगा। - तटवर्ती वीर राघवराव

Rs.130/-